शकुन टाइम्स

निष्पक्ष खबरें निर्भीक आवाज

लखनऊ, बुधवार 29 जनवरी 2025 नगर संस्करण | पृष्ठ:-8 मूल्य:-4 रूपया | वर्षः- 14, अंक 16

ट्रंप ने भारत से अधिक अमेरिका निर्मित हथियार... ● लखनऊ से प्रकाशित हिंदी दैनिक समाचार पत्र ● न्यूजीलैंड की एमेलिया केरने रचा इतिहास...

डुबकी मैंने लगाई और ठंड खरगे को लग गई

गंगा वाले बयान पर अमित शाह का तंज

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के उस बयान पर पलटवार किया है जिसमें उन्होंने कहा था कि गंगा में डुबकी को लेकर गरीबी दूर होती है क्या? अमित शाह ने दिल्ली के कालकाजी में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कहा, डुबकी मैंने लगाई और ठंड खरगे को लग गई।

दरअसल हाल ही में खरगे ने मध्य प्रदेश के महू में एक जनसभा को संबोधित करते हुए सवाल उठाया था कि क्या गंगा में डुबकी लगाने से गरीबी दूर होती है, खाना मिलता है? उनका यह बयान ऐसे समय में सामने आया है जब प्रयागराज में महाकुंभ चल रहा है। हालांकि उन्होंने इसके बाद यह कहते हुए माफी मांग ली थी कि वह किसी की आस्था को ठेस नहीं पहुंचाना चाहते। वहीं अमित शाह ने मंगलवार को पलटवार करते हुए कहा, अभी कल मैंने महाकुंभ में गंगा की डुबकी लगाई, लेकिन डुबकी मैंने लगाई और ठंड खरगे जी को लग गई। वो कह रहे हैं कि गंगा में डुबकी लगाने से गरीबों का भला नहीं होगा।

अमित शाह ने आगे कहा, खरगे साहब, आपने पूरा जीवन डुबकी नहीं लगाई, लेकिन आपने गरीबों का क्या भला किया। अमित शाह ने यमुना में जहर मिलाने वाले अरविंद केजरीवाल के दावे पर भी हमला बोला और चुनौती भी दे डाली। उन्होंने कहा, कल केजरीवाल ने जलबोर्ड की रिपोर्ट का हवाला देकर एक बयान दिया कि दिल्ली में जो यमुना का पानी आता है।

उसमें हरियाणा सरकार ने जहर मिलाया है। जबकि जलबोर्ड वालों ने कहा कि केजरीवाल झूठ बोल रहे हैं। केजरीवाल जी, आपके पास जलबोर्ड की जो रिपोर्ट है, उसे कल सार्वजनिक कीजिए, हम जिम्मेदारी लेंगे।

भारत में कॉन्सर्ट इकोनॉमी की संभावनाएं: मोदी

प्रधानमंत्री मोदी ने कोल्डप्ले कॉन्सर्ट का जिक्र किया, राज्य इन्फ्रास्ट्रक्चर और स्किल्स पर ध्यान

एजेंसी

भुवनेश्वर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को भुवनेश्वर में उत्कर्ष ओडिशा- मेक इन ओडिशा कॉन्क्लेव 2025 में कोल्ड प्ले कॉन्सर्ट का जिक्र किया। उन्होंने कहा मुंबई और अहमदाबाद में हुए ब्रिटिश रॉक बैंड कोल्डप्ले के कॉन्सर्ट की शानदार तस्वीरें आपने देखी होंगी। भारत में ऐसे लाइव म्यूजिक कॉन्सर्ट की अपार संभावनाएं हैं। राज्य सरकारें और प्राइवेट सेक्टर बेसिक इन्फ्रास्ट्रक्चर और स्किल्स पर ध्यान दें तो कॉन्सर्ट इकोनॉमी से हमारी अर्थव्यवस्था बढ़ सकती है। दुनिया भर के बड़े कलाकार भारत की ओर आकर्षित हो रहे हैं। मोदी ने मंगलवार को ओडिशा सरकार की बिजनेस समिट उत्कर्ष ओडिशा- मेक इन ओडिशा कॉन्क्लेव 2025 का उद्घाटन किया। ये कॉन्क्लेव 28 से 29 जनवरी तक जनता मैदान में आयोजित हो रहा है। मोदी ने कहा कि पूर्वी भारत देश के विकास का इंजन है और ओडिशा इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जब भारत का वैश्विक विकास में बहुत बड़ा योगदान हुआ करता था, तो भारत के पूर्वी हिस्से का उसमें बहुत बड़ा योगदान था। ओडिशा दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापार का मुख्य केंद्र हुआ करता था। मुझे बताया गया है कि यह ओडिशा के इतिहास का सबसे बड़ा निवेशक सम्मेलन है। इसमें 5 से 6 गुना अधिक निवेशक भाग ले रहे हैं। मैं इसके लिए ओडिशा सरकार को बधाई देता हूं। कॉन्क्लेव में लगभग 3,000 नेशनल-इंटरनेशनल इंडस्ट्री लीडर्स, इन्वेस्टर्स, स्टार्टअप एंटरप्रेन्योर्स और उद्योग हितधारक शामिल हुए हैं। इसके अलावा 500 विदेशी निवेशकों, 17 देशों के प्रतिनिधियों समेत लगभग 7,500 प्रतिनिधि भाग लिया है। यहां 5 प्रमुख एरिया आईटी, रिन्यूएबल एनर्जी, टेक्सटाइल, केमिकल और फूल प्रोसेसिंग पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। पीएम मोदी की इस महीने में ओडिशा में उनकी दूसरी यात्रा है। इससे पहले 9 जनवरी को उन्होंने इसी जगह पर प्रवासी भारतीय दिवस समारोह में हिस्सा लिया था। आज के समय में रिसर्च और इनोवेशन की जरूरत है। सरकार रिसर्च के लिए एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए काम कर रही है।

रायबरेली में सड़क हादसा, चार की मौत

रायबरेली। रायबरेली जिले के भदोखर इलाके में मंगलवार सुबह कुम्भ स्नान करने जा रहे कार सवार चार लोगों की ट्रैक्टर की चपेट में आने से मृत्यु हो गयी जबकि एक अन्य गंभीर रुप से घायल हो गया। पुलिस क्षेत्राधिकारी अमित कुमार सिंह ने बताया कि सुबह करीब साढ़े छह बजे क्रालिस गाड़ी सवार चार लोगो की भदोखर इलाके के मुंशीगंज के दरियापुर डाइवर्जन के पास ट्रैक्टर की चपेट में आकर मौत हो गयी। यह सभी लोगो कुम्भ स्नान करने जा रहे थे। मृतको की पहचान आशीष द्विवेदी (45), दीपेंद्र सिंह (40), माया (45) और रजनी (70) के तौर पर की गयी है। हादसे में गंभीर रूप से घायल एक व्यक्ति का एम्स में इलाज चल रहा है। कार में कुल नौ लोग सवार थे जिनमें चार बाल बाल बच गये हैं।

मंच गिरने से सात की मौत

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताई हदासे की वजह, भड़की सपा, कहा- मुख्यमंत्री योगी को यह सब दिखता क्यों नहीं

एजेंसी

बागपत। बागपत जिले के बड़ौत में मंगलवार को जैन समुदाय द्वारा आयोजित भगवान आदिनाथ के निर्वाण लड्डू पर्व पर मानस्तम्भ परिसर में बना लकड़ी का एक ढांचा गिरने से जान गंवाने वालों की संख्या बढ़कर सात हो गई और 39 घायल उपचाराधीन हैं। एक वरि?ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी।

जिलाधिकारी (डीएम) अस्मिता लाल ने कहा, बड़ौत में जैन समुदाय के एक कार्यक्रम में लकड़ी का ढांचा गिर गया। यह कार्यक्रम पिछले 30 वर्षों से यहां आयोजित किया जा रहा था। इस बार कार्यक्रम के दौरान लकड़ी का ढांचा गिर गया और यह हादसा हुआ। उन्होंने कहा कि घायलों को अस्पताल ले जाया गया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद 20 लोगों को छुट्टी दे दी गई और बाकी का इलाज चल रहा है। बाद में अपर जिलाधिकारी (एडीएम) पंकज वर्मा ने पीटीआई-भाषा के साथ बातचीत में सात लोगों की मौत की पुष्टि की। एडीएम ने बताया कि सात लोगों की मौत हो गयी और 39 घायलों का उपचार चल रहा है। घटना की जांच के विषय में पूछने पर एडीएम ने बताया कि फिलहाल राहत-बचाव का काम चल रहा है। हादसे की वजह पूछने पर उन्होंने बताया कि श्रद्धालु बड़ी संख्या में अस्थायी मंच की लकड़ी की सीढ़ियों पर चढ़ गए, और अधिक भार होने की वजह से वह टूट गया। घटना का संज्ञान लेते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जिला प्रशासन के अधिकारियों को घायलों के समुचित उपचार के निर्देश दिए। उन्होंने घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। जिलाधिकारी अस्मिता लाल और पुलिस अधीक्षक अर्पित विजयवर्गीय अस्पतालों में मरीजों की निरंतर निगरानी कर रहे हैं। पुलिस अधीक्षक अर्पित विजय वर्गीय ने बताया कि कार्यक्रम के आयोजन के लिए आयोजकों द्वारा पूर्व में अनुमति ली गई थी। ''यह कार्यक्रम पिछले 25-30 साल से हर वर्ष आयोजित किया जा रहा है। हादसा क्यों और कैसे हुआ, यह जांच का विषय है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि हादसा बागपत शहर से 20 किलोमीटर दूर बड़ौत शहर के गांधी रोड स्थित श्री दिगंबर जैन डिग्री कॉलेज के मैदान में हुआ। वहां आज सुबह करीब आठ बजे श्री 1008 आदिनाथ भक्तांबर प्रचार के तत्वाधान में मोक्ष कल्याणक निर्वाण महोत्सव के तहत भगवान आदिनाथ के अभिषेक के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया था। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान अचानक ही मानस्तम्भ परिसर में बनाए गए 65 फुट ऊंचे अस्थायी मंच की लकड़ी की सीढ़ियां टूट गईं जिससे मंच पर मौजूद और उसके पास खड़े श्रद्धालु नीचे गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के बाद पूरे क्षेत्र में अफरातफरी मच गई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची जिसने भगदड़ पर काबू पाते हुए घायलों को अस्पताल भिजवाया। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए पुलिसकर्मी तैनात किए गए हैं। घटना से गुस्साए श्रद्धालुओं का कहना है कि हादसे के बाद घायल हुए लोगों को तुरंत चिकित्सा सुविधा नहीं मिल सकी। एंबुलेंस की अनुपलब्धता के चलते उन्हें ई-रिक्शा से अस्पताल पहुंचाया गया। कई श्रद्धालुओं की स्थिति गंभीर बताई जा रही है। बताया जा रहा है कि अस्थायी सीढ़ियां भीड़ का भार सहन नहीं कर पाईं और टूट गईं। आयोजन के दौरान सुरक्षा व्यवस्था और आपदा प्रबंधन की कमी को लेकर लोग नाराजगी जाहिर कर रहे हैं।

दिल्ली दंगों के आरोपी को चुनाव प्रचार के लिए पैरोल

- सुप्रीम कोर्ट की शर्तें, ताहिर को 12 घंटे प्रचार कर जेल लौटना होगा, पुलिस साथ रहेगी

एजेंसी

नयी दिल्ली। ली सुप्रीम कोर्ट ने आम आदमी पार्टी के पूर्व पार्षद और दिल्ली दंगों के आरोपी ताहिर हुसैन को मंगलवार को दिल्ली चुनाव प्रचार के लिए 6 दिन की सशर्त कस्टडी पैरोल दी है। ताहिर इस बार असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम से मुस्तफाबाद सीट से कैंडिडेट हैं।

ताहिर ने सुप्रीम कोर्ट से कहा, चुनाव में 4 दिन बचे हैं, हमें चुनाव प्रचार के लिए जल्द अंतरिम जमानत दी जाए। ताहिर दिल्ली दंगों के आरोप में 4 साल 9 महीने से जेल में बंद हैं। दिल्ली में विधानसभा चुनाव के लिए 5 फरवरी को वोटिंग है। 8 फरवरी को रिजल्ट आएगा। चुनाव प्रचार 3 फरवरी की शाम को खत्म हो जाएगा। जस्टिस विक्रम नाथ, जस्टिस संजय करोल और जस्टिस संदीप मेहता की बेंच ने इस मामले की सुनवाई की। सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में कहा, शुसैन को 29 जनवरी से 3 फरवरी तक दिन के समय (जेल मैनुअल के अनुसार 12 घंटे के लिए) चुनाव प्रचार के लिए रिहा किया जाएगा। रात में जेल लौटना होगा। कोर्ट ने हुसैन को सुरक्षा खर्च के तौर पर हर दिन 2.47 लाख रुपए देने को कहा। इस तरह उन्हें 6 दिन में 14.82 लाख रुपए देने होंगे। हुसैन के वकील सिद्धार्थ अग्रवाल ने बताया, चुनाव प्रचार के लिए केवल चार-पांच दिन बचे हैं। ऐसे में ताहिर को लोगों के बीच जाना होगा। जहां दंगे हुए थे, वहां उसका घर है।

केजरीवाल को चुनाव प्रचार करने से रोकने की मांग

आप प्रमुख के बयान के खिलाफ बीजेपी पहुंची चुनाव आयोग

एजेंसी

नई दिल्ली। चुनाव के बीच यमुना जल मुद्दे को लेकर सियासत तेज है। बीजेपी प्रतिनिधिमंडल ने आज चुनाव आयोग से मुलाकात की है। मुलाकात के बाद केंद्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव ने कहा कि दिल्ली की चुनावी राजनीति में बीजेपी लगातार जीत की ओर बढ़ रही है।

दिल्ली के मुख्यमंत्री, पूर्व मुख्यमंत्री और आप नेता इसे लेकर बहुत चिंतित हैं और वे लोगों के मन में अराजकता और अनावश्यक भय पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। वे एक नये निचले स्तर पर गिर गये हैं। यह एमसीसी और चुनाव प्रथाओं का स्पष्ट उल्लंघन है। भाजपा नेता ने कहा कि हमने अरविंद केजरीवाल के भाषण का वह हिस्सा प्रस्तुत किया है जहां उन्होंने हरियाणा पर दिल्ली को आपूर्ति किए जा रहे पानी में जहर मिलाने का आरोप लगाया था। उन्होंने अपने भाषण में जिन द्वेषपूर्ण, विनाशकारी और अलगाववादी शब्दों का इस्तेमाल किया, वे एमसीसी का स्पष्ट उल्लंघन हैं। भूपेन्द्र यादव ने दावा किया कि चुनाव आयोग ने हमारी चिंताओं का संज्ञान लिया है। हमने चुनाव आयोग से इस मामले में कार्रवाई करने का आग्रह किया है।

केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि हम दिल्ली के पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल द्वारा दिए गए बेहद अनुचित, गैर-जिम्मेदाराना और एमसीसी के उल्लंघन वाले बयान पर विरोध करने और चुनाव आयोग को अपनी याचिका सौंपने आए थे। यह बहुत ही खतरनाक बयान है। यह बयान उनके अलावा सभी के लिए खतरनाक था, जो स्वयंभू अराजकतावादी हैं।

दरअसल उन्होंने जो बयान दिया है उससे दिल्ली में लोगों के मन में डर बैठ गया है। इस देश में जिस तरह से चुनाव कराए जाते हैं, उस पर इसके बहुत गंभीर प्रभाव हैं।

चमोली: नगर पंचायत नंदानगर में कांग्रेस की जीत

चमोली। चमोली जिले के नगर पंचायत नंदानगर में कांग्रेस प्रत्याशी बीना रौतेला ने अध्यक्ष पद पर विजय प्राप्त की। बीना रौतेला ने भाजपा प्रत्याशी को 183 वोटों के अंतर से हराया। कांग्रेस प्रत्याशी को कुल 650 वोट मिले, जबकि भाजपा प्रत्याशी 467 वोट ही हासिल कर सका। इस जीत से नंदानगर में कांग्रेस कार्यकर्ताओं में खुशी का माहौल है। कांग्रेस प्रत्याशी बीना रौतेला ने इसे जनता की जीत बताते हुए कहा कि यह नंदानगर की जनता की उम्मीदों का परिणाम है। नगर पंचायत चुनाव में कांग्रेस की यह महत्वपूर्ण जीत पार्टी के लिए एक बड़ी सफलता मानी जा रही है। वहीं , वीना देवी ने इस जीत पर खुशी जाहिर की। उन्होंने मीडिया से बातचीत में कहा कि मैं उन सभी लोगों के प्रति आभार प्रकट करती हूं।

श्रीलंकाई नौसेना की गोलीबारी में 5 भारतीय मछुआरे घायल

भारत ने श्रीलंका के उच्चायुक्त को किया तलब

एजेंसी

नई दिल्ली। डेल्फ्ट द्वीप के निकट मंगलवार सुबह श्रीलंकाई नौसेना द्वारा की गई गोलीबारी में पांच भारतीय मछुआरे घायल हो गए, जिस पर भारत ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की। नई दिल्ली में द्वीपीय राष्ट्र के कार्यवाहक उच्चायुक्त को विदेश मंत्रालय में तलब किया गया और कड़ा विरोध दर्ज कराया गया। अपनी प्रतिक्रिया में भारत ने कहा कि किसी भी परिस्थिति में बल प्रयोग स्वीकार्य नहीं है। मंत्रालय ने कहा, आज सुबह डेल्फ्ट द्वीप के निकट 13 भारतीय मछुआरों को पकड़ने के दौरान श्रीलंकाई नौसेना द्वारा गोलीबारी की घटना की सूचना मिली। उसने कहा, मछली पकड़ने वाली नाव पर सवार 13 मछुआरों में से दो को गंभीर चोटें आई हैं और उनका फिलहाल जाफना टीचिंग अस्पताल में इलाज चल रहा है। इसमें कहा गया है कि तीन अन्य मछुआरों को मामूली चोटें आईं हैं और उनका उपचार किया गया है। जाफना स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास के अधिकारियों ने घायल मछुआरों से अस्पताल में मुलाकात की और उनका हालचाल जाना तथा मछुआरों और उनके परिवारों को हरसंभव सहायता प्रदान की जा रही है। विदेश मंत्रालय ने कहा, नई दिल्ली स्थित श्रीलंका के कार्यवाहक उच्चायुक्त को आज सुबह विदेश मंत्रालय में बुलाया गया और घटना पर कड़ा विरोध दर्ज कराया गया। कोलंबो स्थित भारतीय उच्चायोग ने भी यह मामला श्रीलंकाई विदेश मंत्रालय के समक्ष उठाया है। भारतीय वक्तव्य में कहा गया है, भारत सरकार ने हमेशा मछुआरों से संबंधित मुद्दों को उनकी आजीविका की चिंताओं को ध्यान में रखते हुए सहृदयता और मानवीय तरीके से निपटाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

विदेश मंत्रालय ने कहा, किसी भी परिस्थिति में बल प्रयोग स्वीकार्य नहीं है। इस संबंध में दोनों सरकारों के बीच मौजूदा सहमति का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए।

RNI : UPHIN/2012/45286

शकुन टाइम्स

निष्पक्ष खबरें निर्भीक आवाज

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र (प्रिन्ट एवं डिजिटल मीडिया)

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पंजीकृत

YouTube shakuntimes

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश के सम्पूर्ण जिले में तहसील और ब्लाक स्तर पर संवाददाता की

प्रिन्ट एवं डिजिटल मीडिया

यदि आप भी समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार के विरूद्ध उठाना चाहते है आवाज़ तो शकुन टाइम्स दे रहा है आपको एक बेहतरीन मौका

अधिक जानाकरी के लिए

अपना नाम व जिला हमें

WhatsaApp करें

9935781155, 9415052283

जिलाधिकारी ने तहसील का किया औचक निरीक्षण, पुराने वादों की लिया जानकारी

शकुन टाइम्स संवाददाता

मड़ियाहूँ /जौनपुर। जिलाधिकारी डा0 दिनेश चन्द्र के द्वारा तहसील मड़ियाहूँ का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने न्यायालय उपजिलाधिकारी और न्यायालय तहसीलदार का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने पुराने मुकदमों के निस्तारण के सम्बन्ध जानकारी प्राप्त की और उप जिलाधिकारी को निर्देशित किया कि जो भी कमियां आज पाई गई उनपर कृत कार्यवाही न किए जाने पर तथा पुराने मुकदमो को निस्तारित नही करने पर प्रतिकूल संज्ञान लिया जाएगा। उप जिलाधिकारी न्यायिक को भी निर्देशित किया कि बार के सहयोग से अधिक से अधिक मुकदमों का निस्तारित किया जाए जिससे आमजन को कचहरी न आना पड़े और उन्हे त्वरित गति से न्याय दिलाया जा सके। इस दौरान उन्होंने निर्देशित किया कि पत्रावलियों का रख-रखाव उचित ढंग से किया जाये और कार्यालय में साफ-सफाई नियमित हो। कार्यालय में आने वाले फरियादियों की गम्भीरतापूर्वक तथा संवेदनशीलता के साथ सुनवाई करते हुए उनके प्रकरणों का निस्तारण किया जाए। जिलाधिकारी के द्वारा बार के पदाधिकारियों के साथ बैठक कर उनकी समस्याए सुनी गई और सम्बन्धित को निस्तारण हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी के द्वारा पत्रावलियों का भी अवलोकन किया गया। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी कुणाल गौरव, उपजिलाधिकारी न्यायिक, कर्मचारीगण, सहित अन्य उपस्थित रहे।

युवकों पर धारदार हथियार से जानलेवा हमला करने वाला अपराधी थाना लंका पुलिस द्वारा गिरफ्तार,कब्जे से घटना में प्रयुक्त चाकू बरामद

शकुन टाइम्स संवाददाता

वाराणसी। थाना प्रभारी लंका के कुशल नेतृत्व में दिनांक 28.01.2025 को लौटूबीर पुलिया के पास खाली स्थान से वांछित अभियुक्त रतन पुत्र रामजीवन निवासी काशी हिंदू विश्वविद्यालय के पास फुटपाथ में थाना लंका को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त की निशांदेही पर घटना में प्रयुक्त धारदार चाकू बरामद हुआ। अभियुक्त पूछताछ में बताया कि मनोज मेरा दूर का रिश्तेदार है,जब कभी मेरा व मेरी पत्नी की आपस में नोकझोक होती थी तो मनोज व उसके परिवार वाले बीच बचाव करने लगते थे।

तथा बात बात में पुलिस को बुलाने की धमकी देते थे इसी रंजिश को लेकर मैने मौका देखकर मनोज व उसके परिवार के सदस्यों पर चाकू से हमला कर दिया। गिरफ्तार करने वाली पुलिस प्रभारी निरीक्षक शिवाकान्त मिश्र थाना लंका,उ0नि0 अपराजित सिंह चौहान,उ0नि0 स्वप्निल सिंह,आरक्षी विजय कुमार शुक्ला,आरक्षी उमेश कुमार गुप्ता टीम रही।

संक्षिप्त सामाचार

पास्को एक्ट से सम्बंधित अभियुक्त गिरफ्तार

सोनभद्र। थाना रायपुर पुलिस द्वारा धारा 354 क, 506 भादवि व 7/8 पॉक्सो एक्ट व 3(2)5(क) एससीएसटी एक्ट व पास्को एक्ट से सम्बन्धित वारण्टी विजय उर्फ फागू पटेल पुत्र रामेश्वर पटेल निवासी बैनी थाना रायपुर जनपद सोनभद्र को न्यायालय द्वारा निर्गत वारण्ट के क्रम में गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय भेजा गया। गिरफ्तार करने वाली पुलिस उ0नि0 सुबेदार यादव थाना,उ0नि0 नरेन्द्र प्रसाद सिंह,हे0का0 विपिन यादव,हे0का0 अमित यादव,का0 नीरज यादव व म0का0 सीमा दीक्षित टीम रही।

एससी/एसटी व आईटी एक्ट में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

सोनभद्र। अपर पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन सोनभद्र के निर्देशन एवं क्षेत्राधिकारी दुद्धी व प्रभारी निरीक्षक बभनी के पर्यवेक्षण/नेतृत्व में धारा- 64(2) एम,115(2), 352, 351(3) बीएनएस, 3(2)(वी), 3(1)द, 3(1)ध, एससी/

एसटी एक्ट व 67 आईटी एक्ट से सम्बन्धित फरार चल रहे वांछित अभियुक्त विवेक कुमार पुत्र रमेश प्रसाद निवासी ग्राम चौना थाना बभनी को नधिरा तिराहा प्रतिक्षायल थाना बभनी से गिरफ्तार कर आवश्यक विधिक कार्यवाही की गई। गिरफ्तार करने वाली पुलिस प्रभारी निरीक्षक सदानन्द राय थाना बभनी,हे0का0 प्रदीप कुमार सिंह,हे0का0 राम आशीष यादव रहे।

ट्रैक्टर व ट्राली के साथ दो चोर गिरफ्तार

वाराणसी। थानाध्यक्ष जैतपुरा के नेतृत्व में थाना जैतपुरा पुलिस टीम द्वारा मुखबिर की सूचना पर तपोवन आश्रम मोड़ सरैया से ट्रैक्टर व ट्राली चोरी से से संबंधित वांछित दो अभियुक्त मृत्युजंय कुशवाहा पुत्र नरसिंह कुशवाहा निवासी ग्राम तरांव,थाना सैदपुर, जनपद गाजीपुर व टिंकू कुमार पुत्र राजकुमार राम निवासी ग्राम कंचनपुर पोस्ट फुल्ली टी चौधरी अजमल,थाना दिलदारनगर,जनपद गाजीपुर को वाहन ट्रैक्टर मय ट्राली के साथ मुखबिर की सूचना पर जलालबाबा सरैया,वरुणा नदी के किनारे से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार करने वाली पुलिस उ0नि0 बृजेश कुमार मिश्रा थानाध्यक्ष थाना जैतपुरा,उ0नि0 संदीप कुमार सिंह,उ0नि0 सौरभ सिंह,का कुलदीप सिंह,का0 कीर्ति कुमार,का0 पुष्पेन्द्र कुमार,का0 अश्वनी सिंह सर्विलांश सेल टीम रही।

बिजलीकर्मियों ने निकाला कैंडल जुलूस

वाराणसी। निजीकरण के विरोध में विद्युत कर्मचारी संयुक्त संघर्ष समिति ने सोमवार की शाम कैंडल जुलूस निकाला। पूर्वांचल डिस्कॉम परिसर स्थित हनुमान मंदिर से निकाला गया जुलूस एमडी कार्यालय तक गया। जहां विरोध सभा भी हुई। सभा में मायाशंकर तिवारी ने बताया कि जुलूस के माध्यम से बिजलीकर्मियों ने पूर्वांचल और दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम के निजीकरण के प्रति विरोध दर्ज किया है। उन्होंने पावर कारपोरेशन प्रबंधन पर आरोप लगाया कि वह औद्योगिक अशान्ति का वातावरण बना रहा है। संघर्ष समिति के सहसंयोजक रामकुमार झा ने प्रयागराज के सभी बिजली कर्मचारियों को निर्देश दिया है

कि वे 30 तक कोई आन्दोलन नहीं करेंगे। विजय सिंह ने बताया कि 28 जनवरी को भी बिजलीकर्मी समस्त जनपदों में विरोध सभा करने के बाद कैंडल जुलूस निकालेंगे। इस मौके पर वेद प्रकाश राय, विजय सिंह, नरेंद्र वर्मा,विजय सिंह,रामकुमार झा,रमाशंकर पाल, अभय यादव,संतोष कुमार,जमुना पाल, मोनिका केशरी, अनिल कुमार, अंकुर पाण्डेय आदि थे।

अपर पुलिस आयुक्त डॉ एस चन्नप्पा ने मौनी अमावस्या व बसंत पंचमी स्नान पर्व को लेकर निरीक्षण कर दिए आवश्यक निर्देश

शकुन टाइम्स संवाददाता

वाराणसी। दिनांक 28.01.2025 को डा0 एस् चन्नप्पा अपर पुलिस आयुक्त कानून एवं व्यवस्था कमिश्नरेट वाराणसी द्वारा महाकुम्भ 2025 पलट प्रवाह के दृष्टिगत मौनी अमावस्या तथा बसंत पंचमी स्नान पर्व के अवसर पर स्नान एवं दर्शन पूजन हेतु अचानक वाराणसी में स्नानार्थियों,, श्रद्धालुओं, पर्यटकों, आगंतुकों की सुगमता एवं सुरक्षा,यातायात व्यवस्था एवं भीड़ नियंत्रण के हेतु सम्पूर्णनंद विश्व विद्यालय पार्किंग, लहूराबीर, बेनियाबाग, रमपुरा, गोदौलिया, दशाश्वमेध घाट से ललिता घाट,श्री काशी विश्वनाथ मंदिर से मैदागिन एवं आस पास के क्षेत्रो में पैदल गस्त,भ्रमण करते हुए निरीक्षण एवं भीड़ नियंत्रण किया गया। भ्रमण,निरीक्षण के दौरान उपस्थित अधिकारी,कर्मचारीगण को सुदृढ़ सुरक्षा एवं यातायात व्यवस्था के सुगम संचालन के सम्बन्ध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया।

दशाश्वमेध घाट पर 11 एनडीआरएफ ने त्वरित चिकित्सा सहायता दिया

शकुन टाइम्स संवाददाता

वाराणसी। दशाश्वमेध घाट पर तैनात एनडीआरएफ टीम के बचाव कार्मिकों की सर्तकता और मानव जीवन को बचाने की प्रतिबद्धता का उदाहरण पुन: देखने को तब मिला जब एक 52 वर्षीय महिला श्रद्धालु पवित्र जल में स्नान से पहले ही कम रक्त चाप के लक्षणों का अनुभव कर बेहोश हो गई।

पीड़िता की खराब हालत की सूचना मिलते ही घाट पर तैनात एनडीआरएफ टीम बिना समय गंवाए पीड़िता को प्राथमिक उपचार प्रदान कर राहत प्रदान किया तथा उन्नत उपचार हेतु हॉस्पिटल भी भेजा।उनकी त्वरित और साहसिक कार्रवाई ने न केवल महिला की जान बचाई,बल्कि एनडीआरएफ की प्रतिबद्धता और दक्षता को भी उजागर किया। उल्लेखनीय है कि उपमहानिरीक्षक मनोज कुमार शर्मा के दिशा-निर्देशन में एनडीआरएफ के बचावकर्मी दिन-रात काशी के गंगा घाटों की निगरानी करते हैं और किसी भी आपात स्थिति में अविलंब राहत और बचाव कार्य करते हैं। एनडीआरएफ नागरिकों की सुरक्षा और आपातकालीन स्थितियों में त्वरित सहायता प्रदान करने के लिए समर्पित है।

दशाश्वमेध घाट पर यह उदाहरण एनडीआरएफ के आदर्श वाक्य, आपदा सेवा सदैव तत्पर का सजीव प्रमाण है।

गांजा बिक्री के अवैध कारोबार में लिप्त गिरोह का वांछित अभियुक्त चढ़ा पुलिस के हत्थे

- पूर्व में गिरोह के एक अभियुक्त को गिरफ्तार कर,कब्जे से गांजा किया गया था बरामद
- पुड़िया बनाकर इधर-उधर घुम कर गांजा बिक्री करने का करते थे अपराध

शकुन टाइम्स संवाददाता

भदोही। अभिमन्यु मांगलिक पुलिस अधीक्षक भदोही के कुशल निर्देशन में जनपद में मादक पदार्थों की तस्करी,बिक्री के रोकथाम एवं अवैध कारोबार में लिप्त मादक कारोबारी,तस्करों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही हेतु चलाए जा रहे अभियान के तहत थाना दुर्गागंज पुलिस टीम द्वारा चेकिंग के दौरान मुखबिरी सूचना के आधार पर बस स्टॉप कस्बा दुर्गागंज के पास से गांजा बिक्री के अवैध कारोबार में लिप्त गिरोह के वांछित अभियुक्त नागेंद्र उर्फ ननकू पुत्र सुरेंद्र राय निवासी मानीडीह थाना दुर्गागंज जनपद भदोही को गिरफ्तार किया गया।

पूर्व में गिरोह में शामिल एक अन्य अभियुक्त महेंद्र कुमार गौड़ को गिरफ्तार कर कब्जे से प्लास्टिक के झोला में 1 किलो 200 ग्राम नाजायज गांजा बरामद किया गया था। उक्त गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर अभियुक्तों के विरुद्ध धारा-8/20 एनडीपीएस एक्ट का अभियोग पंजीकृत कर आवश्यक कार्यवाही की गई।

गिरफ्तार करने वाली पुलिस व0उ0नि0 रामनयन यादव,उ0नि0 रामचन्द्र सरोज व मुख्य आरक्षी जलालुद्दीन रहे।

मदरसा अल फ़लाह में शान से फ़हराया गया तिरंगा

फलाह वेलफेयर ट्रस्ट ने सेंट जोसेफ़ ग्रुप ऑफ़ स्कूल के चेयरमैन डॉ. नोमान खान को सर सैयद जौनपुर के सम्मान से सम्मानित किया

शकुन टाइम्स संवाददाता

जौनपुर। 76वें गणतन्त्र दिवस के अवसर पर मदरसा अल-फलाह दरबानीपुर में गणतंत्र दिवस समारोह एवं वार्षिकोत्सव का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया। मदरसा के संरक्षक पूर्व प्रधान ज़ुबैर अहमद ने ध्वजारोहण किया। जिसमें छात्र-छात्राओं ने जोश व खरोश के साथ राष्ट्रगान प्रस्तुत किया और देश के संविधान लिखने वालों को याद किया। प्रोग्राम की सरपरस्ती जामिया ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशन के चेयरमैन मौलाना अनवार अहमद क़ासमी और अध्यक्षता मरकज़ी सीरत कमेटी के अध्यक्ष सद्दाम हुसैन ने किया एवं मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सैफ़ हुसैन खान वरिष्ठ सर्जन ज़िला अस्पताल,डॉ. नोमान खान चेयरमैन सेंट जोसेफ़ ग्रुप ऑफ़ स्कूल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. ए. ए जाफ़री,डॉ. मोहम्मद चाँद बागवान,डॉ. सरफ़राज़ खान चेयरमैन प्रतिनिधि जफराबाद,फ़िरोज़ खान चेयरमैन कचगांव,हाफ़िज़ खुर्शीद जौनपुरी उपस्थित रहे। ध्वजारोहण के बाद संस्कृति कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसकी शुरुआत हाफ़िज़ मोहम्मद असलम ने तिलावत ए क़ुरआन से किया बच्चों ने देश भक्ति से सम्बंधित कार्यक्रम को पेश किया,इसी कड़ी में फ़लाह वेलफेयर ट्रस्ट के चेयरमैन अजवद क़ासमी ने डॉ. नोमान खान की शैक्षिक सेवाओं की स्वीकारोक्ति करते हुए उन्हें सर सय्यद ए जौनपुर के सम्मान से सम्मानित किया। इस दौरान मुख्य अतिथि डॉ. सैफ़ हुसैन खान ने संबोधित करते हुवे कहा कि देश आज 76वें गणतंत्र दिवस का पर्व मना रहा है,इस अवसर पर हमें देश की आज़ादी,एकता,अखंडता और समाजवाद के लिए बलिदान देने वाले पूर्वजों को याद करना चाहिए,जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर अंग्रेजों के चंगुल से देश को आज़ाद कराया,और हमें एक सेक्युलर और बराबरी का अधिकार देने वाला संविधान दिया। सेंट जोसेफ ग्रुप आफ स्कूल के चेयरमैन डाक्टर नोमान खान ने बच्चों के द्वारा पेश किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम की सराहना करते हुवे कहा कि भारत की आज़ादी में मदरसों का जो किरदार रहा है उसे भुलाया नहीं जा सकता,देश में फैले हुवे इन्हीं मदरसों से निकले क्रांतिकारी उलमाओं ने सबसे पहले अंग्रेजों के खिलाफ जंग लड़ने का फैसला किया। मदरसा के संरक्षक मौलाना अनवार अहमद क़ासमी ने कहा कि हमारा देश आज 76वां गणतंत्र दिवस मना रहा है लेकिन अफसोस की बात यह है कि इतने सालों बाद भी देश के एक बड़े तबके को संविधान में दिए गए मौलिक अधिकारों की जानकारी नहीं है जिसकी वजह से वो शोषण का शिकार हो रहे हैं,डॉ. सरफ़राज़ खान ने कहा कि 26 जनवरी के इस अवसर पर हमें नागरिकों को संविधान से मिलने वाले अधिकारों के प्रति जागरूक करने की ज़रूरत है। डॉ. ए. ए जाफ़री ने मदरसा परिवार की हर सम्भव मदद करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर शाहनवाज़ मंजूर,आरिफ़ खान, मोहम्मद अज़हर,डॉ.अरीबुज़्ज़मां,शाहनवाज़ खान, मोहम्मद मुज़म्मिलखान,वसीम खान,डॉ.अर्शी खान, मेराज खान, अबुज़र खान,इरफान इकबाल, साजिद अनवर,खालिद अफज़ल, इमरान बंटी,मोहम्मद अफज़ल, अलमास अहमद सिद्दीकी,कमाल आज़मी, उमर खान,डॉ.यासिरा अली, अकरम अंसारी,सलाउद्दीन खान के समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे। संचालन मज़हर आसिफ ने की।अंत में प्रबंधक अजवद क़ासमी ने समस्त लोगों का आभार व्यक्त किया।

पांच किलो चरस के साथ दो बंदी, सरगना की तलाश

वाराणसी। एसटीएफ की वाराणसी इकाई ने मंगलवार को सुल्तानपुर जिले के देहात कोतवाली क्षेत्र से बस से 5.628 किग्रा चरस के साथ युवती और एक युवक को पकड़ा। देहात कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराया। सुल्तानपुर पुलिस ने दोनों को जेल भेज दिया। बरामद चरस दोनों तस्कर वाराणसी लेकर आ रहे थे। इसकी अनुमानित कीमत 30 लाख रुपये है। चौक निवासी गैंग के सरगना देवेंद्र कुमार मिश्रा की तलास की जा रही है। एसटीएफ के एएसपी विनोद सिंह ने बताया कि गिरफ्तार तस्करों में बिहार के सुपौल जिले के गडबडुवाड़ी निवासी संतोष कुमार झा, चितईपुर के कंदवा निवासी शिखा वर्मा हैं। बताया कि वाराणसी में ड्रग्स माफियाओं के संगठित गिरोह की जानकारी मिली, जो चरस, गांजा, हषीष, स्मैक आदि मनाली (हिमाचल प्रदेश), बिहार और नेपाल की सीमा से लाकर वाराणसी और आसपास के जनपदों में बेचते हैं।

पुरानी पेंशन बहाली के लिए पूर्वांचल विश्वविद्यालय में प्रदर्शन

शकुन टाइम्स संवाददाता

जौनपुर। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन के सामने मंगलवार को शिक्षकों और कर्मचारियों ने अटेवा के शीर्ष आह्वान पर नई पेंशन योजना (एनपीएस) और प्रस्तावित यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने यूपीएस को कर्मचारियों के लिए महा घातक करार देते हुए इसे लागू न करने की मांग की। विरोध प्रदर्शन के दौरान शिक्षकों और कर्मचारियों ने सादे कागज पर मुर्दाबाद और यूपीएस नहीं चाहिए लिखकर अपने गुस्से का इजहार किया।

अटेवा के वाराणसी मंडल उपाध्यक्ष व महामंत्री रमेश यादव ने कहा, एनपीएस कर्मचारियों के भविष्य को असुरक्षित बनाता है, और यूपीएस इसे और भी खराब कर देगा। हमें केवल पुरानी पेंशन चाहिए। केंद्र सरकार को कर्मचारियों की भावनाओं का सम्मान करते हुए ओपीएस को तत्काल बहाल करना चाहिए। इस मौके पर कर्मचारी संघ के पूर्व अध्यक्ष रामजी सिंह, मीडिया प्रभारी एव जिलामंत्री इंदु प्रकाश यादव, जगदंबा मिश्रा, डॉ प्रमोद कुमार सिंह कौशिक, सुशील प्रजापति , धर्मेंद्र कुमार सिंह, डा दिलगीर हसन, कपिल कुमार त्यागी, वारिंदर यादव, दिनेश यादव, श्रीनाथ यादव जितेंद्र पांडे, डॉ शशिकांत यादव सहित शिक्षक एवं कर्मचारी सम्मिलित हुए।

मेराजुन्नबी का जुलूस और जलसा धूमधाम से सम्पन्न

शकुन टाइम्स संवाददाता

जौनपुर। इस्लामी महीने हिजरी के अनुसार 26 रजब को मेराजुन्नबी का एक जलसा और जुलूस धूमधाम से शहर में मनाया गया इसी सिलसिले में आयोजन कमेटी औलिया सीरत कमेटी की निगरानी में पूरा शहर सजाया गया जगह जगह रंग बिरंगी झालरों से दुल्हन सा सजाया गया था

27 जनवरी दिन सोमवार को समय दोपहर 2ः00 से शाम 5ः00 तक कौमी यकजहती कार्यक्रम हुआ जिसमें विभिन्न धर्मों के धर्म गुरुओं ने आपसी सद्भावना व सद्भाव पर अपने अपने विचार प्रकट किए

शाम 6ः00 बजे से प्राप्त 5 बजे तक ऐतिहासिक जुलूस और जश्ने मेराजुन्नबी अपनी पुरानी परंपरागत रिवायती रूप से मनाया गया उक्त कार्यक्रम औलिया मस्जिद सुत्हट्टी बाजार भंडारी स्टेशन से उठकर अपने निर्धारित मार्गो से होता हुआ सब्जी बाजार, कोतवाली चौराहा ,हरलालका रोड से चहारसू चौराहे से होकर शाही किला होता हुआ शाही अटाला मस्जिद पर पहुंचकर जलसे में तब्दील हो गया उक्त जलसे को सफल बनाने के लिए कमेटी ने प्रशासन से उचित सुरक्षा व्यवस्था ,नगर पालिका से साफ सफाई व बिजली की व्यवस्था और स्वास्थ विभाग से एक टीम एम्बुलेंस के साथ रहने की मांग की थी जो मौजूद रहे। मुख्य अतिथि बाबू सिंह कुशवाहा सांसद और विशिष्ट अतिथि फिरोज खान चेयरमैन कचगांव,डॉक्टर सरफराज,अरशद खान,निखिलेश सिंह रहे। इस मौके पर मुख्य रूप से अनवारूल हक़ गुड्डू,कमर अहमद उर्फ शकील मुमताज ,शाहिद मंसूरी,नेयाज ताहिर शेखू ,अकरम मंसूरी, रियाजुल हक़,नूरुद्दीन मंसूरी,लाल मोहम्मद राईनी,सद्दाम हुसैन,अजीज फरीदी,असलम शेर खां, शम्स तबरेज,हिसामुद्दीन शाह, हाजी इमरान,मो अंसार इदरीसी आदि मौजूद थे।

दिल्ली से सम्मानित होकर लौटी प्रधान सुचिता का ग्रामीणों ने किया स्वागत

जफराबाद /जौनपुर। सिरकोनी ब्लोक के नाथुपुर की प्रधान श्रीमती सुचिता सिंह का सम्मानित होकर दिल्ली से लौटने पर गांव के लोगों ने स्वागत किया। जिले से चुनी गई एकमात्र ग्राम प्रधान श्रीमती सुचिता सिंह को पंचायत राज मंत्रालय ने गणतंत्र दिवस के मौके पर विशेष अतिथि के रूप में बुलाया गया था। उन्हें सम्मानपत्र तथा शील्ड देकर सम्मानित किया गया।यह निमंत्रण सरकारी योजनाओं जिसमे हर घर जल योजना,प्रधानमंत्री आवास योजना, मिशन इंद्र धनुष,प्रधानमंत्री पोषण योजना,पीएम मुद्रा योजना,पीएम विश्वकर्मा योजना,किसान क्रेडिट कार्ड आदि जैसी जनकल्याण की योजनाओं को अपने गांव में शत प्रतिशत करने पर मिला था।इसके अलावा गांव का विकास,साफ सफाई व अन्य कार्य भी सराहनीय रहा। ग्राम प्रधान सुचिता सिंह ने बताया कि देश की राजधानी में गणतंत्र दिवस पर विशेष अतिथि बनकर काफी अच्छा लगा।इसके साथ केंद्रीय पंचायत राज मंत्री प्रो एसपी सिंह बघेल,मत्स्यपालन पशुपालन और डेयरी मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने शील्ड व सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया।ऊक्त कार्यक्रम में देश के छह सौ प्रधानगण बुलाये गए थे।

जनपद के शिक्षक कर्मचारियों ने पेंशन स्कीम का किया बहिष्कार

शकुन टाइम्स संवाददाता

महराजगंज। जिले के सभी सरकारी विभागों के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा शिक्षकों ने केंद्र सरकार द्वारा लाई जाने वाली यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) तथा नई पेंशन स्कीम (एनपीएस) को लेकर अपना विरोध जताया तथा एनपीएस यूपीएस गो बैक के नारे लगाए तथा सरकार द्वारा लाई जाने वाली नई पेंशन व्यवस्था यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) की प्रतियों को जलाकर सरकार द्वारा शिक्षकों कर्मचारियों पर जबरदस्ती थोपे जाने वाले इस पेंशन स्कीम का अपना विरोध दर्ज कराया। शिक्षकों कर्मचारियों ने कहा कि यूपीएस (यूनिफाइड पेंशन स्कीम) और एनपीएस (नई पेंशन योजना) शिक्षकों कर्मचारियों के लिए एक छलावे के समान है। इसके माध्यम से सरकार शिक्षकों, कर्मचारियों के वेतन से आजीवन 10न की कटौती

करके उसे हड़प लेना चाहती है।

अटेवा के प्रांतीय संगठन मंत्री राजेश जायसवाल ने कहा कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है और इस लोकतांत्रिक देश में सरकार अपने शिक्षकों, कर्मचारियों के हितों को ध्यान में रखते हुए पुरानी पेंशन (ओपीएस) दिया करती थी। जिससे कि सेवानिवृत्ति के बाद शिक्षकों, कर्मचारियों को किसी दूसरे पर आश्रित ना रहना पड़े। सभी सरकारी शिक्षक, कर्मचारी सेवानिवृत्ति के बाद सम्मानपूर्वक अपना जीवन जी सकें। किंतु वर्तमान सरकार शिक्षकों, कर्मचारियों के सम्मानपूर्वक जीवन जीने के अधिकार को छीन लेना चाहती है। अटेवा के मंडल अध्यक्ष तथा उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षक संघ (एकजुट) के जिलाध्यक्ष डॉ0 नवीन श्रीवास्तव ने कहा कि सरकार शिक्षकों, कर्मचारियों के हितों को अनदेखा करते हुए उनके वेतन से 10न की कटौती कर सेवानिवृत्ति के समय उन्हें कुछ नहीं वापस देना चाहती। जबकि प्रत्येक शिक्षक, कर्मचारी की सेवानिवृत्ति के समय यह 10न की कटौती की गई रकम करोड़ों रुपए होगी और प्रति शिक्षक, कर्मचारी के करोड़ों रुपए की यह धनराशि हड़प कर सरकार कर्मचारियों के साथ अन्याय कर रही है। जब तक हम पुरानी पेंशन स्कीम (ओपीएस) की पुनर्स्थापना नहीं करा लेते हैं, तब तक हम चैन से नहीं बैठेंगे। अटेवा के जिला अध्यक्ष टीपी सिंह ने कहा की यूपीएस और एनपीएस दोनों ही अत्यंत घातक व्यवस्था है। हमें इसे किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं करना। अटेवा के नेतृत्व में हम पुरानी पेंशन प्राप्त करके रहेंगे। अन्य शिक्षकों का कहना है कि एनपीएस उनके भविष्य को असुरक्षित बनाती है, जबकि पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस) अधिक लाभकारी थी।

विद्यालयों के नियमित निरीक्षण एवं बेहतर शिक्षा सुनिश्चित करें-डीएम

एबीएसए बृजमनगंज, घुघली एवम् लक्ष्मीपुर को कड़ी चेतावनी

महाराजगंज। डीएम अनुनय झा ने कलेक्ट्रेट सभागार में निपुण भारत सहित बेसिक शिक्षा विभाग के विभिन्न कार्यक्रमो की बिंदुवार समीक्षा की। जिलाधिकारी ने ऑपरेशन कायाकल्प की समीक्षा करते हुए कहा कि शौचालयों की टाइलिंग, मल्टीपल हैंडवाश आदि को शत-प्रतिशत सुनिश्चित करें। उन्होंने जिला/ब्लॉक टास्क फोर्स द्वारा स्कूलों के निरीक्षण हेतु प्राप्त लक्ष्य के सापेक्ष शत-प्रतिशत निरीक्षण सुनिश्चित करवाने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने डीबीटी हेतु आवश्यक आधार सत्यापन को तेज करने हेतु एबीएसए बृजमनगंज, घुघली और लक्ष्मीपुर को कड़ा निर्देश दिया। उन्होंने निर्देशित किया कि एआरपी/एसआरजी सिर्फ निरीक्षण तक सीमित न रहें, बल्कि विद्यालयों में शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन का कार्य करें। उन्होंने सभी खंड शिक्षा अधिकारियों को विद्यालयों के नियमित निरीक्षण और विद्यालयों में बेहतर शिक्षा सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अनुराज जैन, पीडी रामदरश चौधरी, प्रभारी बीएसए पी.के. शर्मा सहित अन्य संबंधित अधिकारी और सभी खंड शिक्षा अधिकारी शामिल रहे।

संक्षिप्त सामाचार

कार ने बाइक को मारी टक्कर, तीन घायल

श्रावस्ती। तेज रफ्तार कार ने बाइक में टक्कर मार दी। इससे बाइक पर सवार तीन लोग गंभीररूप से घायल हो गए। घायलों को सीएचसी में भर्ती कराया गया जहां से उन्हें जिला अस्पताल भिनगा रेफर कर दिया गया। मल्हीपुर थाना क्षेत्र के जमुनहा बहराइच मार्ग पर स्थित कानीबोझी चौराहे के पास मंगलवार को कार ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार पड़ोसी जनपद बहराइच के नवाबगंज थाना क्षेत्र के ढोंढ़े गांव निवासी इस्लाम (36), अकराम (27) पुत्रगण बीरबल व श्रावस्ती के हरदत्तनगर गिरंट थाना क्षेत्र स्थित ग्राम हसनपुर निवासी शमसुद्दीन (34) पुत्र मुस्ताक गंभीररूप से घायल हो गए। हादसे के बाद लोगों की ओर से एम्बुलेंस को सूचना दी गई। घटनास्थल पर पहुंची एम्बुलेंस से तीनों घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मल्हीपुर में भर्ती कराया गया। जहां उनकी हालत गंभीर देखते हुए प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल भिनगा के लिए रेफर कर दिया गया। बताया जाता है कि तीनों एक ही बाइक पर सवार को मल्हीपुर थाना क्षेत्र के अकार गांव रिश्तेदारी में जा रहे थे। जिला अस्पताल में घायलों का इलाज हो रहा है।

पांच दिवसीय सालाना उर्स हुआ सम्पन्न

बलरामपुर। हजरत बाबा हुरमत शाह के आस्ताने पर 22 जनवरी से शुरू हुए पांच दिवसीय सालाना उर्स का एहराम पोस मेहमानों की विदाई के साथ समापन किया गया। इस दौरान सभी मेहमानों को आस्ताने का चादर सीरनी व नज़राना देकर विदा किया गया।नगर के मोहल्ला गदुरहवा स्थित बाबा हुरमत शाह आस्ताना कमेटी के सचिव हकीम निसार वारिस ने बताया कि उर्स के चौथे दिन आस्ताने से कमेटी और भारी संख्या में आये अकीदतमंदों ने ताक भराई रस्म का जुलूस निकाला। जुलूस आस्ताने से निकलकर पानी टंकी, डॉ मजीद मोड़, चौक, गर्ल्स कॉलेज चौराहा से होता हुआ देर रात मुर्सली मस्जिद पर पहुंचकर समाप्त हुआ। सालाना उर्स में कई जिलों से आए करीब 270 मेहमान और एहराम पोस वारसियों की विदाई कार्यक्रम रखा गया।

कार्य से विरक्त रहे अधिवक्ता,पसरा रहा सन्नाटा

श्रावस्ती। जनपद बस्ती में हुई अधिवक्ता की हुई निर्मम हत्या के विरोध में मंगलवार को भिनगा में अधिवक्ता दिन भर न्यायिक कार्य से विरत रहें। इससे न्यायालयों पर सन्नाटा पसरा रहा। जिसके चलते वादकारी तारीख लेकर वापस लौट गए। मॉडल डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन भिनगा के अध्यक्ष दिनेश कुमार शुक्ला ने बताया कि प्रदेश में अधिवक्ताओं पर लगातार हमले हो रहे हैं। बस्ती जिले के अधिवक्ता चंद्र शेखर यादव की निर्मम हत्या कर दी गई है। जिससे अधिवक्ताओं में रोष है। महामंत्री राम गोपाल शुक्ला ने कहा की अगर शीघ्र ही अधिवक्ता के हत्यारोपियों की गिरफ्तारी नहीं हुई तो आगे बड़ा आंदोलन करेंगे।

घर में घुसकर कर छेड़खानी का लगाया आरोप, मुकदमा दर्ज

इकौना श्रावस्ती। जिले में थाना इकौना क्षेत्र के एक गांव निवासी एक महिला ने इकौना थाने में तहरीर देकर खुनखुन उर्फ राजेश कुमार पुत्र राम अक्षेवर पर घर में घुसकर छेड़खानी करने व दुष्कर्म के प्रयास का आरोप लगाया। महिला की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी के विरुद्ध संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर लिया है। महिला का आरोप है कि 14 जनवरी को उसका पति व बेटा प्रभूनाथ गए थे। रात करीब 10 बजे खुनखुन आया और गेट खटखटाया तो वह बाहर आई और गेट खोला।

जंगल कौड़िया ब्लाक के सफाई कर्मचारी हड़ताल पर

शकुन टाइम्स संवाददाता

जंगल कौड़िया/गोरखपुर। ब्लॉक के 50 गांव के सफाई कर्मचारी हड़ताल पर हैं और उन्होंने क्षेत्राधिकारी कार्यालय पर नारेबाजी की।

यह प्रदर्शन उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ के जिला अध्यक्ष रमेश कुमार भारती और ब्लॉक अध्यक्ष सूर्यभान सिंह के नेतृत्व में हुआ। सफाई कर्मचारी एक सफाई कर्मी के साथ 27 जनवरी को हुए मारपीट से नाराज हैं और आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होने तक हड़ताल पर रहेंगे।

जिला अध्यक्ष रमेश कुमार भारती ने कहा यदि 2 दिन के अंदर गिरफ्तारी नहीं होती है, तो पूरे जनपद के सफाई कर्मचारी एक साथ धरना प्रदर्शन करेंगे।

स्टॉक का सत्यापन बीडीओ स्तर से करवाने का निर्देश: डीएम

शकुन टाइम्स संवाददाता

महराजगंज। डीएम अनुनय झा ने कलेक्ट्रेट सभागार में जिला पोषण समिति की बैठक किया। पोषण समिति की बैठक करते हुए जिलाधिकारी ने पोषण ट्रैकर, आंगनबाड़ी केंद्रों के कायाकल्प, नवीन आंगनबाड़ी केंद्रों के निर्माण, सैम/मैम बच्चों के पोषण की स्थिति, टीएचआर सहित विभिन्न बिंदुओं की समीक्षा की गई।

उच्च पोषण युक्त चिक्की वितरण के प्रगति की जानकारी ली। प्रभारी डीपीओ द्वारा बताया गया कि सभी ब्लॉकों में चिक्की वितरण कराया जा रहा है। जिलाधिकारी ने सभी ब्लॉकों में पोषण युक्त चिक्की के स्वास्थ्य और उपस्थित पर प्रभाव के आंकलन हेतु फरवरी में पुन: सर्वे करवाने का निर्देश दिया।

प्रति माह बच्चों के पोषण की रिपोर्ट तैयार करने का और उसके अनुरूप आवश्यक कार्यवाही का भी निर्देश दिया। उन्होंने आंगनबाड़ी केंद्रों के निर्माणकार्य के प्रगति की जानकारी लेते हुए निर्देश दिया कि आंगनबाड़ी केंद्रों का निर्माण जल्द से जल्द पूर्ण कराएं। साथ ही सीडीपीओ नवनिर्मित और मरम्मत किए गए आंगनबाड़ी केंद्रों की पूर्व और पश्चात की फोटो के साथ आंगनबाड़ी केंद्रों की सूची उपलब्ध कराएं। डीसी मनरेगा ने बताया कि 52 आंगनबाड़ी केंद्र पूर्ण हो चुके हैं, जबकि 04 केंद्रों का कार्य प्रगति पर है। वीएचएसएनडी का नियमित तौर पर आयोजन करें।

उन्होंने टीएचआर वितरण की जानकारी लेते हुए स्टॉक का सत्यापन बीडीओ स्तर से करवाने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने सैम/मैम बच्चों के पोषण ट्रैकर पर डाटा के त्रुटिपूर्ण होने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए, सही और व्यवस्थित डाटा को 15 दिन भीतर प्रस्तुत करने का निर्देश दिया। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अनुराज जैन, डीसी मनरेगा करुनाकर अदीब, डीसी एनआरएलएम राम दरश चौधरी, प्रभारी डीपीओ अनुराग त्रिपाठी सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

मौनी अमावस्या पर डीएम ने त्रिमुहानी घाट का किया निरीक्षण

महराजगंज। मौनी अमावस्या स्नान पर्व के दृष्टिगत जिलाधिकारी अनुनय झा और पुलिस अधीक्षक सोमेंद्र मीणा ने त्रिमुहानी घाट का निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने घाट पर भ्रमण कर सुरक्षा व्यवस्था सहित श्रद्धालुओं के लिए किए गए इंतजामों का को देखा। जिलाधिकारी महोदय ने घाट पर प्रकाश, मोबाइल शौचालय, गोताखोर आदि की व्यवस्था को सुनिश्चित करने हेतु एसडीएम सदर को निर्देशित किया। पुलिस अधीक्षक ने घाट पर पर्याप्त संख्या में पुलिस कर्मियों की तैनाती करने का निर्देश दिया। उन्होंने स्नान के दौरान ट्रैफिक व्यवस्था को सुचारू रखने हेतु भी आवश्यक निर्देश दिया। निरीक्षण के दौरान एसडीएम सदर रमेश कुमार, बीडीओ सदर अतुल कुमार, ईओ नगर पालिका महराजगंज आलोक कुमार सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

पीड़ित महिला की भूमि पर विपक्षीगण नहीं होने दे रहे निर्माण, एसडीएम से शिकायत

शकुन टाइम्स संवाददाता

कर्नलगंज, गोण्डा। तहसील व कोतवाली क्षेत्र के एक गाँव की रहने वाली पीड़ित महिला ने उपजिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर उसके भूमि पर मकान निर्माण में विपक्षीगण द्वारा किये जा रहे बेजा व अनाधिकार अवरोध को समाप्त करवाये जाने व उसके भूमि पर निर्माण कराने की गुहार लगाई है।ग्राम रूदौलिया निवासिनी सायतुन पत्नी हनीफ ने उपजिलाधिकारी को दिये गये प्रार्थना पत्र में कहा है कि उसके लड़कों द्वारा मेहनत, मजदूरी करके किसी तरह कुछ पैसा एकत्रित किया गया, जब प्रार्थिनी अपने निजी भूमि गाटा संख्या 182 में अपना मकान बनाने लगी तो विपक्षीगण रहमत अली पुत्र मुन्ना, हसन अली पुत्र मुन्ना, रज्जब अली पुत्र मुन्ना, इब्राहीम पुत्र गनी, फकीरा पत्नी पीर मोहम्मद, निवासी पता उपरोक्त जो कि एक सरकश जबरदस्त व परिवारदार व्यक्ति हैं। उक्त लोग अपनी सरकशी के बल पर उसकी

भूमि में मकान बनाने नहीं दे रहे हैं। महिला ने बताया कि उसका सरिया, सीमेण्ट, ईंटा, बालू आदि खराब हो रहा है, और विपक्षीगण जबरन रोंक रहे हैं। जिससे उसकी अपूर्णनीय क्षति हो रही है। पीड़िता ने मांग की है कि प्रभारी निरीक्षक थाना कोतवाली करनैलगंज को आदेशित किया जावे कि मौकै पर जाकर प्रार्थिनी के निर्माण कार्य में विपक्षीगण द्वारा किया जा रहा बेजा अनाधिकार अवरोध समाप्त कराया जाय। महिला का आरोप है कि बीते 3 मई 2024 को नींव खोदी गई थी तभी से पुलिस वाले यह कहते हुए निर्माण करने से रोक रहे हैं कि इसका केस चल रहा है। जब उसने केस खारिज कराया तो कहते हैं उसका कागज लाओ, जब कागज ले जाकर दिखाया गया तो कहते हैं कि वह केस गोण्डा से है। कहीं बताते हैं कि कर्नलगंज तहसील से है तो कहीं दूसरे तहसील से है। इससे महिला काफी परेशान है और रुंधे हुए स्वर में बताया कि वह और उसका परिवार आठ नौ महीने से बेवतन होकर दर दर भटक रहा है। पीड़िता ने उसके निर्माण कार्य में विपक्षीगण के अवैध हस्ताक्षेप को रोकने व उसके भूमि पर निर्माण कराने की मांग की है। इस संबंध में जानकारी करने के लिए उपजिलाधिकारी से सीयूजी नंबर पर संपर्क किया गया तो उनका फोन नेटवर्क क्षेत्र से बाहर था।

लेखाकार के रिश्वतखोरी का वीडियो वायरल, बना चर्चा का विषय

गोंडा। जिले के खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय इटियाथोक में संविदा पर तैनात लेखाकार विनोद कुमार के रिश्वतखोरी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में एक शिक्षक से लेखाकार विनोद रुपये लेते हुए स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। वायरल वीडियो लोगों में काफी चर्चा का विषय बना है। विश्वस्त सूत्रों की मानें तो शैक्षिक अभिलेखों के सत्यापन के नाम पर यह अवैध वसूली बीआरसी केंद्र पर काफी दिनों से चल रही है। हालांकि वायरल वीडियो की समाचार पत्र/चैनल पुष्टि नहीं करता है। मामले में बेसिक शिक्षा अधिकारी अतुल कुमार तिवारी का कहना है,कि मामला संज्ञान में आया है।

ब्लॉक प्रमुख ने ध्वजारोहणकर क्षेत्रवासियों को दी शुभकामनाए

शकुन टाइम्स संवाददाता

पनियरा/ महाराजगंज। विकास खंड पनियरा ब्लॉक परिसर में 76 वें गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर ब्लाक प्रमुख वेद प्रकाश शुक्ल ने ध्वजारोहण कर देश की आन बान शान तिरंगे को सलामी दी। उपस्थित लोगों को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं देते हुए देश के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले महान वीर सपूतों को याद किया।

उन्होंने कहा कि आज ही के दिन हमारा संविधान लागू हुआ था। 26 जनवरी 1950 को देश के लोगों को भारतीय संविधान के तहत मौलिक स्वतंत्रता मिली थी।

विकास कार्यो मे उत्कृष्ट योगदान के लिए सचिव देवीपुर अरुण ठाकुर व सचिव विशुनपुरा प्रकृति नायक को सम्मानित किया। इस अवसर पर खण्ड विकास अधिकारी अमर नाथ पाण्डेय, एडीओ पंचायत गुड्डू प्रसाद ,लेखाकार श्री निवास साहनी सभी सचिवगण व ब्लॉक के सभी अधिकारी कर्मचारी एवम् पूर्व जिला पंचायत सदस्य वीरेंद्र सिंह, पूर्व ब्लाक प्रमुख जयनाथ सिंह , राजेश पाल, रामलखन सिंह , गणेश प्रजापति, शिवम मणि त्रिपाठी,शैलेश पाल, सुनील चौधरी, आलोक मद्धेशिया सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

उच्च प्राथमिक विद्यालय में धूमधाम से मनाया गया गणतंत्र दिवस

शकुन टाइम्स संवाददाता

बृजमनगंज /महाराजगंज। बृजमनगंज विकासखंड के उच्च प्राथमिक विद्यालय गुर्चिहां में 76 वे गणतंत्र दिवस पर झंडारोहण कर देश की आन बान शान तिरंगे झंडे को शिक्षकों एवं बच्चों ने सलामी दी। इस अवसर पर विद्यालय के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना से किया गया। कार्यक्रम का संचालन डा0रमेश कुमार यादव(स0अ0)के द्वारा किया गया। विद्यालय के बच्चों द्वारा देशभक्ति गीत, भाषण, स्टोरी ऑफ सोल्जर,शराब मुक्ति नाटक, वन संरक्षण हेतु नाटक,फिजिकल परफॉर्मेंस आदि देश प्रेम से ओत-प्रोत कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। अध्यापक बासदेव प्रसाद, चंद्र प्रकाश मिश्रा, धर्मेंद्र कुमार, चंद्र प्रकाश, रामनेवास सहित विद्यालय के समस्त स्टॉफ ने इस अवसर पर प्रतिभाग किया।विद्यालय की छात्रा निशा, सरिता, निधि, अर्चना,एवं छात्र मुकेश, आदित्य, पंकज, आशीष,आदि ने कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि के रूप में ग्राम

प्रधान त्रियुगी वरूण व प्रधान प्रतिनिधि दिनेश रौनियार एवं विशिष्ट अतिथि के रूप मे मंडल अध्यक्ष राहुल सिंह की गरिमामयी उपस्थिति रही , उनके द्वारा एवं गाँव की कोटेदार श्रीमती ममता द्वारा बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया।

डीएम की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिला पर्यावरण, गंगा संरक्षण एवं वृक्षारोपण समिति की बैठक

शकुन टाइम्स संवाददाता

बहराइच। वित्तीय वर्ष 2025-26 अन्तर्गत संचालित होने वाले पौध रोपण अभियान को सफल बनाये जाने के उद्देश्य से विकास भवन में आयोजित जिला वृक्षारोपण, पर्यावरण एवं गंगा संरक्षण समिति की बैठक के दौरान जिलाधिकारी मोनिका रानी ने लक्षित विभागों को निर्देश दिया कि आवंटित लक्ष्य के सापेक्ष पौधरोपण कराएं जाने हेतु गडढों की खुदाई, पौधों की उपलब्धता, उठान तथा सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु रोपित गये पौधों की सुरक्षा को सुनिश्चित कराने के व्यापक प्रबन्ध किये जाएं। डीएम ने अधिकारियों को सुझाव दिया कि निर्धारित लक्ष्य 75 लाख पौधों तक ही सीमित न रहें, विभागीय परिसम्पत्तियों में यदि पर्याप्त स्थान उपलब्ध है और वह स्थान पौधरोपण के लिए उपयुक्त है तो लक्ष्य से अधिक पौधे भी रोपित कराने का प्रयास करें। बैठक के दौरान मुख्य

चिकित्साधिकारी व क्षेत्रीय अधिकारी, उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड अयोध्या की अनुपस्थिति का कड़ा संज्ञान लेते हुए जिलाधिकारी ने सीएमओ से स्पष्टीकरण प्राप्त करने तथा क्षेत्रीय अधिकारी द्वारा नियमित रूप से बैठक में उपस्थित न रहने के सम्बन्ध में शासन को पत्र भिजवाये जाने का निर्देश दिया। डीएम ने डीएफओ बहराइच को निर्देश दिया कि वृक्षारोपण लक्ष्यों के सापेक्ष स्थल चयन तथा चयनित स्थानों के अनुकूल प्रजातियों के सम्बन्ध में एडवाईज़री जारी करने का निर्देश दिया। डीएम ने सुझाव दिया कि पौध रोपण के दौरान फलदार पौधों का भी रोपण किया जाय। डीएम मोनिका रानी ने बायोमेडिकल अपशिष्ट को शासन द्वारा निर्धारित मानक एव गाईड के अनुसार वैज्ञानिक ढंग से निस्तारण कराये जाने के निर्देश देते हुए कहा कि नगरीय क्षेत्रों में पंजीकृत लैबों का निरीक्षण कर यह सुनिश्चित किया जाय कि उनके द्वारा भी मानक के अनुसार बायो मेडिकल वेस्ट का निस्तारण किया जाय। डीएम ने कहा कि निरीक्षण के द्वारा शिथिलता पाये जाने पर नियमानुसार कार्यवाही की जाय। डीएम ने शुगर मिलों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों व मानक के अनुसार कूड़े का निस्तारण कराये जाने का निर्देश देते हुए जिला पंचायत राज अधिकारी व उपायुक्त मनरेगा को मुख्य मार्गों के किनारे प्रत्येक माह ग्राम पंचायतों में सफाई अभियान संचालित करने की कार्ययोजना तैयार करने को कहा। डीएम ने नगर निकायों के अधिशासी अधिकारियों को निर्देश दिया कि 01 फरवरी 2025 से विशेष अभियान चलाकर कूड़े के निस्तारण की कार्रवाई करें। डीएम ने निर्देश दिया अभियान के दौरान आवश्यक उपकरणों, जनशक्ति तथा आवश्यकता लॉजिस्टिक की उपलब्धता भी सुनिश्चित की जाय। डीएम ने सफाई अभियान के दौरान स्वयं सहायता समूहों से भी अपेक्षित सहयोग लेने तथा अभियान के दौरान आमजन को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने का भी निर्देश दिया। डीएम ने डीएफओ को निर्देश दिया कि पौध रोपण के लिए नर्सरी इत्यादि तैयार करने हेतु जिले में संचालित गौआश्रय स्थलों से गोबर क्रय कर खाद के रूप में उपयोग किया जाय। बैठक का संचालन प्रभागीय वनाधिकारी अजीत प्रताप सिंह ने किया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी मुकेश चन्द्र, प्रभागीय वनाधिकारी कतर्नियाघाट बी. शिव शंकर, जिला विकास अधिकारी राज कुमार, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ राजेश कुमार उपाध्याय, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी राजीव कुमार, उप निदेशक कृषि शिशिर वर्मा, अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका परिषद बहराइच प्रमिता सिंह सहित अन्य सम्बन्धित मौजूद रहे।

रसोइयों ने कैशलेश चिकित्सा समेत छह सूत्रीय मांगों को लेकर

बहराइच। संयुक्त रसोइया मोर्चा उत्तर प्रदेश के बैनर तले मंगलवार को रसोइयों ने प्रदर्शन किया। इसके बाद छह सूत्रीय मांगों का ज्ञापन जिलाधिकारी को दिया। संयुक्त रसोइया मोर्चा की संयुक्त प्रांतीय मंत्री संजू तिवारी की अगुवाई में मंगलवार को भारी संख्या में पीएम पोषण योजना के तहत रसोइया कलेक्ट्रेट में एकत्रित हुईं। यहां पर सभी ने अपनी मांगों को लेकर धरना प्रदर्शन किया। प्रांतीय संयुक्त मंत्री संजू तिवारी ने रसोइया का बकाया वेतन देने, कोर्ट के आदेश न्यूनतम वेतन लागू करने, ड्यूटी के दौरान मौत पर 50 लाख मुआवजा देने और अप्रिय दुर्घटना के लिए रसोइया को पांच लाख रुपये का कैशलेश चिकित्सा उपलब्ध कराने की मांग की। धरना प्रदर्शन के बाद सभी ने छह सूत्रीय ज्ञापन जिलाधिकारी को संबोधित अतिरिक्त मजिस्ट्रेट को दिया। इस दौरान दमयंती, प्रेम कुमारी, मीना समेत अन्य मौजूद रहीं।

मौनी अमावस्या स्नान की तैयारी पूर्ण, आज होगा स्नान

शकुन टाइम्स संवाददाता

चहनियां/चंदौली। मौनी अमावस्या (माघ मेला) को लेकर तैयारियां पूर्ण हो गयी है । आज बलुआ स्थित पश्चिम वाहिनीं गंगा तट पर लाखों श्रृद्धालु स्नान करेंगे । गंगा में एक दायरे में स्नान करने के लिए रस्सा लगा दिया गया है । बलुआ फील्ड सहित मार्ग पर दुकानें सज गयी है । बलुआ स्थित पश्चिम वाहिनीं गंगा तट पर मौनी अमावस्या (माघ मेला) को लेकर बलुआ स्थित पश्चिम वाहिनीं गंगा तट पर प्रसाशन व गंगा सेवा समिति द्वारा तैयारियां पूर्ण कर ली गयी है । 29 जनवरी को भोर से मौनी अमावस्या पर स्नान के लिए बलुआ पश्चिम वाहिनीं गंगा तट पर भीड़ जूटेगी । बने रैन बसेरा कालेजो,सरकारी विद्यालयो व रिस्तेदारी में दूर दराज बिहार,पश्चिम बंगाल,झारखंड सहित कई जनपदों से आकर लोग मेला से पूर्व ही डेरा डंडा डाल दिये है । गंगा में कोई अनहोनी न हो इसके लिए एक दायरे में स्नान करने के लिए रस्सा लगाया जा चुका है । गंगा सेवा समिति के अध्यक्ष दीपक जायसवाल, नायब तहसीलदार राजेन्द्र प्रसाद,एडियो पंचायत राकेश दीक्षित,ग्राम पंचायत अधिकारी आनन्द कुमार आदि द्वारा प्राइवेट गोताखोर से रस्सा को चेकिंग किया गया । घाट पर जिला पंचायत द्वारा महिला चेंजिंग रूम ,खोया पाया केंद्र,लाइटिंग,रैन बसेरा बनाया गया है । पंचायत विभाग द्वारा अस्थायी शौचालय,स्थायी शौचालय, स्थायी चेंजिंग रूम व घाट की साफ सफाई हुई । घाट पर मेडिकल कैम्प लगाया है और थाने पर एम्बुपेन्स रहेगी । चहनियां प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर डॉक्टरों की टीम मौजूद रहेगी । वन विभाग द्वारा हर पॉइंट पर अलाव जलाया जायेगा।

वही बलुआ फील्ड पर मिष्ठान,गुड़हिया ,चाट,जलेबी,औरते के श्रृंगार,फल आदि की सैकड़ो दुकानें सज गयी है। लोग मौन रहकर स्नान करेंगे। सैकड़ो भिक्षुओं की टोली आकर बलुआ घाट पर टीक गये है। मौनी अमावस्या को लेकर सकलडीहा एसडीएम अनुपम मिश्रा,बलुआ इंस्पेक्टर डॉ. आशीष मिश्रा, गंगा सेवा समिति के अध्यक्ष दीपक जायसवाल द्वारा मॉनिटरिंग होता रहा है।

दुष्कर्म/पाक्सो एक्ट से संबंधित एक अभियुक्त गिरफ्तार

शकुन टाइम्स संवाददाता

बलिया। थानाध्यक्ष सहतवार दिनेश पाठक के नेतृत्व में देखभाल क्षेत्र तलाश वांछित अभियुक्त की गिरफ्तारी के क्रम में मुखबिर की सूचना के आधार पर पाक्सो एक्ट से सम्बन्धित अभियुक्त शनि कुमार पुत्र धर्मेन्द्र बासफोर निवासी ग्राम बलेऊर थाना सहतवार को रेलवे क्रासिंग सहतवार के पास से गिरफ्तार किया।

गिरफ्तार करने वाली पुलिस उ0नि0 प्रदीप कुमार श्रीवास्तव,का0 राज कुमार रहे।

संक्षिप्त सामाचार

बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की दी प्रस्तुति

गाजीपुर/देवकली। बाबा कीनाराम कुटिया रामपुर मांझा में भगवान अवधूत राम का पावन अनन्य दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मेघबरन हाकी स्टेडियम स्टेडियम के व्यवस्थापक अनिकेत सिंह ने अवधूत भगवान राम के जीवन चरित्र प्रकाश डालते हुए बताया कि आज के दिन उनको सिद्धी की प्राप्ति हुई। बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर वाहवाही बटोरी।

बच्चों को प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार वितरित किया गया। इस अवसर पर कामेश्वर राम, वरिष्ठ अधिवक्ता रणजीत सिंह, रामाश्रय सिंह, रामाशीष सिंह, अभय नाथ सिंह यादव, पंकज यादव, तरुण सिंह, सुभाष चन्द्र पाण्डेय, आदि लोग मौजूद रहे। संचालन वरिष्ठ अधिवक्ता रणजीत सिंह एडवोकेट ने किया।

ब्लॉक संसाधन केंद्र का किया उद्घाटन

गाजीपुर। क्षेत्र के ब्लॉक संसाधन केंद्र का कायाकल्प और टाइलीकरण कार्य पूर्ण होने के बाद मंगलवार को खंड विकास अधिकारी त्रिवेणी रामने फीता काटा कर उद्घाटन किया। इस दौरान कार्यालय के सभी कर्मचारियों को डायरी और पेन देकर सम्मानित किया। बीडीओ ने प्रधान सुभाष यादव के कार्यों की सराहना की। इस मौके पर भदौरा के खंड शिक्षा अधिकारी सीताराम यादव, नितेश सिंह, श्रीकांत, राहुल प्रजापति, प्रशांत त्रिपाठी, अभय कुमार आदि मौजूद रहे।

थाने के पास स्थित घर से लाखों की चोरी

गाजीपुर (दिलदारनगर)। थाना के समीप एक परिवार की गैर मौजूदगी का फायदा उठाते हुए चोरों ने लाखों का सोने चांदी का आभूषण पार कर दिया। घर वापस आने पर लोगों को जानकारी हुई तो पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच कर जल्द खुलासे का भरोसा दिया। जानकारी के अनुसार 26 जनवरी के दिन अजय कुमार सैनी का परिवार वाराणसी में एक सगाई समारोह में शामिल होने गया था। सुबह 11 बजे घर से निकला परिवार जब रात एक बजे वापस लौटा, तो उन्हें घर का मुख्य गेट का ताला टूटा मिला। घर के अंदर का नजारा देखकर परिवार सदमे में आ गया। चोरों ने घर में रखी नकदी और कीमती आभूषणों को चुरा लिया था। पीड़ित अजय कुमार सैनी ने तत्काल स्थानीय थाने में शिकायत दर्ज कराई। थानाध्यक्ष अशोक कुमार मिश्रा ने मामले को गंभीरता से लेते हुए चोरी का मुकदमा दर्ज कर लिया है। पुलिस टीम आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है।

आर्थिक मजबूत होंगे ड्रॉप मोर क्राप योजना से किसान

गाजीपुर। किसानों की आय दोगुना करने के लिए शासन की ओर से %पर ड्राप मोर क्राप (इरीगेशन)% योजना की शुरुआत हो गई है। यह योजना वर्ष 2027 तक चलेगी। इस योजना के तहत किसान ड्रिप व स्प्रिंकलर, रेनगन खरीद कर अनुदान ले सकते हैं। औद्यानिक व कृषि फसलों की सिचाई के लिए ड्रिप और स्प्रिंकलर यंत्र आते हैं। इस यंत्र की खरीदारी करने पर किसानों को अनुदान भी मिलता है। ड्रिप और स्प्रिंकलर यंत्र टपक विधि से सिचाई करते हैं।

इस सिचाई में पानी की बर्बादी नहीं होती है। पानी केवल पौधों की जड़ों में देने से पानी की बचत होती है। पानी देने के लिए मेड़ व नालियां बनाने की जरूरत नहीं होती है। पैदावार तथा फसल की गुणवत्ता में अत्यधिक वृद्धि होती है। ड्रिप सिचाई पद्धति से लवणीय भूमि में भी बागवानी संभव होती है। फसलों में बीमारी एवं कीड़े-मकोड़ों पर प्रभावी नियंत्रण रहता है, जिससे फसल उत्पादन की क्षमता दोगुना हो जाती है।

राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह में दी यातायात नियमों की जानकारी

शकुन टाइम्स संवाददाता

गाजीपुर। भांवरकोल थाना क्षेत्र के चांदपुर के पास पूर्वांचल एक्सप्रेसवे के चैनल नंबर 335 पर टोल प्लाजा पर यूपीडा एवं ओरिएंटल स्ट्रक्रल कंपनी के द्वारा राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह में जागरूकता के लिए कैंप का आयोजन किया गया है।

इस कैंप के माध्यम से वाहन चालकों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया जा रहा है। कंपनी के अभियंता कृष्णकांत मिश्रा ने बताया कि राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह का आयोजन 1 जनवरी से 31 जनवरी के बीच में किया जा रहा है। जिसका लक्ष्य सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाना और वाहन चालकों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करना है। पंपलेट वितरण करके वाहन चालकों को राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह में यातायात नियमों की जानकारी दी जा रही है।

इस दौरान नशे में वाहन न चलना, वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करना, सीट बेल्ट का प्रयोग करना, तेज गति से वाहन न चलना आदि शामिल है। इसमें टोल प्लाजा के कर्मचारी भी बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं।

अमृत सरोवर का जिलाधिकारी ने फीता काटकर किया उद्घाटन

शकुन टाइम्स संवाददाता

गाजीपुर। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी द्वारा बाराचवर ब्लॉक क्षेत्र के ताजपुर गांव में स्वयं सहायता समूह केन्द्र के नवनिर्मित भवन व अमृत सरोवर का फीता काट कर उद्घाटन किया गया। इस दौरान डीएम ने कहा कि इस केंद्र के द्वारा प्रशिक्षित होकर समूह के माध्यम से महिलाएं आत्मनिर्भर बनेंगी, इससे उनकी आय बढ़ेगी। इस केंद्र से महिलाओं को अगरबत्ती, मोमबत्ती, टॉयलेट क्लीनर, हैंड वॉश, आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। अमृत सरोवर के माध्यम से जहां एक तरफ जल संरक्षण होगा वहीं दूसरी तरफ अमृतसर के किनारे लगे पेड़ों से पर्यावरण की शुद्धि होगी। इस दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि लोगों को गांव को साफ सुथरा बनाने में सहयोग करने की आवश्यकता है। ग्राम पंचायत के द्वारा गांव से इकट्ठा करके कूड़ा अपशिष्ट केंद्र पर ला उसे रीसायकल कर कंपोस्ट बनाया जायेगा। इससे पर्यावरण साफ सुथरा करने में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि सरकारी योजना लोगों के सहयोग से चलती है। इसे बेहतर ढंग से चलने में सबको सहयोग करना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना के तहत बने केन्द्र को कोई नुक्सान न कर सके। इस बात का ध्यान सभी को रखना चाहिए।

ग्राम पंचायत द्वारा अमृत सरोवर में लोगों को नौकायन का लाभ पहुंचाने के लिए नाव की व्यवस्था की गई है। जो स्वयं सहायता समूह के माध्यम से चलाया जाएगा जिसके लिए एक निश्चित धनराशि प्रति व्यक्ति के हिसाब से लोगों से लिया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान बीडीओ बाराचवर सीमा कुमारी द्वारा डीएम को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। इस दौरान प्रमुख रूप से सीडीओ संतोष कुमार वैश्य, ब्लॉक प्रमुख बृजेंद्र सिंह, डीसी मनरेगा डी एम दुवे, वीडियो अरुण कुमार सहित अन्य लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन बीएमएम सुधीर जायसवाल द्वारा किया गया।

पुलिस अधीक्षक ने सुनी लोगों की फरियाद

शकुन टाइम्स संवाददाता

चंदौली। जनता की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण कराए जाने के क्रम में मंगलवार को पुलिस अधीक्षक आदित्य लांग्हे ने पुलिस कार्यालय में जनसुनवाई किया। जिसमें अपनी समस्याओं को लेकर पहुंचे फरियादियों के आवेदन लेकर उन्हें न्यायोचित/गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने का आश्वासन दिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि फरियादियों की शिकायतों का गुणवत्ता के साथ निस्तारित करना व न्याय दिलाना ही चन्दौली पुलिस की प्राथमिकता है। पुलिस अधीक्षक द्वारा विभिन्न थानाक्षेत्रों से आए आवेदकों की शिकायतो को जनसुनवाई के माध्यम से गंभीरतापूर्वक सुना एवं संबंधित राजपत्रित अधिकारी (पुलिस) थाना प्रभारी से स्वयं वार्ता कर आवेदक की शिकायत का निराकरण किये जाने हेतु निर्देशित किया। पुलिस अधीक्षक द्वारा अधीनस्थ अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि जनसुनवाई के दौरान आने वाले नागरिकों/आवेदकों/ फरियादियों के साथ शिष्ट एवं विनम्र व्यवहार किया जाए व प्रत्येक आवेदक की शिकायतों को ध्यानपूर्वक सुनकर गुण दोष के आधार पर विधिक कार्यवाही की जाए। जनसुनवाई के दौरान भूमि विवाद 03, पारिवारिक विवाद 01 व अन्य विवाद 08 कुल-12 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए। जिनके निस्तारण के लिए पुलिस अधीक्षक द्वारा तत्काल सम्बन्धित अधिकारी को निर्देशित भी किया गया।

प्रयागराजः महाकुम्भ मेले के दृष्टिगत जनपद में संचालित अस्थायी बस अड्डे का जिलाधिकारी ने किया निरीक्षण

- **महाकुम्भ मेले में जाने वाले आम जनमानस की सुविधा एवं सुगमता के दृष्टिगत जिलाधिकारी ने लिया अस्थायी बस अड्डे का जायजा, सम्बन्धित अधिकारियों को दिए आवश्यक निर्देश**

शकुन टाइम्स संवाददाता

चन्दौली। जिलाधिकारी निखिल टी फुंडे ग्राम झांसी चन्दौली स्थित प्रयागराज में आयोजित महाकुम्भ में जाने हेतु अस्थायी बस अड्डे का स्थलीय निरीक्षण किया गया। जिलाधिकारी द्वारा तीर्थ यात्रियों के सुगम आवागमन से सम्बन्धित आवश्यक निर्देश दिये गये। जनपद चन्दौली से जाने वाले आम जनमानस की सुविधा एवं सुगमता के दृष्टिगत जनपद में अस्थायी बस अड्डा जो कि दिनांक-13.01.2025 से 26.02.2025 तक क्रियाशील रहेगा। निरीक्षण के दौरान तीर्थ यात्रीयों को उपलब्ध करायी जाने वाली मूलभूत सुविधाओं का सुनिश्चित किये जाने हेतु सम्बन्धित को निर्देशित भी किया गया। अस्थायी बस अड्डे का किया गया निरीक्षण के दौरान डॉ0 सर्वेश गौतम, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी, चन्दौली, अलोक कुमार (ए0ई0) पीडब्ल्यूडी0, ललित कुमार मालवीय, यात्री / मालकर अधिकारी व परिवहन विभाग के स्टाफ के साथ महाकुम्भ में जाने वाले तीर्थ यात्री उपस्थित रहे।

एनसीसी का दिया गया प्रशिक्षण

शकुन टाइम्स संवाददाता

सकलडीहा। सकलडीहा इंटर कालेज में मंगलवार को एनसीसी प्रथम वर्ष के कैडेट की ओर से द्वितीय वर्ष के सीनियर कैडेटों का सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। बतौर मुख्य अतिथि प्रबंधक पंकज कुमार पांडेय और प्रधानाचार्य कमलापति पाण्डेय ने मां सरस्वती के तेल चित्र पर दीप प्रज्वलन व पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम की शुरूआत किया। इस मौके पर सरस्वती वंदना और स्वागत गीत और विभिन्न की सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर के कैडेटों ने शिक्षक एवं छात्र छात्राओं का मन मोह लिया। अंत में सीनियर कैडेटों का सम्मान किया गया।

मुख्य अतिथि पंकज पांडेय ने कहा कि ऐसे आयोजन से छात्रों में प्रतिभा एवं झिझक दूर होती है। और खुद को प्रजेंट करने में कठिनाई नहीं होती। हम चाहेंगे की पूरे कालेज के छात्रों के द्वारा सीनियर का सम्मान ऐसे आयोजन के माध्यम से किया जाय। ये छात्र अपने जीवन के क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए बड़े का सम्मान करे गुरुजनों का सम्मान करे । वही कमलापति पाण्डेय ने छात्रों के कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा भी दिया । कार्य के लिए समय निर्धारण कर उद्देश्य की सफलता का मंत्र दिया। इस अवसर पर प्रदीप कुमार, घनश्याम त्रिपाठी,प्रमोद पांडेय, कैप्टन सत्य मूर्ति ओझा,विनोद कुमार,संजय मिश्र, मिथिलेश तिवारी,धर्मेद कुमार, मोहम्मद फैज,राजीव श्रीवास्तव, वंशराज ,गिरीश, दिलिप सोनकर ,गायत्री मिश्रा, पुष्पा पांडेय, प्रतिमा सिंह,दिलीप सिंह,अजय गुप्ता,अनिल कुमार,सर्वेश कुमार,प्रिया कुमारी, मंत्सा परवीन,सोनी,जाह्नवी सिंह, कुणाल कुमार,दिलीप कुमार आदर्श कुमार,खुशबू सोनकर आदि मौजूद रही।

घर-घर जाकर बच्चों को खिलाएं एल्बेंडाजोल की गोली

सैदपुर। नगर स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर सोमवार को कृमि मुक्ति अभियान को लेकर ब्लॉक टास्क फोर्स कमेटी की बैठक का आयोजन किया गया। इस दौरान क्षेत्र के बच्चों में पेट से कृमि मुक्ति को लेकर चर्चा की गई। इस दौरान उन्हें घर-घर जाकर एल्बेंडाजॉल की गोली खिलाने को लेकर रणनीति बनाई गई। अधीक्षक डॉ. संजीव सिंह ने बैठक में शामिल स्वास्थ्य, शिक्षा व बाल पुष्टाहार विभाग के सभी जिम्मेदारों से कहा कि वो अपने दायित्वों का भलीभांति निर्वहन करें। उन्होंने कहा की बच्चों के समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने, पोषण की स्थिति में सुधार व उन्हें गुणवत्तापूर्ण जीवन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कार्यक्रम का सफल संचालन महत्वपूर्ण है। कहा कि इसके संबंधित जिम्मेदार कर्मी घर-घर जाकर सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय, आंगनबाड़ी केंद्र में नामांकित व अनामांकित शून्य से लेकर 19 साल तक के बच्चों को चिह्नित करते हुए कृमिनाशक दवा का सेवन सुनिश्चित कराए जाएंगे।

रेवसा गांव के लोगों ने पत्र के माध्यम से विधायक जी को समस्याओं को अवगत कराया है

शकुन टाइम्स संवाददाता

चन्दौली/तारा जीवनपुर। क्षेत्र के रेवसा गांव के ग्रामीणों ने मंगलवार को सकलडीहा विधायक प्रभुनारायण यादव से मिलकर पत्रक के माध्यम से गांव की तमाम समस्याओं को अवगत कराया। वही सभी समस्याओं का निस्तारण करने की मांग की। क्षेत्र के रेवसा गांव से होकर भारतमाला परियोजना का निर्माण शुरू हो गया है । इसमें बहुत से ग्रामीण बेघर हो रहे हैं। यहां तक की भूमिहीन भी है। लेकिन बहुत से लोगों का अभी तक ना तो मुआवजा मिला और ना ही इनको जमीन उपलब्ध कराई गई। इसके साथ ही नेशनल हाईवे का निर्माण पचफेड़वा में किया जा रहा है। हाईवे के दोनों तरफ विद्यालय, गांव व बाजार है। आवागमन करने के लिए यहां पर ना तो अंडरपास है और ना ही फुट ओवर ब्रिज । जिससे आवागमन करते समय लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ता है । यहां तक की हाईवे पार करते समय बहुत लोगों की जान तक चली गई है। नेशनल हाईवे से होकर दलित बस्ती तक जाने वाला मुख्य मार्ग वर्षों से खराब पड़ा हुआ है। पहले से स्थापित अंबेडकर प्रतिमा के नवीनीकरण को लेकर भी ग्रामीणों ने पत्रक के माध्यम से अवगत कराया। इन तमाम समस्याओं का निस्तारण जल्द से जल्द करने का आश्वासन दिया। विधायक प्रभु नारायण यादव ने बताया कि किसानों को उचित मुआवजा और जमीन उपलब्ध कराने के साथ-साथ पचफेड़वा में फुट ओवर ब्रिज बनाने के लिए जिलाधिकारी से मिलकर पत्रक हम लोगों द्वारा सौपा गया है। जल्द ही इन दोनों समस्याओं का निस्तारण करने का काम किया जाएगा। पत्रक सौपना वालों में मुख्य रूप से पूर्व प्रधान विक्की यादव, सुरेश अकेला, गुड्डू खान, संतोष यादव सहित तमाम ग्रामीण शामिल रहे।

मौनी अमावस्या पर अमृत स्नान के लिए आने-जाने वाले श्रद्धालुओं की उमड़ी भीड़

यात्रियों को संभालने में जुटी जीआरपी और आरपीएफ की टीम

शकुन टाइम्स संवाददाता

डीडीयू नगर/ चंदौली। प्रयागराज महाकुंभ में सबसे महत्वपूर्ण मौनी अमावस्या पर अमृत स्नान के लिए स्नानार्थियों की भीड़ स्थानीय रेलवे स्टेशन पर उमड़ने लगी है। सोमवार को स्थानीय रेलवे स्टेशन पर पचास हजार से अधिक भीड़ उमड़ पड़ा। भीड़ को संभालने में आरपीएफ, जीआरपी स्टेशन अधीक्षक,वाणिज्य विभाग के अधिकारियों के पसीने छूट गये। यात्रियों की भीड़ को संभालने के लिए वरीय मंडल सुरक्षा आयुक्त जेतिन बी राज ने स्वयं संभाल ली है। वहीं मंडल रेल प्रबंधक पल पल की निगाह रखे हुए हैं। यही नहीं जोनल अधिकारियों की भी निगाह जुटी है। माघ माह में अमावस्या तिथि को स्नान का अत्यधिक महत्व है। प्रयागराज महाकुंभ में मौनी अमावस्या पर प्रयागराज में दस करोड़ लोगों के पहुंचने का अनुमान है। इसकी बानगी डीडीयू स्टेशन पर दिखाई दे रही है। रविवार से ही स्टेशन पर अप और डाउन की ट्रेनो में अत्यधिक भीड़ रही है। विशेष कर प्रयागराज जाने वाली ट्रेनों में यात्री भूसे की तरह लद कर जा रहे हैं। रविवार को यात्रियों की भीड़ को देखते हुए वरीय मंडल सुरक्षा आयुक्त जेतिन बी राज स्वयं रेलवे स्टेशन पर पहुंचे और व्यवस्था का जायजा लिया। सोमवार को भी 50 हजार से अधिक श्रद्धालुओं की भीड़ डीडीयू स्टेशन पर जुट गई। प्रयागराज से आने वाली ट्रेनों से भी स्नानार्थी भर-भर कर पहुंच रहे हैं। यहां से पटना और गया रूट की ट्रेनों में यात्रियों को सुरक्षित सवार कराना टेढ़ी खीर साबित हो रही है। आरपीएफ निरीक्षक प्रदीप कुमार रावत, जीआरपी निरीक्षक सुनील कुमार सिंह, स्टेशन अधीक्षक एसके सिंह, सीएसजी एनके मिश्र आरि की देख रेख में टीम जुटी हुई है। वरीय मडल सुरक्षा आयुक्त जेतिन बी राज ने कहा कि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो इसके लिए पूरा प्रयास किया जा रहा है। सुरक्षा के पूरा इंतजाम किया गया हैं।

कंट्रोल रूम से रखी जा रही है निगाह

डीडीयू नगर। स्थानीय रेलवे स्टेशन पर यात्रियों के भीड़ पर निगाह रखने के लिए स्टेशन निदेशक के रूम को कंट्रोल रूम में तब्दील कर दिया गया है। यहां चौबीस घंटे के लिए मंडल स्तरीय एक अधिकारी की ड्यूटी लगाई गई है। यहीं नहीं यहां सुरक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता विभाग की टीम को तैनात किया गया है। इस संबंध में वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त जेतिन बी राज ने कहा कि स्टेशन पर सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए गए हैं।महाकुंभ में पर यात्रियों की भीड़ को देखते हुए डीडीयू स्टेशन के मुख्य गेट पर ही यात्री सहायता केंद्र की स्थापना की गई है।

यहां आरपीएफ, जीआरपी के अधिकारियों के साथ ही वाणिज्य विभाग के अधिकारियों की टीम लगाई गई है। यहां टीटीई यात्रियों को सही जानकारी दे रहे हैं।साथ ही यहां कुंभ स्पेशल ट्रेनों की टाइमिंग बताई जा रही है।

पत्नी और चार बेटियों की हत्या का आरोपी बदरुद्दीन गिरफ्तार

पुलिस के पकड़ते ही खा लिया जहरीला पदार्थ

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। यूपी राजधानी लखनऊ में पुलिस ने पत्नी और चार बेटियों समेत अपने परिवार के पांच लोगों की हत्या करने के एक आरोपी बदरुद्दीन को गिरफ्तार कर लिया है। अधिकारियों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। चारबाग इलाके में होटल शरणजीत में 31 दिसंबर को अपने बेटे अरशद की मदद से अपने परिवार की हत्या करने वाले बदरुद्दीन उर्फबदर को सोमवार को पुलिस ने गोपनीय सूचना के आधार पर गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तारी के दौरान आरोपी ने जहरीला पदार्थ खाने की भी कोशिश की, लेकिन तत्काल चिकित्सा सहायता के बाद वह सुरक्षित है। कथित तौर पर पिता-पुत्र के हाथों मारे गए लोगों में बदर की पत्नी आसमां (49) और उसकी बेटियां आलिया (9), अलशिया (19), अक्सा (16) और रहमीन (18) शामिल हैं। अरशद ने अपने गृहनगर आगरा में अपने समुदाय के कुछ स्थानीय लोगों द्वारा भूमि विवाद को लेकर उत्पीड़न करने का आरोप लगाया था, जिसके कारण क्षुब्ध होकर उसने अपराध करने का दावा किया था। पांच हत्याओं का मामला एक जनवरी को सामने आने के तुरंत बाद आरोपी मोहम्मद अरशद को गिरफ्तार कर लिया गया था।

सोशल मीडिया पर एक कथित वीडियो में अरशद ने अपनी बहनों और मां की कलाई और गला रेतने की बात कबूल की। उसने दावा किया कि मोहल्ले के लोगों के उत्पीड़न के कारण उसने यह कदम उठाया। अरशद ने कहा था, मैं और मेरा पूरा परिवार लाचारी और निराशा में यह कदम उठाने को मजबूर हैं... मैंने अपनी बहनों और मां को खुद को मार डाला है।

जागृति सेवा संस्थान द्वारा भागवत कथा का शुभारंभ

शकुन टाइम्स संवाददाता

कानपुर। शास्त्री नगर मे जागृति सेवा सस्थान की व्यस्थापक दीक्षा तिवारी जी ने भव्य भागवत गीता का प्राम्भ किया पंडित जी ने श्रीकृष्ण भगवान का जन्म गुन गान किया इसमें पदाधिकारी विनायक तिवारी, गोविन्द गुप्ता, करन यादव,बृजेन्द्र उपाध्याय, अंकित,कृष्ण जी बाल कलाओ का वरन किया पंडित जी ने सस्थान के साथ आज कलश यात्रा मे सभी महिलाओ ने शास्त्री नगर से कालीमाड़िया से वापस यात्रा शास्त्री नगर मे सम्पन हुई यात्रा मे सभी क्षेत्र के लोगो ने हिस्सा लिया।

संक्षिप्त सामाचार

मासूम के साथ दुष्कर्म का प्रयास करने वाला मुठभेड़ में गिरफ्तार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के गाजीपुर क्षेत्र में पुलिस ने मासूम के साथ दुराचार का प्रयास करने वाले हैवान को एक सशस्त्र मुठभेड़ में घायल अवस्था में गिरफ्तार कर लिया। पुलिस सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि क्षेत्र में एक महिला ने बीती देर रात पुलिस को सूचित किया था कि उसकी करीब साढ़े तीन साल की पुत्री को पति का दोस्त कुंदन कश्यप बहला फुसला कर ले गया था और गलत काम करने की कोशिश की। पुलिस ने मामला दर्ज कर त्वरित कार्रवाई करते हुये रात करीब दो बजे बंधा रोड पर आरोपी को ललकारा जिस पर उसने पुलिस दल पर फायर करते हुये भागने का प्रयास किया। जवाबी कार्रवाई में उसके पैर पर गोली लगी और उसके धर दबोचा गया।

फैजाबाद रोड पर एलडीए की टीम ने चलाया बुलडोजर, अवैध कब्जेदारों ने की नोक झोंक

लखनऊ। लखनऊ विकास प्राधिकरण ने फैजाबाद रोड पर एलडीए की जमीन से अवैध कब्जा हटाया है। इस दौरान अवैध कब्जदारों से एलडीए टीम की नोकझोंक भी हुई। एलडीए अधिकारियों का कहना है कि अर्जित भूमि पर अवैध ढंग से कब्जा किया गया था। इसी को लेकर कार्रवाई हुई है। यह अवैध कब्जा एक कंपनी की तरफसे किया गया था। वहीं, बुलडोजर से अवैध निर्माण ध्वस्त करने के बाद मौके पर मौजूद कंपनी के लोगों ने नोक झोक करते हुए आरोप लगाया कि गलत ढंग से उनके खिलाफ कार्रवाई की गई है। इसके कारण उनकी बाउंड्री और गोदाम टूट गया। एलडीए जोन 6 के जोनल अधिकारी शशि भूषण पाठक का कहना है कि अवैध निर्माण के खिलाफलगातार अभियान चलाकर कार्रवाई की जा रही है।

सीएम के सलाहकार अवनीश अवस्थी की मां का पर्स चोरी

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के हजरतगंज इलाके में सीएम योगी आदित्यनाथ के सलाहकार अवनीश अवस्थी की मां का पर्स गायब हो गया। बुजुर्ग अपने निजी काम से पुलिस लाइन गई थी, वहां अज्ञात चोर ने बैग उड़ा दिया। कुछ देर बाद एटीएम से 10-10 हजार करके 1 लाख रुपए निकाल लिए। पुलिस मामले की जांच कर रही है। विजय खण्ड गोमतीनगर निवासी उषा अवस्थी सोमवार को अपने निजी काम से पुलिस लाइन गई थी। वहां चोर ने उनका पर्स गायब कर दिया। जिसमें 10 हजार नगद, एसबीआई बैंक के एटीएम सहित घर की चाभी व जरुरी कागज रखे थे। पर्स के गायब होने के एक घंटे बाद उनके मोबाइल पर अकाउंट से पैसे निकालने के मैसेज आने लगे। चोर ने करीब 10-10 हजार करके एक लाख रुपए निकाल लिए। जिसके बाद ऊषा सीएसआई टावर स्थित स्टेट बैंक की ब्रांच में जाकर अपना कार्ड ब्लॉक कराया।

वक्फ बिल के विरोध में पसमांदा सामज करेगा प्रदर्शन

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में वक्फसंशोधन विधेयक 2024 को लेकर पसमांदा मुस्लिम समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने प्रेसवार्ता किया। अनीस मंसूरी में संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) की रिपोर्ट को विवादित और एकतरफा बताया।

बीजपुर में 16 वर्षीय किशोर की संदिग्ध परिस्थिति में मौत

शकुन टाइम्स संवाददाता

बीजपुर /सोनभद्र। बीजपुर थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत डोढ़हर के बेलहवा टोला मैं एक 16 वर्षीय किशोर की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत का मामला सामने आया है।

16 वर्षीय राजू पाल का शव एक सीटा वाले मकान में जमीन पर पड़ा मिला। मृतक के गले पर निशान होने से हत्या की आशंका जताई जा रही है, मृतक के पिता श्यामलाल ने सुबह जब शव देखा तो ग्राम प्रधान को सूचित किया। सूचना मिलते हैं बीजपुर पुलिस टीम मौके पर पहुंची और जांच में जुट गई, बीजपुर थाना प्रभारी निरीक्षक अखिलेश मिश्रा ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजवा दिया गया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मौत का सही पता चल पाएगा। परिजनों द्वारा हत्या की आशंका जताएं जाने के बाद पुलिस संदिग्ध लोगों से पूछताछ कर रही है।

"ज्ञानयज्ञ युगधर्म है: उमानंद शर्मा

लखनऊ। गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर लखनऊ के विचार क्रान्ति ज्ञान यज्ञ अभियान के अन्तर्गत "सिटी कान्वेन्ट इन्टर कॉलेज, पारा, राजाजीपुरम, लखनऊ, उ0प्र0" के केन्द्रीय पुस्तकालय में गायत्री परिवार के संस्थापक युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित सम्पूर्ण 79 खण्डों का 431वाँ ऋषि वांड़मय की स्थापना कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उपरोक्त साहित्य गायत्री परिवार के सक्रिय कार्यकर्ता श्री व्यास जी मिश्र एवं श्रीमती कमलावती मिश्र ने अपने प्रिय पुत्री अंजली मिश्र के उज्जवल भविष्य के लिये भेंट किया तथा सभी छात्र-छात्राओं, शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं को (हिन्दी) अखण्ड ज्योति पत्रिका भेंट की। इस अवसर पर वाड्मय स्थापना अभियान के मुख्य संयोजक उमानंद शर्मा ने कहा कि ज्ञानयज्ञ युगधर्म है। उषा सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का समापन संस्थान के चेयरमैन अंकित उपाध्याय ने धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया।

अप्रैल से शुरु आर्थिक गणना

बनेंगी योजनाएं और नीतियां, 8वीं आर्थिक गणना 2025-26 के क्रियान्वयन पर बैठक

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। देशव्यापी 8वीं आर्थिक गणना अप्रैल शुरु होकर अक्टूबर माह तक चलाये जाने की तैयारी है। इस दौरान लोगों की आर्थिक स्थिति से संबंधित आंकड़े एकत्र किए जाएंगे। आर्थिक आधार पर की जाने वाली यह जनगणना सरकारी योजनाओं को बनाने में उपयोगी होगी। इसमें राज्य के सभी उद्यमों की स्थिति, संकार्य की प्रकृति, रोजगार आदि से सम्बन्धित आधारभूत एवं प्रमाणित आंकड़े उपलब्ध होंगे। इससे नई योजनाओं और नीतियों को बेहतरीन तरीके से बनाया जा सकेगा। गणना कार्य में राज्य नोडल विभाग नियोजन होगा। उत्तर प्रदेश में होने वाली इस गणना को लेकर सोमवार को लोकभवन में मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय समन्वय समिति (एसएलएससी) की बैठक आयोजित की गई। बैठक में मुख्य सचिव ने कहा कि आर्थिक गणना के मद्देनजर सभी आवश्यक तैयारियां समय से पूरी कर ली जायें। जिलास्तरीय मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण फरवरी तक और उपजिला स्तरीय मास्टर ट्रेनर, एन्यूमरेटर एवं सुपरवाइजर का प्रशिक्षण मार्च तक पूरा करा लिया जाये। उन्होंने कहा कि गणना को निर्धारित समयावधि में पूरी कराने के लिये सभी सम्बन्धित विभागों द्वारा परस्पर सहयोग व समन्वय सुनिश्चित किया जाये। मण्डल एवं जनपद पर सभी सम्बन्धित विभागों के परस्पर सामंजस्य एवं समन्वय के लिए मण्डलायुक्त की अध्यक्षता में गठित मण्डल स्तरीय समन्वय समिति तथा जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित जिलास्तरीय समन्वय समिति की बैठक समय से करके जरूरी तैयारियां सुनिश्चित करा ली जायें। बैठक में मुख्यमंत्री के आर्थिक सलाहकार डॉ. केवी राजू, प्रमुख सचिव नियोजन आलोक कुमार, प्रमुख सचिव एमएसएमई आलोक कुमार, प्रमुख सचिव व्यावसायिक शिक्षा डॉ. हरिओम, प्रमुख सचिव सचिवालय प्रशासन के. रविन्द्र नायक सहित सम्बन्धित विभागों के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण आदि मौजूद रहे।

शायद नहीं है शिक्षा के मंदिर करीमपुर विद्यालय पर शिक्षा विभाग की कोई नजर

प्रदेश सरकार के सपने पर हापुड़ शिक्षा विभाग फेरता पानी

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। प्रदेश सरकार लगातार शिक्षा की ओर जबरदस्त मजबूती वाले कदम उठा रही है तो उधर हापुड़ डीएम श्रीमती प्रेरणा शर्मा भी लगातार विद्यालय और शिक्षा को लेकर बैठकर करती रहती हैं मगर बात की जाए जो हापुड़ शिक्षा विभाग की तो शायद इससे बड़ी लापरवाही कहीं जनपद में नजर नहीं आएगी, देखा जाए तो हापुड़ बीएसए की भी नजर शायद नहीं है गढ़मुक्तेश्वर के गांव पूर्व माध्यमिक विद्यालय करीमपुर पर, जो तस्वीर आपके सामने बयां कर रही हैं शायद काफी समय से यह मामला चल रहा है मगर हापुड़ शिक्षा विभाग की इससे बड़ी लापरवाही क्या हो सकती है जो आपके सामने हैं, बड़ी बात तो यह है समय से पहले विद्यालय जर्जर हो गया उसके उपरांत भी कोई कार्रवाई का नतीजा सामने नहीं है तो वही विद्यालय की बिल्डिंग बाउंड्री अंदर से बाहर तक जर्जर कहीं जाए तो आपके सामने नतीजा है, बिल्डिंग का लेटर रुका है गाटरों के द्वारा तो उधर कमरों से भी छूट रहा है सीमेंट मगर नहीं है शुद्ध शिक्षा विभाग को विद्यालय की प्रदेश सरकार के सपनों पर पानी फेरति गढ़मुक्तेश्वर का पूर्व माध्यमिक विद्यालय करीमपुर, अगर अब बात की जाए विद्यालय स्टाफ और बीओ पंकज चतुर्वेदी की तो इनके द्वारा बच्चे विद्यालय से बाहर काफी समय से शिक्षा ले रहे हैं जहां पर कई दफा है पंकज चतुर्वेदी ने इस विषय पर काफी गंभीरता दिखाई है मगर जिसका नतीजा अभी तक जीरो पॉइंट पर है, जिला अधिकारी के आदेशों को शायद लगती हापुड़ बीएसए पलीता, विद्यलय अंदर से बाहर तक टाएं टाएं फीश की स्थिति के अंदर खड़ा हैं, जो विद्यालय समय से पहले ही स्थिति खराब हो गया मगर शिक्षा विभाग की इससे बड़ी लापरवाही क्या हो सकती है जो आपके सामने हैं आखिर हापुड़ बीएसए श्रीमती रितु तोमर आखिर कब तक लेंगे इस पूरे प्रकरण का संज्ञान, शिक्षा के मंदिर पर कब होगी नजर बड़ा सवाल।

कर्नल आदि शंकर मिश्र `आदित्य' को डॉक्टरेट की मानद उपाधि

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। वरिष्ठ कवि व साहित्यकार कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य' की झोली में एक और उपलब्धि आई है। भारत सरकार से अनुमत प्रतिष्ठित संस्था सैल्यूट एचीवर्स आनारेबल ऑर्गेनाइजेशन ने उन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया है।

लेफ्टिनेंट कर्नल 'आदित्य' को यह उपाधि हिंदी साहित्य में उनके अथक परिश्रम और हिंदी के विकास के लिए किए गए प्रयासों के एवज में प्रदान की गई है। कर्नल मिश्रा के सात काव्य संग्रह, दो लेख संग्रह, 12 से अधिक साझा काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा दैनिक समाचार पत्रों, साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाओं में उनके लेख व कविताएँ प्रकाशित होते रहते हैं। 77 वर्ष की आयु में इतनी बड़ी उपाधि मिलने से कर्नल मिश्रा स्वयं प्रफुल्लित हैं। उनके परिवार, रिश्तेदारों, सगे संबंधियों, मित्रों तथा सेना के पूर्व अधिकारियों व सैनिकों को उनके इस सम्मान पर गर्व महसूस हो रहा है और लगातार बधाइयों के संदेश व फ़ोन कॉल आ रहे हैं।

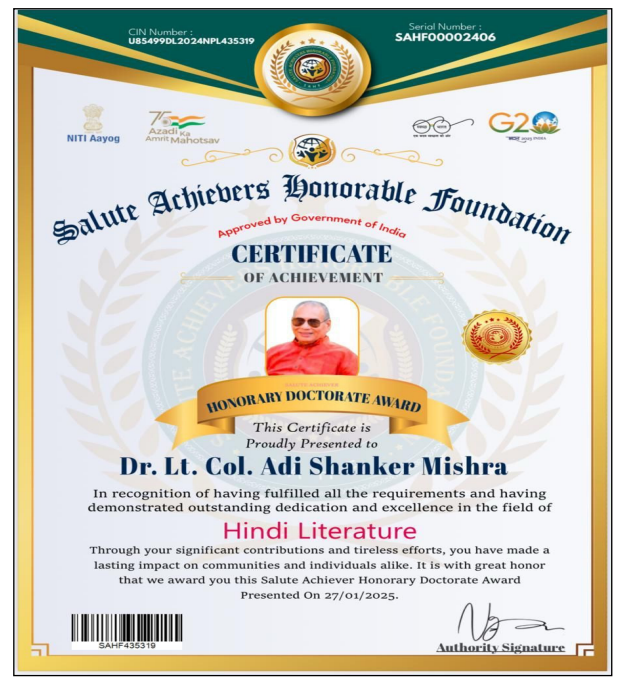

कायस्थ समाज की भूमिकाष्विषय पर संगोष्ठी का आयोजन

लखनऊ। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के प्रदेश अध्यक्ष पूर्वी शेखर कुमार के नेतृत्व मेंष्वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में कायस्थ समाज की भूमिका विषय पर संगोष्ठी का आयोजन होटल जयति ओएसिस इन, इन्दिरा नगर लखनऊ में आयोजित हुई, कायस्थ समाज की दिन प्रतिदिन राजनीतिक हिस्सेदारी में राजनीतिक पार्टियों द्वारा उदासीनता, टिकट बटवारे में नजरंदाज करना व निरंतर गिरावट से समाज में जबर्दस्त आक्रोश व्याप्त है इसी सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए बैठक में वर्ष 2026 व 2027 में सम्भावित होने वाले स्नातक, पंचायत, नगर निगम, विधानसभा चुनाव होना सम्भावित है और इन्हीं विषयों पर लगभग सभी संगठनों, समितियों के सम्मानित पदाधिकारियों व कायस्थ परिवार के सदस्यों में मुनेन्द्र श्रीवास्तव, आनन्द प्रकाश श्रीवास्तव, आलोक भटनागर, शशी कान्त श्रीवास्तव, आनन्द श्रीवास्तव, विजय निगम, अतुल श्रीवास्तव, एस के श्रीवास्तव, बिन्दु श्रीवास्तव, सहित काफी संख्या में विभिन्न सामाजिक संगठन क्षेत्रों के सम्मानित विभूतियों ने चर्चा में इन्हीं विषयों पर विस्तृत चर्चा करते हुए अपने अपने विचारों का आदान-प्रदान किया।

मिल्कीपुर उपचुनाव पर बोले केशव प्रसाद मौर्य, सपा की जमानत जब्त होने जा रही

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने मगंलवार को मीडिया से बता करते मिल्कीपुर उपचुनाव को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि सपा के फर्जी पीडीए की हवा निकल गई है। अभी 9 सीटों पर उपचुनाव हुआ था। भाजपा 7 सीटें जीत गई है। और वे 2 पर सिमट गए और मिल्कीपुर में समाजवादी पार्टी की जमानत जब्त होने जा रही है। बुधवार 29 जनवरी को मौनी अमावस्या के दिन महाकुंभ 2025 के दूसरे अमृत स्नान पर उन्होंने कहा, सभी व्यवस्थाएं चुस्त-दुरुस्त हैं। सभी श्रद्धालुओं के स्वागत के लिए प्रयागराज तैयार है। सरकार और प्रशासन भी पूरी तरह चुस्त-दुरुस्त होकर काम कर रहे हैं। आस्था की डुबकी लगाने आ रहे श्रद्धालुओं का स्वागत है।

मौ0 तगासराय में डूडा विभाग द्वारा कराए गए कार्यों का किया गया औचक निरीक्षण: सीडीओ

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। मंगलवार को हापुड़ मुख्य विकास अधिकारी हापुड़ द्वारा विकास खण्ड धौलाना के अन्तर्गत सिंचाई विभाग बुलन्दशहर खण्ड के कार्यक्षेत्र में जनपद हापुड से सम्बन्धित चलित परियोजनओं का भौतिक सत्यापन किया गया। सत्यापन के समय भूपेन्द्र कुमार सहायक अभियन्ता बुलन्दशहर खण्ड एवं अवर अभियन्ता उपस्थि रहें,रजवाहा नूरपुर के कि0मी0 1.160 पर निर्मित पुल एवं रजवाहो का पुर्ननिर्माण कार्य में फिनिसिंग के निर्देश दिए गए। रजवाहा नूरपुर पर पक्की सडक एवं इन्टरलोकिंग का कराए गए निर्माण कार्य संतोषजनक नहीं पाया गया जिस पर नाराजगी व्यक्त करते हुए मौके पर उर्पास्थित सहायक अभियन्ता को कार्य को ठीक कराने एवं भुगतान कार्य ठीक व पूर्ण होने के उपरान्त करने के निर्देश दिए गए। इसके अतिरिक्ति नगर पालिका परिषद हापुड़ के वार्ड संख्या-25 मौ0 तगासराय में मुख्यमंत्री अल्प विकसित मलीन बस्ती डूडा हापुड द्वारा कराए गए कार्यो का निरीक्षण किया गया तथा मौके पर उपस्थित सहायक अभियन्ता को आवश्यक निर्देश दिए गए।

फार्मर आईडी के लिये भटक रहे फार्मर, नही पायेंगे सम्मान निधि

कही सर्वर प्रॉब्लम, कही खतौनी और आधार कार्ड में मामूली अंतर

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। पूरे देश में किसान हित में कई सरकारी योजनाओ का संचालन किया जा रहा है। इन योजनाओं का लाभ किसानों को आसानी से मिल सके इसके लिए सरकार द्वारा किसानों की फार्मर आईडी बनाई जा रही है। उद्देश्य भले ही नेक है लेकिन फार्मर आईडी बनवाना किसानों के लिए बड़ा ही कठिन काम साबित हो रहा है।

जन सेवा केंद्र से लेकर तहसील के कर्मचारियों के चक्कर लगाते लगाते परेशान हैं, ऊपर से अंतिम तारीख का ऐलान। तमाम किसान पात्र होने के बावजूद अपनी किसान सम्मान निधि गंवा बैठेंगे,यह आशंका सम्बंधित किसानों को सता रही है। दिन में जन सेवा केन्द्र और रात में अपने मोबाइल पर फार्मर आईडी बनाने खातिर आंख गड़ाए रहते हैं और नतीजा शिफर।पहली बार होगा कि पात्र अपात्र दर्ज हो जायेंगे। कृषि और राजस्व महकमे सीधे किसानों से जुड़े हैं, उनके ही पास असल दस्तावेज और वेरिफिकेशन के अधिकार है। किसानों ने केवाईसी करा रखा है, आधार और मोबाइल नंबर भी लिंक कराया है।उन्हें केसीसी बैंक ने जारी कर रखे हैं। जाहिर है, उनके भूमि सम्बन्धी दस्तावेज वेरिफाइड हैं और उनकी भूमि बैंक में बंधक है।इतना सब होने के बावजूद किसानों को आखिर इधर उधर दौड़ने के लिए मजबूर करना काश्तकारों को अखर रहा है। यह समस्या किसी एक गांव,एक जिले या फिर एक सूबे की नही बल्कि समूचे देश की है।हर जगह सर्वर डाउन होने का रोना रोया जा रहा है। किसान तो सर्वर प्रॉब्लम ठीक करने की कूबत रखता नही।राष्ट्रीय जनता दल के वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष रविन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि किसानों की हितैषी सरकार वो मानी जाती है जो उन्हें उनके घर पर खुद सरकारी अहलकारों को भेज उनकी समस्या का निदान करे। लेखपाल के पास किसान का पूरा लेखा जोखा होता है, इतना ही नही वो अपने हल्के के किसान से बखूबी वाकिफभी होता है। जिला कृषि अधिकारी और कलेक्टर चाहे तो किसान को भटकना नही पड़ेगा। प्रधानमंत्री और केंद्रीय कृषि मंत्री से किसान आस लगाये हैं कि वो किसानों की मदद खातिर 2018 में शुरू की गई किसान सम्मान निधि को लेकर किसानों को सहूलियत प्रदान करते हुए किसी कृषक की निधि की किश्त रोकी न जाये।असलियत में पीएम किसान सम्मान निधि योजना का लाभ लेने वाले किसानों के लिए फार्मर आईडी बनवाना अनिवार्य कर दिया गया है। ऐसे में जिन किसानों की फार्मर आईडी नहीं बनेगी उन्हें प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की अगली किस्त यानि की 19वीं किस्त नहीं मिलेगी।किसानों को किसी भी सरकारी योजना का लाभ वन क्लिक में मिल जाए इस हेतु किसानों की आईडी बनवाई जा रही है। आईडी बनी होने से वास्तविक किसानों का डाटा सरकार के पास रहेगा। कार्ड बनने के बाद किसान का एक यूनिक आईडी नंबर जनरेट होगा जिसमें हर खातेदार का खसरा, हिस्सा, मोबाइल नंबर, आधार संख्या, ई-केवाईसी विवरण रहेगा तथा भू-अभिलेख में परिवर्तन होने पर पोर्टल पर जानकारी स्वत: अपडेट हो जाएगी।किसानों की फार्मर आईडी बन जाने से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि सहित केंद्र सरकार की 6 योजनाओं के लिए अलग- अलग चक्कर नहीं लगाना होगा।

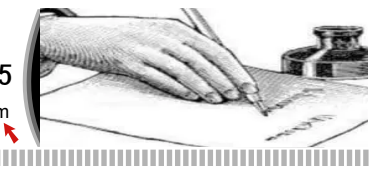

सम्पादकीय

महू से संविधान-रक्षा की निर्णायक लड़ाई

अपनी पहली चुनावी लड़ाई में इंडिया अलायंस ने एनडीए पर बनाई बढ़तनई पेंशन या नहीं पेंशन-हंगामा है यूं बरपा! मध्यप्रदेश के इंदौर के निकट स्थित बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की जन्मस्थली महू से कांग्रेस ने संविधान की रक्षा की निर्णायक लड़ाई छेड़ दी, जब सोमवार को आयोजित एक विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने देश की मौजूदा राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों का व्यापक चित्रण करते हुए चेताया कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार दलितों, आदिवासियों, एवं कमजोर वर्गों के हक को मार रही है। वंचितों के लिये संविधान के महत्व को समझाते हुए राहुल ने बतलाया कि जिस दिन देश का संविधान खत्म हो जायेगा उस दिन इन वर्गों के लिये कुछ भी नहीं बचेगा। वैसे तो कांग्रेस ने सामाजिक न्याय की लड़ाई पिछले कुछ समय से कई-कई मोर्चों पर और अनेक स्वरूपों में छेड़ रखी है, लेकिन महू की सभा में राहुल ने जिस स्पष्टता व व्यापकता से संविधान की अहमियत प्रतिपादित की तथा उस पर छाये संकटों का ब्यौरा दिया, उसके चलते उम्मीद की जा सकती है कि कांग्रेस का संदेश इन वर्गों तक ही नहीं वरन समग्र समाज तथा देश को समझ में आयेगा कि किस प्रकार से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी संविधान को समाप्त कर लोक अधिकारों का सम्पूर्ण खात्मा करना चाहती है। इस सभा में जय बापू जय भीम जय संविधान का जो नारा दिया गया है वह कोई रातों-रात गढ़ा गया अथवा एकाएक सोची गयी थीम न होकर एक वैचारिक प्रक्रिया से निकली हुई यह सोद्देश्य लड़ाई है। याद हो कि राहुल ने 7 सितम्बर, 2022 को कन्याकुमारी से लगभग चार हजार किलोमीटर का दक्षिण से उत्तर की ओर पैदल मार्च किया था और जिसका समापन कश्मीर के श्रीनगर में 30 जनवरी, 2023 को हुआ था, उसे श्भारत जोड़ो यात्राश् का नाम दिया गया था। वह देश में नफ्रत के खिलाफमोहब्बत की यात्रा थी। साम्प्रदायिक सौहार्द्र के लिये निकली उस यात्रा के दौरान अनेक मुद्दों पर राहुल चर्चा करते दिखे जिसमें यह तथ्य सामने आया कि भाजपा एवं उसकी मातृ संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक खास एजेंडे के तहत देश में ऐसा माहौल बना रही है। एक ओर तो वह हिन्दू-मुस्लिमों को लड़ा रही है तो वहीं वह दूसरी ओर अगड़ों-पिछड़ों के बीच खाई को चौड़ा करने के बड़े षडयंत्र और कुचक्र रच रही है। जैसे-जैसे यह यात्रा बढ़ी तो लोगों को यह बात स्पष्ट होने लगी कि इसके पीछे का असली खेल देश के सारे संसाधन मुट्ठी भर कारोबारियों को सौंप देने का है।

लाभकारी सार्वजनिक उपक्रम दो बड़े व्यवसायियों के हाथों में देने के दुष्परिणाम ये हैं कि देश में गरीबी, बेकारी और बेहाली छाई है। शिक्षा व स्वास्थ्य सहित सारे जनहित के कार्य ठप पड़े हैं और धर्म व जाति के जरिये भाजपा केवल ध्रुवीकरण में व्यस्त है। विपक्षी दलों सहित सभी तरह की विरोध व असहमतियों की आवाजों को सरकार दबा रही है। आर्थिक शक्तियों पर आधिपत्य करने के लिये भाजपा व उसकी केन्द्र सरकार राजनीतिक ताकत को अपनी मुट्ठी में ले चुकी है। यह कार्य आसानी से करने के लिये ही उसने सामाजिक ताने-बाने को ध्वस्त कर दिया है। इसलिये जब राहुल गांधी ने उस यात्रा का सीक्वल हाई ब्रीड (पैदल व वाहन के जरिये) के रूप में मणिपुर से 14 जनवरी, 2024 से प्रारम्भ कर दो माह बाद मुम्बई में समाप्त किया, तो उसे भारत जोड़ो न्याय यात्रा नाम दिया गया जो समय की आवश्यकता एवं समय के अनुरूप ही था। सामाजिक सौहार्द्र की लड़ाई को कांग्रेस ने केवल सामाजिक ही नहीं, बल्कि राजनीतिक व आर्थिक न्याय की लड़ाई के रूप में भी बड़ा विस्तार दिया। लोकसभा के लिये पिछले साल के मध्य में हुए चुनाव में भाजपा ने जो 400 पार का नारा दिया था उससे एक तरह से संविधान को पहला बड़ा और साफ खतरा उभरकर आया। वैसे तो पहले से यह दिख रहा था कि भाजपा व संघ की पसंद भारत का संविधान नहीं वरन मध्ययुगीन संहिता मनुस्मृति है। कई मौकों पर वह संविधान को कोसती आई थी। उसके कई नेता तथा चुनावी प्रत्याशी उसे बदलने की मंशा जतला चुके थे। वे यह कहकर वोट मांग रहे थे कि मोदी को 400 सीटें चाहिये क्योंकि संविधान को बदलना है। इस बात को कांग्रेस व उसके नेतृत्व में बने प्रतिपक्षी गठबन्धन इंडिया के साथ जनता ने भांप लिया जिसके कारण भाजपा की सीटें इतनी घट गयीं कि मोदी को तेलुगु देसम पार्टी व जनता दल यूनाइटेड के समर्थन से सरकार बनानी पड़ी। वैसे तो आरोप हैं कि तकरीबन 80 सीटों पर ईवीएम के जरिये हेर-फेर हुआ है। बहरहाल, भाजपा के मंसूबे ध्वस्त होने का परिणाम यह हुआय और भाजपा को संविधान की ताकत का एहसास भी हो गया कि उसे संविधान के आगे सिर झुकाना पड़ा। फ्रि भी, भाजपा-संघ की संविधान के प्रति वास्तविक श्रद्धा तो कभी थी ही नहींय जो थी वह अस्थायी व कृत्रिम थी। अवसर आने पर उसकी कलई खुलती गयी। राज्यसभा में केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा विपक्षी सदस्यों पर यह कहकर तंज कसना कि, अंबेडकर का नाम लेना फैशन हो गया है..., यह बतलाने के लिये काफी था कि भाजपा व संघ संविधान निर्माता का कितना सम्मान करते हैं। दूसरी तरफमोहन भागवत ने हाल ही में यह बयान दिया था कि च्देश को असली आजादी 22 जनवरी, 2024 को मिली है।श् उनका आशय अयोध्या में राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा से था।

गणतंत्र /75: कुछ इशारे!

राजेन्द्र शर्मा

> फ्रि भी राष्ट्रपति को अपनी ओर से कुछ नया तर्क जोड़ेना ही चाहिए, इस तरह की मांग को तो शायद ज्यादती भी कहा जा सकता है, हालांकि ऐसा होना इस नारे के पक्ष में तर्कों के सतहीपन को जरूर दिखाता है। खैर! असली बात यह है कि हमारी संवैधानिक व्यवस्था में राष्ट्रपति का पद, श्अपनी सरकारश् के श्परामर्शश् से जिस तरह बंधा हुआ है, उसे देखते हुए राष्ट्रपति के अपनी सरकार के किसी फैसले का बचाव करने को किसी भी तरह से गलत नहीं कहा जा सकता है। जहां तक एक देश एक चुनाव के प्रोजेक्ट का सवाल है, उस पर राष्ट्रपति मुर्मू की सरकार अंततः अपने अनुमोदन की मोहर ही नहीं लगा चुकी है, वह दो विधेयकों के रूप में इससे संबंधित संशोधन प्रस्तावों को पिछले ही सत्र में संसद में पेश भी कर चुकी है। और इन विधेयकों को और विचार के लिए, संयुक्त संसदीय समिति के सामने भेजा भी जा चुका है।

बेढब तो है, पर हैरान नहीं करता है कि गणतंत्र की पूर्व-संध्या पर अपने परंपरागत संबोधन में राष्ट्रपति मुर्मू ने श्एक देश, एक चुनावश् का जी भरकर गुणगान किया। उन्होंने इसे अपनी सरकार का श्साहसपूर्ण दूरदर्शिताश् का प्रयास ही करार नहीं दिया, यह दावा भी किया कि इससे सुशासन को नये आयाम दिए जा सकते हैं। राष्ट्रपति ने इस दूरदर्शी साहस के लाभों का बखान करते हुए कहा कि एक देश एक चुनाव की व्यवस्था से शासन में निरंतरता को बढ़ावा मिल सकता है, नीति निर्धारण से जुड़ी निष्क्रियता समाप्त की जा सकती है, संसाधनों के अन्यत्र खर्च हो जाने की संभावना कम हो सकती है तथा वित्तीय बोझ को कम किया जा सकता है। इसके अलावा जनहित में अनेक अन्य लाभ हो सकते हैं। यहां हम एक देश, एक चुनावश् के प्रोजेक्ट के गुण-दोष की बात नहीं कर रहे हैं। यह दूसरी बात है कि राष्ट्रपति के इस प्रोजेक्ट के गुणों के बखान में एक भी ऐसे तर्क का न होना थोड़ा निराश तो जरूर करता है, जो तर्क इस नारे के उछाले जाने के बाद से इसके पक्ष में पहले ही नहीं सुना जा चुका हो। तमाम चुनाव एक साथ कराए जाने से संसाधनों की बचत, नीति निर्धारण में चुनाव संबंधी पाबंदियों के चलते पड़ने वाली बाधाओं से उबरना, शासन में निरंतरता में बढ़ोतरी, आदि सब वही तर्क हैं जो बिना किसी ठोस साक्ष्य के और वास्तव में बिना किसी ठोस तर्क के भी, इतनी बार दोहराए गए हैं कि सुन-सुनकर कान पक गए हैं।

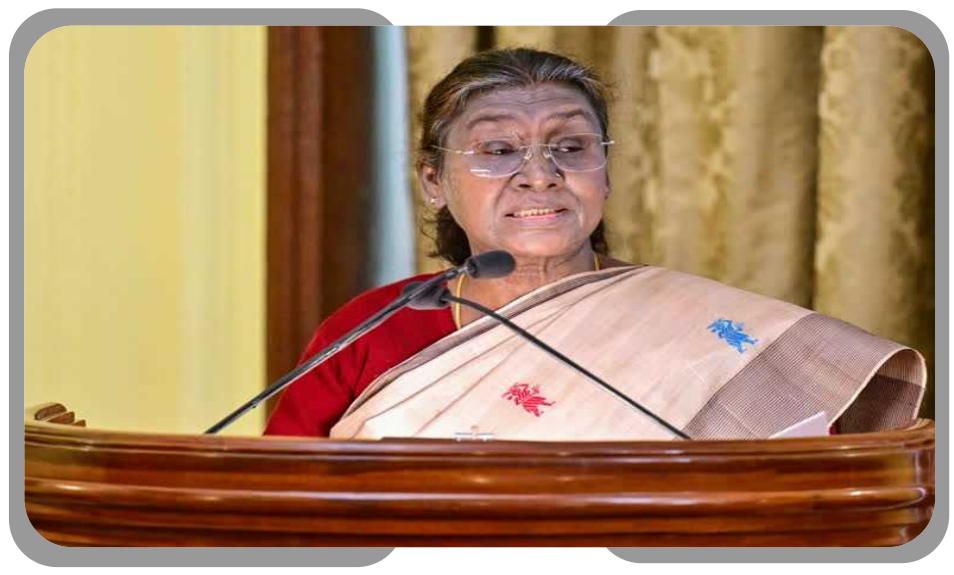

फ्रि भी राष्ट्रपति को अपनी ओर से कुछ नया तर्क जोड़ेना ही चाहिए, इस तरह की मांग को तो शायद ज्यादती भी कहा जा सकता है, हालांकि ऐसा होना इस नारे के पक्ष में तर्कों के सतहीपन को जरूर दिखाता है। खैर! असली बात यह है कि हमारी संवैधानिक व्यवस्था में राष्ट्रपति का पद, श्अपनी सरकारश् के श्परामर्शश् से जिस तरह बंधा हुआ है, उसे देखते हुए राष्ट्रपति के अपनी सरकार के किसी फैसले का बचाव करने को किसी भी तरह से गलत नहीं कहा जा सकता है। जहां तक एक देश एक चुनाव के प्रोजेक्ट का सवाल है, उस पर राष्ट्रपति मुर्मू की सरकार अंततः अपने अनुमोदन की मोहर ही नहीं लगा चुकी है, वह दो विधेयकों के रूप में इससे संबंधित संशोधन प्रस्तावों को पिछले ही सत्र में संसद में पेश भी कर चुकी है। और इन विधेयकों को और विचार के लिए, संयुक्त संसदीय समिति के सामने भेजा भी जा चुका है। फ्रि भी, राष्ट्रपति द्वारा एक देश एक चुनाव का जोर-शोर से ढोल पीटे जाने में कानूनी व्यवस्थाओं के तकनीकी पहलू से चाहे कुछ भी गलत नहीं हो, फ्रि भी संवैधानिक नैतिकता के पहलू से इसके समस्यापूर्ण होने से इंकार नहीं किया जा सकता है। अव्वल तो यह सरकार के एक ऐसे फैसले का राष्ट्रपति द्वारा ढोल पीटे जाने का मामला है, जिस पर देश तथा जनमत के पूरी तरह से बंटे होने से किसी भी तरह से इंकार नहीं किया जा सकता है। पूर्व-राष्ट्रपति की अध्यक्षता में गठित उच्चाधिकार-प्राप्त समिति के अंततरू अपनी सिफ्रिशें देने से पहले उसे उक्त प्रस्ताव के पक्ष और विपक्ष में देश की जितनी राजनीतिक पार्टियों की राय मिली थी, उस पर एक नजर भर डालने से ही, इस मुद्दे पर जनमत के गंभीर रूप से विभाजित होने का सच सामने आ जाता है। वास्तव में यह सच भी किसी से छुपा हुआ नहीं है कि इस परियोजना के पीछे मुख्य संचालक, सत्ताधारी भाजपा ही है, हालांकि उसके लिए अपने सहयोगी दलों को घेर-बटोरकर इस प्रोजेक्ट के पक्ष में

करना भी मुश्किल नहीं हुआ है। सच तो यह है कि साथ-साथ चुनाव संबंधी विधेयकों का विचार के लिए संयुक्त संसदीय समिति को भेजा जाना भी, इस मामले पर विचारों की व्यापक भिन्नता को ही दिखाता है। यह संयोग ही नहीं है कि मोदी के तीसरे कार्यकाल में यह दूसरा ही मौका है, जब किसी विधेयक को विस्तृत विचार-विमर्श के लिए संयुक्त संसदीय समिति को भेजा गया है। इस सिलसिले में यह याद दिलाना भी अप्रासंगिक नहीं होगा कि इस प्रोजेक्ट को अमल में लाने के लिए किए प्रस्तावित संशोधनों में, कई संविधान संशोधन भी शामिल हैं। दूसरे शब्दों में यह ऐसा प्रस्ताव है, जो वर्तमान रूप में संविधान की व्यवस्थाओं के खिलाफ जाता है। ऐसे मामले में राष्ट्रपति के सरकार के फैसले के अनुमोदन के लिए दौड़ पड़ने की जल्दबाजी कम से कम बेढब तो जरूर ही कही जाएगी। हालांकि, इस संभावना को काल्पनिक ही कहा जाएगा, फ्रि भी बहस के लिए अगर हम यह मान लें कि संसद के सामने विचाराधीन संशोधन, विफ्ल हो जाते हैं, तो एक देश एक चुनाव की राष्ट्रपति की इस जोरदार पैरवी का क्या होगा? याद रहे कि इस पैकेज में शामिल संविधान संशोधन के प्रस्तावों का, संसद के दोनों सदनों में दो-तिहाई बहुमत से पारित होना, वैसे भी बहुत मुश्किल है। साफ है कि राष्ट्रपति हर एक लिहाज समस्यापूर्ण परियोजना के साथ अपना नाम जोड़ने की हड़बड़ी दिखा रही थीं। वह भी तब जबकि यह गणतंत्र दिवस की पूर्व-संध्या में राष्ट्रपति के परंपरागत किंतु समारोही संबोधन का मामला था। कम से कम ऐसे संबोधन में राष्ट्रपति के अक्षरशः अपनी सरकार के लिखे को पढ़ने की मजबूरी नहीं होनी चाहिए। कम से कम नकारात्मक विवेक का उपयोग कर, राष्ट्रपति सरकार के विशेष रूप से ऐसे विवादास्पद तथा संसदीय प्रक्रियाधीन प्रोजेक्ट का ढोल पीटने से तो खुद को अलग रख ही सकती थीं। बेशक, राष्ट्रपति के इस अभिभाषण में एक यही चीज विवादास्पद नहीं थी। अपने संबोधन में राष्ट्रपति ने अपनी सरकार की गरीबी तथा भुखमरी से देश और लोगों को उबारने की श्उपलब्धियोंश् के अतिरंजित दावे तो किए ही, इसके साथ ही उन्होंने तथाकथित औपनिवेशिक मानसिकता के अवशेषों से उबरने के प्रयास के रूप में तीन नयी फौजदारी संहिताओं का भी जिक्र किया। और इस सब के ऊपर से कुंभ के आयोजन के बहाने से इसका भी दावा किया कि श्हमारी सांस्कृतिक विरासत के साथ हमारा जुड़ाव और अधिक गहरा हुआ है। राष्ट्रपति के इन सभी दावों पर विवाद हो सकता है। लेकिन, गणतंत्र दिवस के समारोही मौके पर कम से कम श्एक देश, एक चुनावश् के कर्कश विवाद में न पड़ने का विवेक राष्ट्रपति को और उन्हें इस विवाद में न धकेलने का विवेक मोदी सरकार को दिखाना चाहिए था। लेकिन, दोनों ने ही ऐसे विवेक का प्रदर्शन नहीं किया, जो अपने 75 वर्ष पूरे करने के मौके पर भारतीय गणराज्य की दशा-दिशा की ओर एक कठोर इशारा है। वास्तव में ऐसा ही एक और इशारा खुद भारतीय गणतंत्र के 75साल पूरे होने को लेकर किया गया है। स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने को लेकर जैसा समारोही जोश शासन में दिखाई दिया था, उसका सौवां हिस्सा भी गणतंत्र के 75 वर्ष पूरे होने को लेकर नहीं दिखाई दिया।

मनरेगा की विसंगति

इसमें दो राय नहीं कि ग्रामीण क्षेत्रों में दृश्य व अदृश्य बेरोजगारी में कमी लाने में महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना यानी मनरेगा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस योजना ने जहां एक ओर ग्रामीण उपभोक्ताओं को अपने गांव के पास रोजगार दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है, वहीं अंतर्राज्यीय प्रवास को कम किया है। साथ ही ग्रामीण उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति भी बढ़ी है। काम की तलाश में शहरों को जाने वाले श्रमिकों की संख्या में कमी के भी आंकड़े सामने आए हैं। खासकर कोरोना संकट में जब ग्रामीण महानगरों से पलायन करके बड़ी संख्या में गांव की तरफलौटे तो इस योजना ने जीवनदायिनी भूमिका निभाई है। लेकिन फ्लिहाल ग्रामीण आजीविका के लिये जीवन रेखा कही जाने वाली महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना एक बार फ्रि धन की कमी से जूझ रही है। ऐसा लगता है कि कांग्रेस शासन में शुरू की गई मनरेगा योजना राजग सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल नहीं है। वार्षिक वित्तीय संकट से जूझ रही मनरेगा योजना के लिए केंद्र सरकार ने वर्ष 2024-25 में 86,000 करोड़ रुपये आवंटित किए थे। इसके बावजूद 4,315 करोड़ मूल्य का वेतन भुगतान लंबित है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2023-24 में इस योजना के केवल छह माह में ही 6,146 करोड़ का घाटा हुआ था। इसी तरह वर्ष 2022-23 में 89,400 करोड़ का संशोधित धनराशि का आवंटन मूल बजट से 33 प्रतिशत अधिक था। निस्संदेह, ग्रामीण श्रमिकों के लिये लायी गई मनरेगा योजना की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिये वार्षिक राशि आवंटन को लेकर सवाल उठने स्वाभाविक हैं। जो केंद्र सरकार की वित्तपोषण की प्राथमिकताओं को लेकर कई प्रासंगिक प्रश्न उठाती है। इस योजना के क्रियान्वयन में वित्तीय तंगी तंत्र की विसंगितयों को ही दर्शाती है। वहीं कांग्रेस ने मनरेगा के अंतर्गत मजदूरी को बढ़ाकर 400 रुपये प्रतिदिन करने की मांग की है। निस्संदेह, यह मांग महंगाई के बीच एक स्थायी समाधान के बजाय एक राजनीतिक दृष्टिकोण को ही दर्शाती है। निस्संदेह, कांग्रेस की यह मांग राजनीतिक लाभ के लिये एक लोकप्रिय कदम तो हो सकता है, मगर यह योजना की मूल समस्या के कारकों को संबोधित करने में विफ्ल रहती है। मौजूदा वक्त में प्राथमिकता समय पर पर्याप्त धन आवंटन करने तथा प्रणालीगत विसंगतियों को दूर करना होनी चाहिए। दरअसल, भुगतान के लिये अपनायी गई प्रणाली से श्रमिकों को भुगतान में परेशानी आती रही है। आधार कार्ड आधारित भुगतान की ब्रिज प्रणाली और राष्ट्रीय मोबाइल निगरानी प्रणाली जैसे तकनीकी कारकों ने भुगतान की उलझनों को बढ़ाया है। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की कनेक्टिविटी की बाधाओं और आधार सत्यापन की आवश्यकताओं के कारण बड़े पैमाने पर जॉब कार्ड हटाए गए हैं। यही वजह है कि अनेक कारणों के चलते वर्ष 2022 में करीब नौ करोड़ श्रमिकों ने इस योजना तक अपनी पहुंच खो दी है। हालांकि, इस प्रणाली को पारदर्शिता बढ़ाने के उपायों के रूप में प्रचारित किया गया। लेकिन ये कदम लाखों श्रमिकों के लिये आजीविका के मार्ग में बाधा बन गए। उल्लेखनीय है कि मनरेगा को ग्रामीण परिवारों के लिये आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये एक मांग संचालित योजना के रूप में तैयार किया गया था। निस्संदेह, मनरेगा ने ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी के संकट को ही उजागर किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती काम की मांग और शहरी क्षेत्रों में नौकरियों की कमी के संकेत लगातार मिलते रहे हैं। निस्संदेह, गांवों में गरीबी उन्मूलन में मनरेगा के योगदान को कम करके नहीं आंका जा सकता। आसन्न बजट में इस योजना से जुड़ी विसंगतियों को दूर करने के लिये गंभीर प्रयास की जरूरत है। सरकार को मनरेगा के लिये एक व्यावहारिक बजट बनाना चाहिए। साथ ही योजना के पारदर्शी क्रियान्वयन के लिये प्रशासनिक बाधाओं को दूर करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। निर्विवाद रूप से मनरेगा में मांग के अनुपात में धन का आवंटन लगातार कम हो रहा है। यही वजह है कि फंड की कमी के चलते वर्ष के मध्य में अनुमानित संकट पैदा हो रहा है। जो नीति नियंताओं के इसके क्रियान्वयन के संरचनात्मक अंतर को दर्शाता है। निस्संदेह, इस नीतिगत विसंगति को दूर किया जाना चाहिए।

अंतरिम सरकार के तहत बांग्लादेश में पाकिस्तान समर्थक लहर

आशीष विश्वास

> बाद के दशकों में कभी-कभार तनाव के बावजूद, वे मोटे तौर पर भारत के साथ जुड़े रहे - कुछ महीने पहले तक। अपनी आजादी हासिल करने के लिए, उन्होंने क्रूर पाकिस्तानी सेना के खिलाफसंघर्ष करते हुए जान गंवाने के रूप में बहुत बड़ी कीमत चुकाई। अब अचानक, 2025 में, डॉ. मोहम्मद यूनुस और उनकी टीम के नेतृत्व में कुछ बांग्लादेशियों ने फैसला किया है कि एक बार फ्रि से, वे पाकिस्तानियों के साथ रहना बेहतर समझेंगे! 5 अगस्त 2024 को अवामी लीग (एएल) के खिलाफतख्तापलट के बाद, अचानक, भारत दक्षिण एशिया में आधिकारिक बांग्लादेशी राजनीतिक आख्यान में नया बांग्लादेशी विरोधी खलनायक बनकर उभरा है। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है।

बांग्लादेश मेंअर्थशास्त्री मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व में अनिर्वाचित अंतरिम शासकों का एक समूह पाकिस्तान के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए बेताब है। उस पाकिस्तान से जिससे उनका देश केवल पांच दशक पहले हिंसक तरीके से अलग हुआ था। अपने स्वयं के (तत्कालिक) इतिहास के एक अजीब उलटफेर में, बांग्लादेशियों ने दक्षिण एशिया में एक स्वतंत्र, सम्प्रभु देश के रूप में अस्तित्व में रहने और कार्य करने में स्पष्ट रूप से असमर्थता दिखाई है। तथ्यों पर गौर करें 1947 में बांग्लादेशियों को, पूर्व पाकिस्तानी होने के नाते, इस्लामी गणराज्य के पूर्वी हिस्से में गरीब, तीसरे दर्जे का नागरिक माना जाता था। अपने शोषण से तंग आकर, उन्होंने 1970-71 में पाकिस्तान को पूरी तरह से खारिज करते हुए अलग होने का फैसला किया।

बाद के दशकों में कभी-कभार तनाव के बावजूद, वे मोटे तौर पर भारत के साथ जुड़े रहे - कुछ महीने पहले तक। अपनी आजादी हासिल करने के लिए, उन्होंने क्रूर पाकिस्तानी सेना के खिलाफसंघर्ष करते हुए जान गंवाने के रूप में बहुत बड़ी कीमत चुकाई। अब अचानक, 2025 में, डॉ. मोहम्मद यूनुस और उनकी टीम के नेतृत्व में कुछ बांग्लादेशियों ने फैसला किया है कि एक बार फ्रि से, वे पाकिस्तानियों के साथ रहना बेहतर समझेंगे! 5 अगस्त 2024 को अवामी लीग (एएल) के खिलाफ तख्तापलट के बाद, अचानक, भारत दक्षिण एशिया में आधिकारिक बांग्लादेशी राजनीतिक आख्यान में नया बांग्लादेशी विरोधी खलनायक बनकर उभरा है। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि भारत

और यहां तक कि गैर-निवासी भारतीय जिनका भारत सरकार से कोई संबंध नहीं है, बांग्लादेश को परेशान करने वाली कई प्रणालीगत समस्याओं के लिए आलोचना का शिकार हो रहे हैं। इनमें द्विपक्षीय सौदों में बड़े व्यापार अंतर से लेकर अंतरराष्ट्रीय नदियों का सूखना और यहां तक कि आईएमएफऔर विश्व बैंक के साथ अपने व्यवहार में बांग्लादेश के खिलाफदबाव शामिल हैं! भारत विरोधी गुस्से के विस्फोट के लिए जो भी कारण हो, यूनुस के नेतृत्व वाले प्रशासन ने हाल ही में पाकिस्तान की शक्तिशाली खुफ्यिा एजेंसी आईएसआई के प्रमुख की बांग्लादेश की विवादास्पद यात्रा को प्रायोजित किया, जिसकी प्रतिष्ठा बहुत अच्छी नहीं है। भारत-बांग्लादेश संबंधों में मौजूदा ठंड को देखते हुए, अधिकांश ढाका-आधारित टिप्पणीकारोंध्विश्लेषकों ने ढाका द्वारा दिल्ली को भेजे जा रहे मजबूत, अमित्र संकेतों पर टिप्पणी की है। आईएसआई का यह दौरा ढाका में पहले ही बहुत धूमधाम से घोषित किये जा चुके कुछ अन्य कदमों के मद्देनजर हुआ है। बांग्लादेश का कार्यवाहक शासन पाकिस्तान में शाहबाज शरीफके नेतृत्व वाली सरकार से दोस्ती करने की जल्दी में है। इसने पाकिस्तानी आगंतुकों के लिए वीजा नियमों में पहले ही ढील दे दी है और उर्दू के प्रचार के लिए बांग्लादेश में और अधिक पाठ्यक्रमों की व्यवस्था कर रहा है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान और गठजोड़ को प्रोत्साहित किया जा रहा है। नयी पाठ्य पुस्तकें, जिनमें दिवंगत शेख मुजीबुर रहमान, ताजुद्दीन अहमद या यहां तक कि जियाउर रहमान द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन में निभाई गई भूमिका को शामिल नहीं किया गया है, छात्रों के बीच वितरित की जा रही हैं। रिपोर्टों के अनुसार, स्वाभाविक रूप से बांग्लादेश के स्वतंत्रता संग्राम में भारत की सहायक भूमिका और योगदान, रहमान की अवामी लीग को उसका समर्थन, भारत-पाक युद्ध के दौरान कम से कम 10,000 भारतीय सैनिकों की शहादत को कम महत्व दिया गया है।

संक्षेप में, अपने उतार-चढ़ाव भरे अस्तित्व के पहले पांच दशकों के भीतर, बांग्लादेश को पूरी तरह से अघोषित श्अधिकारियोंश् के एक समूह द्वारा अपने स्वयं के बहुत ही संक्षिप्त इतिहास को फ्रि से लिखने- और यहां तक कि उसे गलत साबित करने- के लिए मजबूर किया गया है। ऐसा तो पूर्व जनरल इरशाद के कार्यकाल में भी नहीं हुआ था, जिन्होंने देश में आभासी सैन्य शासन का दौर चलाया था। विश्लेषकों को यह चिंताजनक लगता है कि बांग्लादेश के वर्तमान श्अधिकारीश् जो संवैधानिक रूप से किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं हैं, अपने घरेलू कट्टरपंथी इस्लामवादी लॉबी को खुश करने के लिए अपने समकालीन इतिहास के सुप्रलेखित स्थापित तथ्यों को विकृत करने या दबाने से पीछे नहीं हटे हैं। यह जमाती समर्थक ताकतों का वह वर्ग है जो हमेशा पाकिस्तान के करीब रहा है, जो बांग्लादेश में उभरने वाले एक सख्त, शरीयत-प्रधान व्यवस्था के सपने संजोये हुए है। अगर भारत में प्रभावशाली वर्ग इस बात से परेशान हैं, तो यह बहुत बुरा है- उन्हें नये बांग्लादेश से निपटना होगा। यही अब तक यूनुस और उनकी टीम द्वारा ढाका से निकलने वाला व्यापक संदेश है। सच्चाई कुछ अलग है, और अप्रिय भी। अपने क्षेत्रीय पड़ोसियों भारत, पाकिस्तान, और चीन - से सम्बंध के मामले में वर्तमान बांग्लादेश सरकार का रवैया दक्षिण एशिया के अन्य देशों नेपाल या श्रीलंका से बिल्कुल भिन्न है।

12 साल बाद रणजी में वापसी

फॉर्म में लौटने को बेताब हैं विराट कोहली, ट्रेनिंग के लिए दिल्ली के साथ जुड़े

एजेंसी

नई दिल्ली। स्टार भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली ने 12 साल बाद रणजी ट्रॉफी में वापसी से पूर्व मंगलवार को यहां दिल्ली टीम के साथ ट्रेनिंग शुरू की। पिछले कुछ समय से खराब फॉर्म से जूझ रहे 36 वर्षीय कोहली 30 जनवरी से रेलवे के खिलाफ रणजी ट्रॉफी मैच खेलेंगे, जिससे इस प्रमुख घरेलू प्रतियोगिता में उनकी वापसी होगी। उन्होंने अपना पिछला रणजी मुकाबला 2012 में गाजियाबाद में उत्तर प्रदेश के खिलाफ खेला था। विराट कोहली आज सुबह ठीक नौ बजे अरुण जेटली स्टेडियम पहुंचे और टीम से मिलने तथा वार्म अप के बाद उन्होंने टीम के साथियों के साथ करीब 15 मिनट तक फुटबॉल खेला। यह स्टार खिलाड़ी अपने नए साथियों के साथ सहज दिखा। दिल्ली के लगभग सभी खिलाड़ी पहली बार कोहली के साथ ड्रेसिंग रूम साझा कर रहे हैं और उन्हें अपने बीच पाकर काफी उत्साहित दिखे। अभ्यास ड्रिल दिल्ली के मुख्य कोच सरनदीप सिंह के मार्गदर्शन में हुई। हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के निराशाजनक टेस्ट दौरे के बाद एकदिवसीय और टेस्ट टीम के कप्तान रोहित शर्मा सहित भारत के सभी स्टार खिलाड़ी अपनी रणजी टीमों के लिए खेल रहे हैं। ऐसा भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के इस आदेश के कारण हुआ है कि खिलाड़ियों को अपने अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम से समय मिलने पर घरेलू क्रिकेट को प्राथमिकता देनी चाहिए। रोहित (मुंबई) और ऋषभ पंत (दिल्ली) को अपनी-अपनी टीमों के लिए ज्यादा सफलता नहीं मिली। लेकिन, अनुभवी ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा ने सौराष्ट्र के लिए 12 विकेट चटकाए और शुभमन गिल ने पंजाब के लिए शतक बनाया। पंजाब को हालांकि शिकस्त का सामना करना पड़ा। पंत, रोहित, यशस्वी जायसवाल (मुंबई) आगामी रणजी मैच नहीं खेलेंगे क्योंकि वे छह फरवरी से नागपुर में इंग्लैंड के खिलाफ शुरू होने वाली एकदिवसीय श्रृंखला की तैयारी कर रहे हैं। हालांकि लोकेश राहुल कर्नाटक के लिए खेलेंगे।

रोहित-जायसवाल और अय्यर मुंबई टीम से बाहर, नहीं खेलेंगे अगला रणजी मैच

मुंबई। गत चैंपियन मुंबई को मेघालय के खिलाफ गुरुवार से शुरू हो रहे रणजी ट्रॉफी के आखिरी लीग मैच में रोहित शर्मा, यशस्वी जायसवाल और श्रेयस अय्यर की कमी खलेगी। इन तीनों ने एलीट ग्रुप ए के छठे दौर में जम्मू कश्मीर के खिलाफ खेला था, जिसमें मुंबई को पांच विकेट से पराजय का सामना करना पड़ा। उस मैच में ये तीनों नहीं चल सके जबकि शार्दुल ठाकुर ने 51 और 119 रन की पारियां खेली। मुंबई को क्वार्टर फाइनल में पहुंचने के लिए अब मेघालय को बड़े अंतर से हराने के अलावा बाकी मैचों में भी अनुकूल नतीजों की उम्मीद करनी होगी। रोहित, जायसवाल और अय्यर इंग्लैंड के खिलाफ छह, नौ और 12 फरवरी को होने वाले भारतीय वनडे टीम का हिस्सा हैं। इसके बाद चैम्पियंस ट्रॉफी होगी। मुंबई क्रिकेट संघ के एक सूत्र ने तीनों के अगला मैच नहीं खेलने की पुष्टि की। रोहित शर्मा, यशस्वी जायसवाल और श्रेयस अय्यर को इंग्लैंड के खिलाफ आगामी वनडे सीरीज और चैंपियंस ट्रॉफी के लिए चुना गया है।

न्यूजीलैंड की एमेलिया केरने रचा इतिहास

आईसीसी का सबसे बड़ा अवॉर्ड जीतने वाली अपने देश की पहली क्रिकेटर बनीं

एजेंसी

दुबई। न्यूजीलैंड की ऑलराउंडर एमेलिया केर ने मंगलवार को प्रतिष्ठित राशेल हेहोई फ्लिंट ट्रॉफी पाने वाली अपने देश की पहली क्रिकेटर बनकर इतिहास रच दिया है। एमेलिया केर 2024 में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की साल की सर्वश्रेष्ठ महिला क्रिकेटर चुना गया।

24 साल की एमेलिया ने लॉरा वोलवार्ट, चामरी अटापट्टू और अनाबेल सदरलैंड जैसी स्टार खिलाड़ियों को पीछे छोड़कर महिला क्रिकेट का शीर्ष सम्मान हासिल किया। अमेलिया ना केवल राशेल हेहोई फ्लिंट ट्रॉफी जीतने वाली न्यूजीलैंड की पहली खिलाड़ी हैं, बल्कि किसी भी श्रेणी में आईसीसी की साल की सर्वश्रेष्ठ महिला क्रिकेटर बनने वाली अपने देश की पहली खिलाड़ी भी हैं। पूरे साल के दौरान अमेलिया ने खेल के हर विभाग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विश्व स्तरीय ऑलराउंडर के रूप में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उनके बेहतरीन क्षेत्ररक्षण ने न्यूजीलैंड को कई मौकों पर मुश्किल से उबारा जबकि लेग स्पिनर के रूप में उनके कौशल ने उन्हें दुनिया की सबसे खतरनाक गेंदबाजों में से एक के रूप में स्थापित किया। अमेलिया ने कई मौकों पर गेंद से अपनी टीम के लिए मैच विजेता की भूमिका निभाई। बल्ले से वह न्यूजीलैंड के बल्लेबाजी क्रम का अहम हिस्सा रहीं। एमेलिया केर ने शीर्ष क्रम की अच्छी शुरुआत का फायदा भी उठाया और शीर्ष क्रम के लड़खड़ाने पर पारी को संभालने में भी सक्षम रहीं। पहली बार 2017 में शुरू की गई राशेल हेहोई फ्लिंट ट्रॉफी को अमेलिया से पहले सिर्फ तीन खिलाड़ियों को दिया गया है, जिसमें ऑस्ट्रेलिया की एलिस पैरी, भारत की स्मृति मंधाना और इंग्लैंड की नैट स्काइवर-ब्रंट शामिल हैं।

सूर्यकुमार यादव की कप्तानी टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में दमदार

लेकिन फॉर्म बनी टीम इंडिया के लिए चिंता का विषय

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत की टी20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव का कार्यकाल एक कप्तान के तौर पर अब तक दमदार रहा है, लेकिन एक बल्लेबाज के तौर पर अपनी कप्तानी में वे उतने सफल नहीं हुए। टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में सूर्यकुमार यादव की हालिया फॉर्म भी खराब रही है। तीन नंबर पर वे तिलक वर्मा को प्रमोट कर रहे हैं, जहां वे रन बना रहे हैं, लेकिन सूर्यकुमार यादव अपनी लय खोते जा रहे हैं। पिछले 5 मैचों में उन्होंने कुल 20 रन भी नहीं बनाए हैं, जो चिंता का विषय है। ऐसे में उनके आंकड़ों के बारे में जान लीजिए। कप्तानी करते हुए सूर्यकुमार यादव ने बतौर बल्लेबाज 19 मैचों की 18 पारियों में कुल 542 रन बनाए हैं। उनका औसत 30.11 का है, जो उनके करियर औसत से काफी कम है। उनका करियर औसत टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में 39.72 का है। सूर्यकुमार यादव ने एक शतक और 4 अर्धशतक बतौर कप्तान जड़े हैं, जबकि अन्य तीन शतक उन्होंने एक बल्लेबाज के तौर पर खेलते हुए जड़े हैं। वहीं, अगर सूर्यकुमार यादव की टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में पिछली 10 पारियों की बात करें तो वे सिर्फ एक ही अर्धशतक जड़ सके हैं। उनका स्ट्राइक रेट भी ऊपर-नीचे रहा है। कुछ पारियों में वे 200 के स्ट्राइक रेट से रन बनाने में सफल हुए हैं, जबकि कुछ पारियों में उनका औसत 100 से काफी नीचे रहा है, जिनमें ज्यादातर पारियां छोटी रही हैं। पिछले पांच मैचों में उनके बल्ले से सिर्फ 17 रन निकले हैं। एक पारी में बल्लेबाजी नहीं आई थी। हालांकि, कप्तान के तौर पर उनकी टीम जीत रही है। सूर्यकुमार यादव ने 19 मैचों में अब तक भारतीय टीम की कप्तानी टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में की है। वे 15 मैचों में टीम को जीत दिला चुके हैं।

बंगलादेश की महिला टीम ने वेस्टइंडीज को 10 विकेट से हराया

क्वालालंपुर। निशिता ए निशी (तीन विकेट) की शानदार गेंदबाजी के बाद फहमिदा छोया (नाबाद 14) और जुयैरिया फिरदौस (नाबाद 25) पारियों के दम पर बंगलादेश ने सुपर सिक्स ग्रुप ए में मंगलवार को महिला अंडर-19 टी-20 विश्वकप मुकाबले में वेस्टइंडीज को 10 विकेट से हरा दिया है। वेस्टइंडीज के 54 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी बंगलादेश ने फहमिदा छोया (नाबाद 14) और जुयैरिया फिरदौस (नाबाद 25) की शानदार पारियों की मदद से 8.3 ओवर में बिना कोई विकेट गवांये 55 रन बनाकर मुकाबला 10 विकेट से जीत लिया। आज यहां बंगलादेश की टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज ने अमृता रामटहल (नाबाद 16), नईजनी कंबरबैच (13) और असाबी कॉलेंडर (11) के योगदान से 13 ओवर में छह विकेट पर 54 रन का स्कोर बनाया।

चैंपियंस ट्रॉफी 2025 से पहले मोहम्मद शमी को चाहिए गेम टाइम

पूर्व क्रिकेटर ने टीम मैनेजमेंट को दी सलाह

एजेंसी

नई दिल्ली। टीम इंडिया और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टी20 इंटरनेशनल सीरीज खेली जा रही है, लेकिन पहले दो मुकाबलों में मोहम्मद शमी प्लेइंग इलेवन का हिस्सा नहीं रहे। वे एक साल से ज्यादा समय तक इंटरनेशनल क्रिकेट से चोट के कारण दूर रहे हैं, लेकिन अब चैंपियंस ट्रॉफी से पहले उनकी वापसी हुई है तो भी वे बाहर हैं। इससे पूर्व तेज गेंदबाज जहीर खान नाखुश हैं और उन्होंने कहा है कि आईसीसी इवेंट से पहले चोट से उबरकर आए मोहम्मद शमी को कुछ गेम टाइम मिलना चाहिए। राजकोट में आज यानी मंगलवार 28 जनवरी को तीसरा मुकाबला खेला जाना है। इस मैच में शमी को मौका मिल सकता है। जहीर खान ने क्रिकबज पर मोहम्मद शमी को लेकर कहा, देखिए, मोहम्मदशमी पिछले कुछ समय से क्रिकेट नहीं खेल रहे हैं। आप जानते हैं कि वह चोट से उबर रहे हैं। और अगर आप देखें हैं कि भारतीय टीम चैंपियंस ट्रॉफी के लिए तैयारी कर रही है, तो आपको यह भी देखना चाहिए कि शमी के पास कुछ गेम टाइम होना चाहिए। आप जानते हैं? यह कुछ ऐसा है, जिसके बारे में उन्हें सोचना होगा। मोहम्मद शमी टी20 सीरीज का हिस्सा हैं, लेकिन पहले दो मैचों में उनको जगह नहीं मिली है। पूर्व तेज गेंदबाज ने आगे कहा, शायद परिस्थितियों के आधार पर कॉल किया गया हो, लेकिन ईडन गार्डन्स में गेंदबाजों को कुछ हेल्प मिली, लेकिन वहां आप मिस कर गए। शायद इस गेंदबाजी लाइनअप को बैलेंस देने के लिए, वहां एक मौका मिस हो गया। अगर अगला गेम आपको ऐसा करने की अनुमति देता है, तो निश्चित रूप से उनको खेलना चाहिए। मुझे लगता है कि शमी एक ऐसा व्यक्ति हैं, जो विकेट लेने वाले हैं। हर कोई जानता है कि नई गेंद से कौन नुकसान पहुंचा सकता है और गेम के लिए वह टोन सेट कर सकता है।

इमामी लिमिटेड का शुद्ध मुनाफा आठ प्रतिशत बढ़ा

एजेंसी

नयी दिल्ली। प्रमुख एफएमसीजी कंपनी इमामी लिमिटेड का चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में शुद्ध मुनाफा इसके पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के मुकाबले आठ प्रतिशत की बढ़ोतरी लेकर 279 करोड़ रुपये पर पहुंच गया।

कंपनी ने सोमवार को बयान जारी कर बताया कि वित्त वर्ष 2024-25 की अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में उसका शुद्ध मुनाफा आठ प्रतिशत बढ़कर 279 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। आलोच्य अवधि में उसका राजस्व पांच प्रतिशत की बढ़ोतरी लेकर 1049 करोड़ रुपये हो गया। कंपनी ने बताया कि निदेशक मंडल ने वित्त वर्ष 2024 के लिए 400 प्रतिशत के दूसरे अंतरिम लाभांश की घोषणा की है, जो चार रुपये प्रति शेयर के बराबर है। इससे पहले, दूसरी तिमाही में भी 400 प्रतिशत का पहला अंतरिम लाभांश (चार रुपये प्रति शेयर) घोषित किया गया था। इस घोषणा के साथ वित्त वर्ष 2024 में अब तक कुल लाभांश भुगतान 800 प्रतिशत तक पहुंच गया है, जो आठ रुपये प्रति शेयर के बराबर है। यह कंपनी की एक मजबूत और निरंतर लाभांश भुगतान नीति के प्रति प्रतिबद्धता और अपने शेयरधारकों को उच्च रिटर्न प्रदान करने की दिशा में उसकी प्राथमिकता को दर्शाता है।

इमामी लिमिटेड के उपाध्यक्ष और प्रबंध निदेशक हर्ष वी. अग्रवाल ने कहा, हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि वित्त वर्ष 2025 की तीसरी तिमाही के दौरान हमारे मुख्य घरेलू व्यवसाय में नौ प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि हुई, जो वॉल्यूम में छह प्रतिशत की स्वस्थ वृद्धि से प्रेरित है। यह लगातार दूसरी तिमाही है जब हमने उच्च एकल-अंकीय वृद्धि दर्ज की है। बढ़ती इनपुट लागत के बावजूद हमने सकल मार्जिन और ईबीआईडीटीए मार्जिन दोनों में विस्तार किया है। नए और पारंपरिक चैनलों के लिए हमारी लक्षित वितरण रणनीतियों ने इस सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा केश किंग और पुरुष ग्रूमिंग श्रेणियों में हमारी रणनीतिक पहलों और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के अपेक्षित पुनरुद्धार ने हमारे दीर्घकालिक मजबूत विकास को लेकर हमारा विश्वास और भी मजबूत किया है। ये परिणाम वित्त वर्ष 2025 के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाते हैं और हमारे हितधारकों को दीर्घकालिक मूल्य प्रदान करने की हमारी अटूट प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हैं।

गूगल अमेरिका में मानचित्र करेगा अपडेट

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिकी सर्च इंजन गूगल ने कहा है कि अमेरिका की भौगोलिक नाम सूचना प्रणाली (जीएनआईएस) को अपडेट किये जाने के बाद ही 'गल्फ ऑफ अमेरिका' और 'माउंट मैकिनली' जैसे स्थानों के नाम गूगल मानचित्र पर दिखाई दे सकेंगे।

गूगल ने 'एक्स' पर कहा, हमें गूगल मानचित्रण में नामकरण को लेकर कुछ सवाल मिले हैं। हम एक पुरानी प्रक्रिया का पालन करते हैं, जिसमें जब सरकारी स्रोतों में नामों को अपडेट किया जाता है, तो हम उन्हें लागू करते हैं। अमेरिका के लिए यह तब होता है, जब जीएनआईएस अपडेट होता है। जब ऐसा होगा, तो हम गूगल मानचित्रण को जल्दी अपडेट करेंगे ताकि %माउंट मैकिनली और गल्फ ऑफ अमेरिका दिख सकें।'' गूगल ने कहा कि जब विभिन्न देशों में आधिकारिक नाम अलग होते हैं, तो सेवा के उपयोगकर्ताओं को उनके स्थानीय आधिकारिक नाम दिखाए जाते हैं, और बाकी दुनिया में दोनों नाम दिखाई देते हैं। इससे पहले, नए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए, जिसमें मेक्सिको की खाड़ी का नाम बदलकर अमेरिका की खाड़ी रखने की प्रक्रिया शुरू करने का आदेश दिया गया था। दस्तावेज के अनुसार, अमेरिकी गृह मंत्री को 30 दिनों के भीतर इसे बदलने के लिए आवश्यक कदम उठाने होंगे। श्री ट्रम्प ने अपने शपथ ग्रहण से पहले इस इरादे की घोषणा की और कहा कि यह कदम उनकी प्रशासन की नई नीति का हिस्सा होगा।

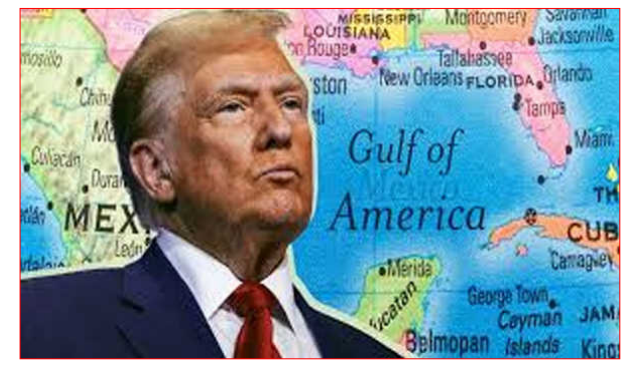

राष्ट्रीय खेलों में रिलायंस फाउंडेशन के 50 से अधिक एथलीट लेंगे भाग

एजेंसी

देहरादून। उत्तराखंड में मंगलवार से शुरु हो रहे राष्ट्रीय खेलों के 38वें संस्करण में देश भर से आये हजारों खिलाड़ी सहित रिलायंस फाउंडेशन से जुड़े 50 से अधिक एथलीट विभिन्न स्पर्धाओं में भाग लेंगे।

इन खेलों में रिलायंस फाउंडेशन से जुड़े खिलाड़ी एथलेटिक्स, मुक्केबाजी, बैडमिंटन, शूटिंग, जूडो, भारोत्तोलन, कुश्ती और टेबल टेनिस सहित आठ खेल प्रतियोगिताओं भाग लेंगे। इनमें फाउंडेशन से जुड़ी और टोक्यो ओलंपिक की पदक विजेता लवलीना बोरगोहेन पेरिस ओलंपिक के बाद पहली बार किसी प्रतिस्पर्धा में भाग ले रही हैं। उनके साथ उभरती हुई जूडो सनसनी हिमांशी टोकस भी पदक की दौड़ में होंगी। इसी तरह एथलेटिक्स स्पर्धा में रिलायंस फाउंडेशन से जुड़ी ज्योति याराजी (100 मीटर बाधा दौड़), तेजस शिरसे (110 मीटर बाधा दौड़), मणिकांता होबलीधर (100 मीटर), अमलान बोरगोहेन (200 मीटर) और रोजी मीना पॉलराज (पोल वॉल्ट) राष्ट्रीय रिकॉर्ड धारक इन खेलों में भाग लेंगे। इसके अलावा अनिमेष कुजूर (2024 में भारत के सबसे तेज धावक), डीएम जयराम, बापी हंसदा और साक्षी चव्हाण जैसे उभरते सितारों का प्रदर्शन भी देखने लायक होगा। प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी आज शाम राष्ट्रीय खेलों के 38वें संस्करण का उद्घाटन करेंगे। इस अवसर पर रिलायंस फाउंडेशन के एथलेटिक्स डायरेक्टर जेम्स हिलियर ने कहा, हम राष्ट्रीय खेलों को लेकर वाकई उत्साहित हैं। यह हमारे एथलीटों के लिए अपनी फिटनेस को जांचने और वे कितनी अच्छी तरह से प्रशिक्षण ले रहे हैं, इसका आकलन करने का एक मौका है हमें उम्मीद है कि हमारे एथलीट, काफी पदक जीतेंगे। यह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण वर्ष है क्योंकि हमारे अधिकांश एथलीट 2025 में एशियाई चैंपियनशिप की तैयारी कर रहे हैं। बैडमिंटन में, अनुपमा उपाध्याय, उन्नति हुड्डा और श्रीयांशी वलीशेट्टी की तिकड़ी महिला एकल खिताब के लिए दावेदारी पेश करेगी। टेबल टेनिस के दिग्गज जी साथियान पुरुष एकल स्पर्धा में प्रतिस्पर्धा करेंगे।

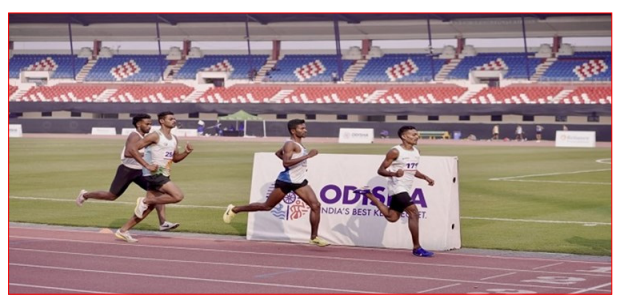

आरएमबीएस कंपनी को आरबीआई से मिला पंजीकरण प्रमाणपत्र

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय आवास बैंक (एनएचबी) ने देश में आवासीय गिरवी-समर्थित प्रतिभूतिकरण (आरएमबीएस) डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड को भारतीय रिजर्व बैंक से पंजीकरण प्रमाणपत्र मिल गया है। एनएचबी ने सबसे बड़े शेयरधारक के रूप में इसे स्थापित किया है और इसे बैंकों, एचएफसी/ एनबीएफसी और बीमा कंपनी में निवेशक वर्गों के एक मजबूत संयुग्म की ओर से सहयोग किया गया है। आरडीसीएल को अब 23 जनवरी, 2025 को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) से कार्यान्वयन शुरू करने के लिए पंजीकरण प्रमाणपत्र (सीओआर) मिल गया है। कंपनी की कल्पना देश में आवासीय गिरवी-समर्थित प्रतिभूतिकरण (आरएमबीएस) बाजार की प्रगति और विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए व्यावसायिक रूप से संपोषित बाजार मध्यस्थ की भूमिका निभाने की है। कंपनी के परिचालन से आरएमबीएस बाजार में दीर्घकालिक संस्थागत निवेशकों जैसे बीमा कंपनियों, पेंशन और भविष्य निधि को निवेश के अवसर मिलेंगे।

आम बजट में पूंजीगत व्यय पर हो जोर: फिक्की सर्वे

एजेंसी

नयी दिल्ली। सरकार के आम बजट की तैयारियों के बीच फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) द्वारा कराये गये एक सर्वेक्षण में भाग लेने वालों में से अधिकांश ने अगले वित्त वर्ष में विकास दर 6.5 से 6.9 प्रतिशत तक रहने का अनुमान जताते हुये सरकार से पूंजीगत में व्यय को जारी रखने की अपील की है।

फिक्की ने केंद्रीय बजट 2025-26 से पहले उद्योग जगत के सदस्यों की भावना को जानने के लिए एक त्वरित सर्वेक्षण किया है जिसके अनुसार लगभग 64 प्रतिशत प्रतिभागियों ने केंद्रीय बजट से पहले भारत की विकास संभावनाओं के बारे में आशावादी रुख व्यक्त किया। लगभग 60 प्रतिशत प्रतिभागियों ने 2025-26 के लिए जीडीपी वृद्धि दर 6.5 से 6.9 प्रतिशत के बीच रहने का अनुमान लगाया। हालांकि ये संख्याएं 2023-24 में देखी गई 8.0 प्रतिशत से अधिक की उच्च वृद्धि से कुछ कम हैं - लेकिन यह बाहरी कारकों के कारण लगातार आने वाली बाधाओं के साथ तालमेल बिठाती हैं। इसमें कहा गया है कि राजकोषीय समेकन के लिए सरकार की प्रतिबद्धता ने देश को अच्छी स्थिति में पहुंचा दिया है और सर्वेक्षण प्रतिभागियों को उम्मीद है कि सरकार उस रास्ते पर बनी रहेगी। लगभग 47 प्रतिशत प्रतिभागियों को उम्मीद थी कि सरकार वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 4.9 प्रतिशत के राजकोषीय घाटे के लक्ष्य को पूरा करेगी और अन्य 24 प्रतिशत ने बताया कि सरकार सुधार कर सकती है और चालू वर्ष के लिए राजकोषीय घाटे के अनुमान में और कमी आ सकती है। फिक्की के प्री-बजट 2025-26 सर्वेक्षण का वर्तमान दौर दिसंबर 2024 के अंत और जनवरी 2025 के मध्य किया गया था। सर्वेक्षण में विभिन्न क्षेत्रों में फैली 150 से अधिक कंपनियों से प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं, जो आर्थिक विकास में नरमी के बीच भारत इंक की भावनाओं के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान करती हैं। सर्वेक्षण का एक महत्वपूर्ण फोकस मैक्रोइकॉनॉमिक नीति हस्तक्षेपों पर था। अधिकांश उत्तरदाताओं ने सार्वजनिक पूंजीगत व्यय को बनाए रखने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, जिसमें 68 प्रतिशत ने विकास की गति को बनाए रखने के लिए पूंजीगत व्यय पर जोर देने का आह्वान किया। भारतीय उद्योग के सदस्यों द्वारा वित्त वर्ष 2025-26 के लिए पूंजीगत व्यय आवंटन में कम से कम 15 प्रतिशत की वृद्धि की उम्मीद की जा रही है। इसके अतिरिक्त, आधे से अधिक उत्तरदाताओं ने व्यापार करने में आसानी को और बढ़ाने के लिए सुधारों के महत्व पर जोर दिया। उत्पादन के कारकों से संबंधित सुधार - विशेष रूप से भूमि अधिग्रहण, श्रम विनियमन और बिजली आपूर्ति जैसे क्षेत्रों के संबंध में - महत्वपूर्ण बने हुए हैं। पिछले साल के केंद्रीय बजट ने अगली पीढ़ी के सुधारों पर एक रोडमैप का संकेत दिया था। उद्योग के सदस्य उसी पर आगे के मार्गदर्शन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसके अलावा, मांग की सुस्त स्थिति के बारे में चिंता व्यक्त की गई।

प्रधान सम्पादक, स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, राजकुमार यादव द्वारा राज आफसेट एबीसी काम्पलेक्स अपोजिट शुभम सिनेमा क्वीनटन रोड कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित कराकर 424-बी वैशाली इंक्लेब सेक्टर 9 इंदिरानगर लखनऊ से प्रकाशित।
समस्त विवाद वाराणसी न्यायलय के अधीन होंगे। फोन नं. 9935781155 E-mail :- info.shakuntimes@gmail.com RNI: UPHIN/2012/45286 प्रधान कार्यालय:- शक्तिपीठ, बरईपुर, सारनाथ, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) पिन कोड - 221007

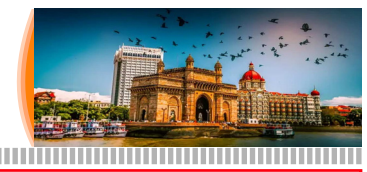

ट्रंप ने भारत से अधिक अमेरिका निर्मित हथियार खरीदने को कहा

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत की ओर से अमेरिका निर्मित सुरक्षा उपकरणों की खरीद बढ़ाने और निष्पक्ष द्विपक्षीय व्यापारिक संबंधों की दिशा में आगे बढ़ने के महत्व पर जोर दिया है।

श्री ट्रंप ने सोमवार रात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ फोन पर बातचीत के दौरान यह बात कही। अमेरिकी राष्ट्रपति कार्यालय 'व्हाइट हाउस' की ओर से जारी बयान के अनुसार, दोनों नेताओं ने श्री मोदी की व्हाइट हाउस यात्रा की योजना पर भी चर्चा की। बयान में कहा गया, आज, राष्ट्रपति डोनाल्ड जे. ट्रम्प ने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ सार्थक बातचीत की। दोनों नेताओं ने सहयोग बढ़ाने और गहरा करने पर चर्चा की। उन्होंने हिंद-प्रशांत, पश्चिम एशिया और यूरोप में सुरक्षा सहित कई क्षेत्रीय मुद्दों पर भी चर्चा की। राष्ट्रपति ने भारत द्वारा अमेरिकी निर्मित सुरक्षा उपकरणों की खरीद बढ़ाने और निष्पक्ष द्विपक्षीय व्यापारिक संबंधों की ओर बढ़ने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा, नेताओं ने हमारे देशों के बीच दोस्ती और रणनीतिक संबंधों की ताकत को रेखांकित करते हुए, प्रधानमंत्री मोदी की व्हाइट हाउस यात्रा की योजना पर चर्चा की। दोनों नेताओं ने अमेरिका-भारत रणनीतिक साझेदारी और हिंद-प्रशांत क्वाड साझेदारी को आगे बढ़ाने की अपनी प्रतिबद्धता पर जोर दिया, इस साल के अंत में भारत पहली बार क्वाड नेताओं की मेजबानी करेगा। श्री मोदी ने सोमवार रात को 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, मेरे प्रिय मित्र राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ बात करके खुशी हुई। उन्हें उनके ऐतिहासिक दूसरे कार्यकाल के लिए बधाई दी। हम पारस्परिक रूप से लाभप्रद और विश्वसनीय साझेदारी के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम अपने लोगों के कल्याण और वैश्विक शांति, समृद्धि और सुरक्षा के लिए मिलकर काम करेंगे। भारत की ओर से जारी बयान में कहा गया, प्रधानमंत्री मोदी ने आज अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड जे. ट्रम्प से बात की और उन्हें अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में उनके ऐतिहासिक दूसरे कार्यकाल के लिए बधाई दी। दोनों नेताओं ने पारस्परिक रूप से लाभप्रद और विश्वसनीय साझेदारी के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की। उन्होंने प्रौद्योगिकी, व्यापार, निवेश, ऊर्जा और रक्षा के क्षेत्रों सहित व्यापक द्विपक्षीय व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी के विभिन्न पहलुओं और इसे आगे बढ़ाने के उपायों पर चर्चा की।

कश्मीर के युवा, अमन व शांति के लिए कार्य करें : डेका

एजेंसी

रायपुर। जम्मू-कश्मीर में उद्योग एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अपार संभावनाएं है। युवा विभिन्न क्षेत्रों में स्टार्टअप के लिए आगे आएं लेकिन यह तभी सफल होगा जब वहां शांति होगी। कश्मीर के युवा, अमन एवं शांति के लिए कार्य करें और वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सपने को साकार करने के लिए अपना योगदान दें। छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका ने नेहरू युवा केन्द्र संगठन के 'युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम' के तहत छत्तीसगढ़ भ्रमण पर आए कश्मीर के युवाओं से रूबरू होकर उक्त बातें कहीं। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय अंतर्गत नेहरू युवा केन्द्र संगठन एवं केंद्रीय गृह मंत्रालय के 'युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम' के तहत कश्मीर के छह जिलों श्रीनगर, कुपवाड़ा, बारामुला, अनंतनाग, पुलवामा और बड़गांव के स्कूलों तथा महाविद्यालयों में अध्ययनरत 132 युवा, छह दिनों के छत्तीसगढ़ भ्रमण पर गत 26 जनवरी को राजधानी रायपुर पहुंचे है। इस दौरान वे छत्तीसगढ़ विधानसभा सहित धमतरी जिले में गंगरेल बांध, एडवेंचर पार्क, यूथ क्लब आदि स्थानों में भ्रमण करेंगे। इसी कड़ी में वे राजभवन आए और राज्यपाल डेका से मुलाकात की। श्री डेका ने इन युवाओं को देश-प्रदेश, समाज एवं परिवार के प्रति जिम्मेदारी निर्वहन करते हुए कैरियर निर्माण तथा देश के बेहतर नागरिक बनने के लिए जरूरी मार्गदर्शन दिया। श्री डेका ने कहा कि छत्तीसगढ़ और कश्मीर दोनों प्राकृतिक रूप से सुंदर राज्य हैं। युवाओं को एक-दूसरे के राज्य के बारे में जानना चाहिए। जिससे वे अपने गौरवशाली राष्ट्र के बारे में ज्यादा जान पाएंगे। उन्होंने युवाओं को कैरियर एवं जीवन में आगे बढने के लिए जरूरी बातें बताई और कहा कि वर्तमान में जो हम करेंगे वह हमारा भविष्य बनाएगा।

संक्षिप्त सामाचार

अम्बेडकर की प्रतिमा की तोड़फोड़ करने के विरोध में भाजपा ने किया धरना प्रदर्शन

होशियारपुर। गणतंत्र दिवस पर अमृतसर की हेरिटेज स्ट्रीट में डॉ. भीम राव अम्बेडकर की प्रतिमा की तोड़फोड़ करने के कथित प्रयास में शामिल लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग करते हुए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ब्लॉक मुकेरियां के कार्यकर्ताओं ने मंगलवार को धरना प्रदर्शन किया। भाजपा ग्रामीण होशियारपुर के अध्यक्ष अजय कौशल सेठू के नेतृत्व में मुकेरियां के अम्बेडकर पार्क में करीब एक घंटे तक धरना दिया। प्रदर्शन के दौरान भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने पार्क में डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और पंजाब सरकार के खिलाफ नारे लगाए। मीडिया को संबोधित करते हुए, श्री जंगी लाल महाजन ने घटना की निंदा की और पंजाब सरकार से इस कृत्य के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों या राष्ट्र विरोधी ताकतों की पहचान करने और उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का आह्वान किया। उन्होंने ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो, यह सुनिश्चित करने के लिए त्वरित न्यायिक कार्रवाई करने पर जोर दिया।

स्कूल के शिक्षक की गोली मारकर हत्या

दरभंगा। बिहार में दरभंगा जिले के कुशेश्वरस्थान थाना क्षेत्र में अपराधियों ने मंगलवार की सुबह स्कूल के शिक्षक की गोली मारकर हत्या कर दी। बिरौल अनुमंडल के अनुमंडल पुलिस अधिकारी मनीष कुमार ने बताया कि उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय, अदलपुर के सहायक शिक्षक एवं कुशेश्वरस्थान नगर पंचायत के बहेड़ा गांव निवासी रामाश्रय यादव अपने घर से विद्यालय जा रहे थे। इसी दौरान विद्यालय से कुछ दूर पहले दो बाइक पर सवार अपराधियों ने उन्हें गोली मारकर घायल कर दिया।घायल शिक्षक को इलाज के लिए कुशेश्वरस्थान पीएचसी ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। श्री कुमार ने बताया कि शिक्षक की हत्या से आक्रोशित लोगों ने राजकीय उच्च पथ संख्या 56 पर आसमा घाट के समीप सड़क जाम कर दिया है। शव को पोस्टमार्टम के लिये ले जाने से पुलिस को रोक दिया गया है। हत्या के कारणों का अभी स्पष्ट रूप से पता नहीं चला है।आसपास के इलाकों के सीसीटीवी के फुटेज को खंगाला जा रहा है।

जम्मू-कश्मीर में नशीले पदार्थों की तस्करी का भंडाफोड़

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने दिल्ली और उत्तर प्रदेश से नशीले पदार्थों की तस्करी का भंडाफोड कर उसके दो सरगनाओं को गिरफ्तार किया है। पुलिस सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि नारकोटिक ड्रग्स और साइकोट्रोपिक पदार्थ (एनडीपीएस) अधिनियम के तहत दर्ज मामले की जांच के परिप्रेक्ष्य में प्रमुख अंतरराज्यीय मादक पदार्थ तस्करी नेटवर्क को भंडाफोड़ कर दिया है।

बैंक लेनदेन और संचार रिकॉर्ड सहित जांच के सबूतों के आधार पर उत्तर प्रदेश बरेली के राजू गुप्ता और दिल्ली, भजनपुरा के मोहम्मद अबरार दो प्रमुख दवा आपूर्तिकर्ताओं की पहचान कश्मीर घाटी में स्थानीय दवा तस्करों को नशीले पदार्थ पहुंचाने के प्रमुख स्रोतों के रूप में की गई। श्रीनगर पुलिस की एक टीम ने स्थानीय पुलिस की सहायता से 10 दिनों तक उत्तर प्रदेश और दिल्ली में व्यापक अभियान चलाया। इसी दौरान राजू गुप्ता को 23 जनवरी को बरेली में पकड़ा गया और मोहम्मद अबरार को 24 जनवरी को भजनपुरा में गिरफ्तार किया गया।

डकैती करने के आरोप में पिता पुत्र गिरफ्तार, हथियार बरामद

एजेंसी

जालंधर। पंजाब में जालंधर ग्रामीण पुलिस ने कई हथियारबंद डकैतियों में शामिल पिता पुत्र को गिरफ्तार कर उनके पास से तीन अत्याधुनिक हथियार और कई लाख की चोरी की संपत्ति बरामद की गई है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) हरकमल प्रीत सिंह खख ने मंगलवार बताया कि गिरफ्तार आरोपियों की पहचान राज कुमार पुत्र सुच्चा राम और उसके बेटे राजवीर उर्फ ??रोहित के रूप में हुई है। दोनों निवासी सैदपुर झिरी, थाना शाहकोट, जिला जालंधर हैं। पुलिस टीमों ने उनके कब्जे से 30 बोर और 32 बोर की तीन पिस्तौलें, 25 जिंदा कारतूस, नौ मोबाइल फोन, एक स्मार्ट घड़ी और छह तोले वजन के सोने के आभूषण बरामद किए हैं। श्री खख ने बताया कि सूचना के आधार पर सब-इंस्पेक्टर अमनदीप वर्मा के नेतृत्व में जालंधर ग्रामीण के सीआईए स्टाफ की टीम ने एसपी इन्वेस्टिगेशन श्रीमती जसरूप कौर आईपीएस और डीएसपी इन्वेस्टिगेशन श्री सरवनजीत सिंह की देखरेख में थाना मेहतपुर के अधिकार क्षेत्र में गांव उधोवाल के पास विशेष नाका लगाया और आरोपियों को सफलतापूर्वक गिरफ्तार कर लिया। उनकी तलाशी लेने पर एक 32 बोर की पिस्तौल, 2 जिंदा कारतूस और 2 मोबाइल फोन बरामद हुए। उन्होने बताया कि आगे की पूछताछ के बाद पुलिस ने प्रतापुरा में एक अन्य स्थान पर छापा मारा और दो और पिस्तौल, 23 जिंदा कारतूस, सात मोबाइल फोन, एक स्मार्टवॉच और छह तोले सोने के गहने बरामद किए। एसएसपी खख ने बताया कि प्रारंभिक जांच में पता चला है कि आरोपी राजवीर उर्फ रोहित, जो नशे का आदी है।

बोईसर में उत्तर भारत सेवा समिति द्वारा बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया गणतंत्र दिवस

शकुन टाइम्स संवाददाता

पालघर। बोईसर में उत्तर भारत सेवा समिति की ओर से पालघर जिले के बोईसर शहर अंतर्गत अमेया पार्क में स्थित समिति कार्यालय में 26 जनवरी 2025 को सुबह 10.30 बजे राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर बड़े धूमधाम के साथ 76वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि के तौर पधारे सरावली ग्राम पंचायत के पूर्व सरपंच व उत्तर भारत सेवा समिति के अध्यक्ष गणेश ठाकुर के हाथों झंडा फहरा कर की गई।

इस मौके पर उपस्थित सभी लोगों ने झंडे को सलामी देते हुए राष्ट्रगान गाया। वहीं समिति द्वारा उपस्थित सभी मान्यवरों को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया गया तथा मिष्ठान वितरण कर सभी जनों का मुंह मीठा कराते हुए एक दूसरे को गणतंत्र दिवस की बधाई दी। इस अवसर पर उत्तर भारत सेवा समिति अध्यक्ष गणेश महादेव सिंह ठाकुर, कार्याध्यक्ष संजय सिंह, उपाध्यक्ष सत्येंद्र सिंह, उपाध्यक्ष शिवशंकर यादव, उपाध्यक्ष सुरेश दुबे, महासचिव सुभाष पाण्डेय, संगठन मंत्री प्रदीप सिंह, मंत्री विजय शंकर तिवारी, सहकोषाध्यक्ष रामनरेश यादव, सदस्य कपिलदेव मिश्र, विशेष अतिथियों में केसीएन क्लब संरक्षक एडवोकेट शोभनाथ त्रिपाठी, लोक कल्याण संस्था अध्यक्ष पूर्व ग्राम पंचायत सदस्य स्वामीनाथ पाण्डेय, बोईसर-पालघर पत्रकार संघ अध्यक्ष रामप्रकाश निराला, भाजपा नेता आर बी सिंह, उद्योजक यशपाल सिंह, मनोज राय, रविशंकर राय, विजेन्द्र मणि पाण्डेय, दिग्विजय मिश्र, शिवशंकर मिश्र, सुजीत यादव, जयंती महतो, संगीता जायसवाल, बैजनाथ महतो, अरविंद दुबे, पूर्व ग्राम पंचायत सदस्य राजेंद्र यादव, पत्रकार अजीत सिंह, मृत्युंजय पाण्डेय व संगीता शाह समेत अनेक लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सूत्र संचालन केसीएन क्लब अध्यक्ष नँदन मिश्र त्यागी ने किया तथा समिति के उपाध्यक्ष सुरेश दुबे ने सभी उपस्थित जनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

डॉ कृष्णा चौहान द्वारा आयोजित राष्ट्रीय रत्न सम्मान 2025 में कई हस्तियां शामिल

शकुन टाइम्स संवाददाता

मुम्बई। बॉलीवुड के विख्यात निर्माता निर्देशक, समाजसेवी और केसीएफ फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ कृष्णा चौहान द्वारा गणतंत्र दिवस के अवसर पर 27 जनवरी 2025 को मेयर हॉल, अंधेरी पश्चिम मुम्बई में चौथे %राष्ट्रीय रत्न सम्मान 2025% का भव्य आयोजन किया गया। इस चौथे सीज़न का यह पुरस्कार समारोह काफी सफलतापूर्वक संपन्न हुआ जिसमें बॉलीवुड सहित कई क्षेत्रों की हस्तियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। राष्ट्रगान से प्रोग्राम की शुरुआत हुई फिर सभी अतिथियों ने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का आरंभ किया। अवार्ड हासिल करने वालो में सिद्धिविनायक मंदिर के ट्रस्टी राजाराम देशमुख, निर्माता निर्देशक धीरज कुमार, सुनील पाल, एसीपी संजय पाटिल, दिलीप सेन, रमेश गोयल, सोनू श्रीवास्तव (टी सीरीज), बी एन तिवारी, वकील रिजवान मर्चेंट, डॉ दिलीप यादव, डॉ हरजीत, डॉ. मुस्तफा यूसुफअली गोम, अब्दुल कादिर खेरोदावाला (डायरेक्टर स्टीलफैब स्काफोल्डिंग ऐंड इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड), दीपक देसाई दीपक, अभिषेक खन्ना, शहनाज अहमद अली खान, एडवोकेट कुलदीप शर्मा, जिगना सेठ, प्रवीण भालेराव इत्यादि का नाम उल्लेखनीय है।डॉ कृष्णा चौहान ने ब्राइट आउट डोर मीडिया के योगेश लाखानी को भी सम्मानित किया, उनकी कंपनी के प्रतिनिधि ने ट्रॉफी ली। इस अवसर पर निर्माता निर्देशक अभिनेता धीरज कुमार, संगीतकार दिलीप सेन, सुनील पाल, एसीपी संजय पाटिल, बी एन तिवारी, डॉ. मुस्तफा यूसुफअली गोम, अभिषेक खन्ना, आर राजपाल, कबीना महारजन, आशी राजपूत, मेघा हेमदेव, सोनू श्रीवास्तव सहित फ़िल्म, टीवी जगत के कई गेस्ट्स मौजूद रहे। डॉ कृष्णा चौहान केसीएफ फाउंडेशन के अंतर्गत साल भर में दर्जन भर अवार्ड शो करते रहते हैं। सितारों और म्युज़िक से भरी यह एक यादगार शाम साबित हुई। डॉ कृष्णा चौहान द्वारा आयोजित राष्ट्रीय रत्न सम्मान 2025 से कई क्षेत्रो के लोगों को सम्मानित किया गया। निर्माता निर्देशक धीरज कुमार ने आयोजक डॉ कृष्णा चौहान को इस प्रोग्राम के लिए ढेर सारी बधाई दी और कहा कि वह हर साल इस पुरुस्कार समारोह का भव्य आयोजन करते हैं। डॉ कृष्णा चौहान की मेहनत और उनकी शिद्दत नजर आती है। निर्माता निर्देशक और केसीएफ फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ कृष्णा चौहान ने कहा कि राष्ट्रीय रत्न सम्मान 2025 में शामिल सभी अतिथियों का मैं दिल से आभार व्यक्त करता हूँ। भविष्य में भी लोग अपना सहयोग व आशीर्वाद बनाये रखेंगे, ऐसी उम्मीद है। संजय अमान ने एंकरिंग की उन्हें अवार्ड भी दिया गया। गुजरात से आए मेहमानों ने कृष्णा चौहान को शॉल और मोमेंटो देकर सम्मानित किया। भारती छाबड़िया, डॉ. उमा आर्या,डॉ स्वर्णा मीना, मनशुखभाई सुवागिया, सोनल पांडे, डॉ. तिलु राणा, पी के गुप्ता, दीपक देसाई, शारदे कमलनाथन, अंजली सिंह, ज़ायद ख़ान - इशाक ख़ान, पिंकी खिमनानी, एस्ट्रोलॉजर अनिल जोशी, माया जोशी, सागर आचार्य, डॉ दिलीप यादव, मोनिका, लाइफ बियोंड कैंसर संस्था की तीन महिलाओं को भी राष्ट्रीय रत्न सम्मान से नवाजा गया।

आजाद नगर में श्री बड़ी दुर्गा महारानी जी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा मनाया गया गणतंत्र दिवस

शकुन टाइम्स संवाददाता

पालघर। जिले के बोईसर आजाद नगर में श्री बड़ी दुर्गा महारानी जी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पालघर जिले के बोईसर शहर अंतर्गत धर्मनगरी आजाद नगर में स्थित श्री बड़ी दुर्गा महारानी जी मंदिर के प्रांगण में 26 जनवरी 2025 को सुबह 9.30 बजे राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर बड़े धूमधाम के साथ 76वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत आचार्य पंडित श्री राघवेंद्र महाराज जी के द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ भारत माता के छायाचित्र के समक्ष पुष्प अर्पण व पूजन करके की गई। तत्पश्चात मुख्य अतिथि के तौर पधारे भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष प्रशांत संखे के हाथों झंडा फहराया गया। इस मौके पर उपस्थित सभी लोगों ने झंडे को सलामी देते हुए राष्ट्रगान गाया। वहीं ट्रस्ट की ओर से मिष्ठान वितरण कर सभी जनों का मुंह कराते हुए एक दूसरे को गणतंत्र दिवस की बधाई दी। इस अवसर पर श्री बड़ी दुर्गा महारानी जी चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष जितेंद्र दुबे, मनोहर सिंह, सुरेश चौरसिया, राजू श्रीवास्तव, मुकेश यादव, अशोक सिंह, संजय जायसवाल, तीर्थराज पांडेय, शैलेन्द्र सिंह, रंजन नामदेव, सभाजीत यादव, दीपू यादव, रूपेश ठाकुर, धर्मेंद्र मौर्य, चैरिटेबल ट्रस्ट की रेनू दुबे, उत्तर शक्ति वरिष्ठ पत्रकार अजीत सिंह, शकुन टाईम्स पालघर संवादाता मृत्युंजय पान्डेय , समेत बड़ी संख्या में पुरुष, महिलाएं एवं बच्चे उपस्थित रहे। ट्रस्ट कू अध्यक्ष जितेंद्र दुबे ने सभी आये अतिथिगण को आभार व्यक्त करते हुए समाप्त किये।

ताहिर हुसैन हर दिन 2 लाख देगा

घर नहीं जा सकता, प्रचार पर भी सुप्रीम कोर्ट की एक शर्त

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली दंगों के आरोपी ताहिर हुसैन को 5 साल बाद शर्तों के साथ ही सही पर जेल से बाहर आने की इजाजत मिल गई है। एआईएमआईएम के टिकट पर मुस्तफाबाद सीट से विधानसभा का चुनाव लड़ रहे ताहिर हुसैन को सुप्रीम कोर्ट ने 6 दिनों के लिए कस्टडी पेरोल दी है। 29 जनवरी से 3 फरवरी तक ताहिर हुसैन हर दिन 12 घंटे के लिए जेल से बाहर निकलेगा। कोर्ट ने ताहिर की अस्थायी आजादी पर कई तरह की पाबंदियां लगाई हैं। उसे हर दिन 12 घंटे की पेरोल के लिए 2 लाख रुपए का खर्च वहन करना होगा तो घर जाने की इजाजत भी नहीं दी गई है। सर्वोच्च अदालत ने उसके प्रचार पर भी एक शर्त लगाई है।

ताहिर हुसैन ने अंतरिम जमानत के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। दो जजों की बेंच से एक बार खंडित आदेश के बाद मामले को तीन जजों की पीठ के सामने लाया गया था। जस्टिस विक्रम नाथ, जस्टिस संजय करोल और संदीप मेहता की बेंच ने यह आदेश पारित किया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि दिल्ली हाई कोर्ट के सामने ताहिर की जो जमानत याचिका लंबित है उस पर अदालत को बिना प्रभावित हुए अपने मैरिट पर फैसला करना है।

ताहिर की ओर से पेश हुए वरिष्ठ वकील सिद्धार्थ अग्रवाल ने इस बात पर सहमति दी कि उनका मुवक्किल पुलिस सुरक्षा समेत सभी खर्च का वहन करेगा। उसे दो दिन का अडवांस जमा कराना होगा, जोकि प्रति दिन करीब 2 लाख रुपए है। ताहिर हुसैन मुस्तफाबाद स्थित अपने आवास पर भी नहीं जाएगा। जरूरत पड़ने पर होटल में रहेगा। कस्टडी पैरोल के दौरान सूरज ढलने से पहले उसे जेल में वापस लौटना है।

सुबह से शाम तक वह पुलिस की घेराबंदी में रहते हुए प्रचार कर सकेगा। वह अपने पार्टी दफ्तर में जा सकेगा और बैठकें भी कर सकता है। हालांकि, कोर्ट ने एक शर्त यह भी लगाई है कि प्रचार के दौरान वह अपने खिलाफ लंबित केस के बारे में कोई बात नहीं करेगा।

मछुआरों पर गोलीबारी की, दो घायल, 13 को किया गिरफ्तार

चेन्नई। तमिलनाडु के दो मछुआरे मंगलवार सुबह गहरे समुद्र में मछली पकड़ते समय श्रीलंकाई नौसेना की गोलीबारी में घायल हो गए और 13 मछुआरों को गिरफ्तार कर लिया गया। यहां प्राप्त रिपोर्टों में कहा गया है कि 13 मछुआरों को श्रीलंकाई नौसेना ने कथित रूप से अंतरराष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा (आईएमबीएल) पार कर उनके क्षेत्रीय जल में मछली पकड़ने के आरोप में गिरफ्तार किया। ये मछुआरे कराईकल के रहने वाले हैं और नेडुंतीवु के पास मछली पकड़ने के दौरान श्री लंकाई नौसेना ने पकड़ लिया और उनकी नावें भी जब्त कर ली। श्रीलंकाई नौसेना ने उन पर गोलीबारी की, जिसमें दो मछुआरे घायल हो गए। नौसेना का आरोप है कि मछुआरे गिरफ्तारी से बचने की कोशिश कर रहे थे। बाद में उन्हें श्रीलंका के कांकेसंथुराई फिशिंग हार्बर ले जाया गया। यह घटना दो दिनों में मछुआरों की गिरफ्तारी की दूसरी घटना है। इससे पहले, श्रीलंकाई नौसेना ने 34 मछुआरों को गिरफ्तार कर उनकी नावें जब्त कर ली थीं, जिनमें से 32 तमिलनाडु के रामेश्वरम के निवासी हैं। मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने मछुआरों की गिरफ्तारी पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए।